संस्कृत

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 6 से 8

संस्कृत व्याकरण-6

अध्याय-1 वर्ण विचार

1. 1. (ब) दन्तोष्ठ 2. (अ) तालु 3. (द) ओष्ठ 4. (स) दन्त 5. (ब) मूर्धा
6. (अ) मूर्धा 7. (द) तालु 8. (स) कण्ठ 9. (ब) कण्ठ 10. (अ) तालु।

2. (i) क् ख् ग् घ् ङ्। (ii) प् फ् ब् भ् म्। (iii) ट् ठ् ड् ढ् ण् (iv) च् छ् ज् झ् ञ्। (v) त् थ् द् ध् न्
(vi) य् र् ल् व् (vii) श् ष् स् ह् (viii) आ, ई, ऊ ए, ऐ, ओ, औ, ॠ
(ix) क्ष् (क् + ष्), त्र (त् + र्), द्ध (द् + ध्), स्र (स् + र्), द्य (द् + य्) (x) अ, इ, उ, ऋ ऌ

3. 1. व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ + : 2. प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ
3. च् + अ + क् + र् + अ + म् 4. र् + आ + स् + अ + भ् + अ +:
5. ग् + अ + र् + द् + अ + भ् + अ + : 6. ह् + ए + म् + अ + न् + त् + अ + :
7. भ् + अ + व् + अ + न् + अ + म् 8. च् + अ + र् + अ + ण् + औ
9. न् + आ + स + इ + क् + आ 10. ल् + अ + क् +ष् + म् + ई

4. 1. माम् 2. बाल: 3. लता 4. अस्ति 5. कमल
6. पिता 7. किम् 8. करोति 9. भवति 10. कपोत:

5. 1. प् फ् ब् भ् म् 2. ट् ठ् ड् ढ् ण् 3. त् थ् द् ध् न् 4. क् ख् ग् घ् ङ् 5. च् छ् ज् झ् ञ्

6. 2. ॠ 3. ॡ 4. उ 8 इ

7. 1. द् + व् 2. ज् + ञ् 3. क् + स् 4. द् + ध् 5. द् + य्
6. ध् + य् 7. त् + र् 8. ड् + र् 9. म् + र् 10. स् + र्
11. द् + र् 12. प् + र् 13. क् + र् 14. ग् + र् 15. ट् + र्
16. श् + र् 17. भ् + र् 18. ज् + य् 19. घ् + र् 20. ख् + र्

8. 1. ई 2. इ 3. अ 4. अ 5. उ
6. ऊ 7. ई 8. ई 9. अ 10. इ
11. ई 12. ऋ 13. अ 14. उ 15. ई
16. ऐ 17. ए 18. औ 19. आ 20. ओ

9. 1. क 2. ख 3. गु 4. घी 5. चि
6. छो 7. जृ 8. झा 9. टु 10. ठे
11. ङि 12. ढो 13. त 14. थे 15. दा
16. धू 17. नृ 18. पी 19. फो 20. बा

10. **वर्णों के उच्चारण स्थान**—वर्णों का उच्चारण करते समय जिस वर्ण को मुख के जिस अवयव की सहायता से बोला जाता है, उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं। मुख में अनेक अवयव होते हैं, जैसे कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, नासिका, ओष्ठ आदि। इनके आधार पर वर्णों के उच्चारण स्थानों का विभाजन निम्न रूप से किया गया है—

1. अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह तथा (:) विसर्ग उच्चारण स्थान - कण्ठ।

2. इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श — उच्चारण स्थान – तालु।
3. ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष — उच्चारण स्थान – मूर्धा
4. लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स — उच्चारण स्थान – दन्त
5. उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म — उच्चारण स्थान – ओष्ठ
6. ए, ऐ — उच्चारण स्थान – कण्ठ एवं तालु
7. ओ, औ — उच्चारण स्थान – कण्ठ एवं ओष्ठ
8. व — उच्चारण स्थान – दन्त एवं ओष्ठ
9. ञ, म, ङ, ण, न — उच्चारण स्थान – नासिका
10. (ं) अनुस्वार — उच्चारण स्थान – नासिका
11. जिह्वामूलीय (ᳵ क ᳵ ख) — उच्चारण स्थान – जिह्वा का मूल।

अध्याय–2 सन्धि प्रकरणम्

1. 1. (अ) यण् 2. (ब) जश्त्व 3. (स) अनुनासिक 4. (द) सत्व विसर्गः 5. (अ) रुत्व विसर्गः 6. (ब) श्चुत्व 7. (स) अयादि 8. (द) वृद्धि 9. (अ) गुण 10. (ब) दीर्घ।

2. (i) हिमालयः (दीर्घ सन्धि) (ii) रवीन्द्रः (दीर्घ सन्धि) (iii) गुरुपदेशः (दीर्घ सन्धि)
(iv) पितृणम् (दीर्घ सन्धि) (v) सुरेन्द्रः (गुण सन्धि) (vi) नरेशः (गुण सन्धि)
(vii) लतेव (गुण सन्धि) (viii) हितोपदेशः (गुण सन्धि) (ix) गंगोदकम् (गुण सन्धि)
(x) महोर्जितम् (गुण सन्धि) (xi) देवर्षि (गुण सन्धि) (xii) हरे (वृद्धि सन्धि)
(xiii) भवति (अयादि सन्धि) (xiv) नायकः (अयादि सन्धि) (xv) श्रावकः (अयादि सन्धि)
(xvi) ममेव (वृद्धि सन्धि) (xvii) तथैव (वृद्धि सन्धि) (xviii) मतैक्यम् (वृद्धि सन्धि)
(xix) महैक्यम् (वृद्धि सन्धि) (xx) जलोघः (वृद्धि सन्धि) (xxi) यद्यपि (यण् सन्धि)
(xxii) नध्यत्र (यण् सन्धि) (xxiii) स्वागतम् (यण् सन्धि) (xxiv) वध्वागमनम् (यण् सन्धि)

3. (i) महा + ईश्वरः (गुण सन्धि) (ii) परम + उदारः (यण सन्धि) (iii) सत् + चरित्रम् (श्चुत्व सन्धि)
(iv) गिरि + ईशः (वृद्धि सन्धि) (v) अहम् + वने (अनुस्वार सन्धि) (vi) नमः + करोति (विसर्ग सन्धि)
(vii) गंगा + उदकम् (गुण सन्धि) (viii) मही + ईशः (दीर्घ सन्धि) (ix) विष्णु + उदय (दीर्घ सन्धि)
(x) अच् + अंतः (जश्त्व सन्धि)।

4. (i) विद्यालयः (ii) महर्षिः (iii) महोत्सवः (iv) गिरीशः (v) भानूदयः
(vi) जगदीशः (vii) हरिं वन्दे (viii) सूर्योदयः (ix) प्रत्येकम् (x) गंगोघः।

5. **सन्धि**—सामान्यतया 'सन्धि' शब्द का अर्थ मेल, समझौता या जोड़ है, किन्तु संधि प्रकरण में इसका अर्थ थोड़ा भिन्न होते हुए यह है कि जब एक से अधिक स्वर अथवा व्यञ्जन वर्ण अत्यधिक निकट होने के कारण मिलकर एक रूप धारण करते हैं तो वह संधि का परिणाम होता है, यही सन्धि कहलाता है।

6. **सन्धि के भेद**—सन्धि के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं—
1. स्वर (अच्) सन्धि, 2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि, 3. विसर्ग सन्धि।

सन्धि के भेद—स्वर सन्धि—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव।

व्यञ्जन (हल्) सन्धि—श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, अनुनासिक, अनुस्वार।

विसर्ग सन्धि—सत्व, उत्व, रुत्व।

7. **स्वर संधि—**जब दो या दो से अधिक स्वरों में मेल होने पर परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

व्यंजन सन्धि—व्यंजन का किसी व्यंजन के साथ अथवा स्वर के साथ मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि—विसर्ग (:) का स्वर वर्ण अथवा व्यञ्जन वर्ण के साथ मेल होने पर जब विसर्ग में कोई विकार (परिवर्तन) होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

अध्याय–3 समास प्रकरणम्

1. 1. (द) कर्मधारय 2. (अ) द्वन्द्व 3. (द) द्विगु 4. (स) द्विगु 5. (ब) कर्मधारय
6. (अ) कर्मधारय 7. (द) तत्पुरुष 8. (स) तत्पुरुष 9. (ब) अव्ययीभाव 10. (अ) अव्ययीभाव

2. 1. त्रयाणां भुवनानां समाहारः (द्विगु समास)
2. करं कमलम् इव (कर्मधारय समास)
3. काकेभ्यः बलिः (चतुर्थ तत्पुरुष समास)
4. राजः पुरुषः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
5. अक्षेषु शौण्डः (सप्तमी तत्पुरुष समास)
6. पीतं च तद् अम्बरम् (कर्मधारय समास)
7. चतुर्णां युगानां समाहारः (द्विगु समास)
8. महान् चासौ आत्मा (कर्मधारय समास)
9. सुखं प्राप्तः (द्वितीया तत्पुरुष समास)
10. गजानां सेवकः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
11. पञ्चानां तंत्रानां समाहारः (द्विगु समास)
12. मुखं चन्द्र इव (कर्मधारय समास)
13. मार्गात् भ्रष्टः (पञ्चमी तत्पुरुष समास)
14. महान् चासौ पुरुषः (कर्मधारय समास)
15. पञ्चानां वटानां समाहारः (द्विगु समास)
16. नीलं च तद् उत्पलम् (कर्मधारय समास)
17. महती चासौ देवी (कर्मधारय समास)
18. पञ्चानां पात्राणां समाहार (द्विगु समास)
19. विद्यायाः आलयः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
20. महांश्चासौ ऋषिः (कर्मधारय समास)
21. वृक्षात् पतितः (पञ्चमी तत्पुरुष समास)
22. घन इव श्यामः (कर्मधारय समास)
23. स्वर्गात् पतितः (पञ्चमी तत्पुरुष समास)
24. पित्रा तुल्यः (तृतीया तत्पुरुष समास)

3.
1. विधिमन्त्री — षष्ठी तत्पुरुष समास
2. मातृसदृशी — तृतीया तत्पुरुष समास
3. भ्रातृभाज्यम् — तृतीया तत्पुरुष समास
4. राजहार्यम् — तृतीया तत्पुरुष समास
5. विद्यासमम् — तृतीया तत्पुरुष समास
6. राष्ट्रमन्दिरम् — कर्मधारय समास
7. देशोद्धारम् — षष्ठी तत्पुरुष समास
8. मधुरव्यवहारम् — कर्मधारय समास
9. सुवर्णवृष्टिः — षष्ठी तत्पुरुष समास
10. जीवनरथम् — कर्मधारय समास
11. पवित्रनामानि — कर्मधारय समास
12. वस्त्रपूतम् — तृतीया तत्पुरुष समास
13. तीक्ष्ण दृष्टिः — कर्मधारय समास
14. प्रखरबुद्धिः — कर्मधारय समास
15. आर्तस्वरम् — कर्मधारय समास
16. पञ्चरात्रिः — द्विगु समास
17. परोपकारः — षष्ठी तत्पुरुष समास
18. कुसुमाकरः — षष्ठी तत्पुरुष समास
19. मिथ्या व्यवहारम् — कर्मधारय समास
20. कटुशब्दः — कर्मधारय समास
21. पर्यावरणसंरक्षणम् — षष्ठी तत्पुरुष समास
22. जन्मभूमिः — षष्ठी तत्पुरुष समास
23. समाधिस्थलम् — षष्ठी तत्पुरुष समास
24. निर्माणसौन्दर्यम् — षष्ठी तत्पुरुष समास
25. पर्वतमालाः — षष्ठी तत्पुरुष समास

अध्याय–4 प्रत्यय–प्रकरणम्

1. 1. (ब) तुमुन् 2. (अ) क्त्वा 3. (द) तुमुन् 4. (स) क्त्वा 5. (ब) तुमुन्
6. (अ) क्त्वा 7. (द) तुमुन् 8. (स) क्त्वा 9. (ब) तुमुन् 10. (अ) क्त्वा

2. 1. प्रत्यय को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है– कृत् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

2. गम् + अनीयर् = गमनीयम्। स्मृ + अनीयर् = स्मरणीय।

3. विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं– (1) साधारण अवस्था (2) तुलनात्मक अवस्था (3) अतिशयावस्था।

4. (1) **साधारण अवस्था**–साधारण अवस्था में विशेषण की स्थिति जैसी की तैसी बनी रहती है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

(2) **तुलनात्मक अवस्था**–दो की तुलना में एक की विशेषता बताने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तरप्' का 'तर' शेष रहता है। 'तरप्' प्रत्यय से बने शब्द के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।

(3) **अतिशयावस्था**–बहुतों में से एक की विशिष्टता बताने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।' तमप्' का 'तम' शेष रहता है। 'तमप्' प्रत्यय से बने शब्द के रूप भी 'तरप्' के समान तीनों लिंगों में चलते हैं।

उदाहरण–	**साधारण अवस्था**	**तुलनात्मक अवस्था ('तरप्' प्रत्यय)**	**अतिशयावस्था ('तमप्' प्रत्यय)**
	स्थूलः	स्थूलतरः	स्थूलतमः
	अल्पः	अल्पतरः	अल्पतमः

●●

अध्याय–5 उपसर्ग प्रकरणम्

(क) 1. (अ) समागत्य 2. (द) निरगच्छत् 3. (स) परिश्रमः 4. (अ) उपसृत्य 5. (अ) प्रविशति

(ख)

1. निर	(iv)	निर्गच्छति
2. प्र	(iii)	प्राचार्य
3. सम्	(v)	संभवति
4. अप्	(ii)	अपहराते
5. परि	(i)	परिभ्रमति

(ग) 1. ✕ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✕ 5. ✕

(घ) 1. प्र 2. सम् + आङ् 3. परि 4. निर् 5. उप्

(ङ) 1. (i) प्र (ii) आ 2. (i) प्रति (ii) वि 3. (i) परि (ii) सु 4. (i) सम् (ii) निर् 5. (i) उप (ii) अप
6. (i) दुर्व्यवहरति (ii) दुस्तरः 7. (i) विरमति (ii) निपतति
8. (i) निमज्जति (ii) अधिगच्छति 9. (i) अत्यादरः (ii) अपिधानम्
10. (i) सुकर्मः (ii) प्रतिकरोति

●●

अध्याय–6 अव्यय निरूपणम्

1. 1. (ब) बहवः 2. (अ) तु 3. (द) अन्यत्र 4. (स) तत्र 5. (ब) सर्वत्र
6. (अ) तदा 7. (द) विना 8. (स) एव 9. (ब) अतः 10. (अ) पुनः

2. (i) सर्वत्र (ii) ऋते (iii) अधः (iv) कुत्र (v) तत्र, यत्र (vi) यथा (vii) तथा (viii) आम् (ix) अपि (x) अत्र।

3. (i) प्रातः (ii) सर्वदा (iii) कदा (iv) अपि (v) अधुना (vi) अद्य।

4. (i) कुतः (ii) कदा (iii) कुत्र (iv) कथं (v) किम्।

अध्याय–7 विशेषण–प्रकरणम्

1. 1. (ब) एकः 2. (अ) दृश्यस्य 3. (द) कार्याणि 4. (स) मधुरम् 5. (ब) गुणी
6. (अ) कृष्णः 7. (द) छात्राणां 8. (स) बहवः 9. (ब) एतस्य दिनस्य 10. (ब) धनं

अध्याय–8 संख्यावाची एवं क्रमवाची शब्द

1. 1. (ब) 65 2. (अ) 38 3. (द) चत्वारिंशत् 4. (स) पञ्चसप्तति 5. (ब) त्रिभिः
6. (अ) एकस्यै 7. (द) षट्त्रिंशत् 8. (स) 21 9. (ब) 74 10. (अ) सप्तशीति

2. अष्ट, नव, एकादश, द्वादश, षोडश, सप्तदश, अष्टादश, विंशतिः।

3. (क) अष्ट (ख) एकादश (ग) नवदश (घ) पञ्च (ङ) अष्टादश
(च) त्रयोदश

4. द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, नव, दश, एकादश, द्वादश, त्रयोदश, पञ्चदश, षोडश, सप्तदश, विंशति, त्रयोविंशति, पञ्चविंशति, अष्टाविंशति, त्रिंशत।

5. 1. अष्ट 2. द्वादश 3. विंशति 4. सप्त 5. एकादश
6. षट् 7. एकविंशति 8. पञ्चविंशति 9. सप्तविंशति 10. नव
11. पञ्चदश 12. द्वात्रिंशत् 13. पञ्चत्रिंशत् 14. अष्टविंशति 15. द्वौ
16. नवदश 17. चतुर्दश 18. चत्वारः 19. दश 20. अष्टत्रिंशत्!
21. त्रयः 22. अष्टादश 23. षट्चत्वारिंशत् 24. त्रयोदश 25. पञ्च
26.सप्तदश 27. एकः 28. चतुस्त्रिंशत् 29. त्रयोविंशति 30. षोडश

अध्याय–9 शब्द–रूप प्रकरणम्

1. 1. (ब) लतायाम् 2. (अ) नद्यः 3. (द) धेनुभिः 4. (स) गुरुभ्यः 5. (ब) भानवे
6. (अ) कपिना 7. (द) मुन्योः 8. (स) फलानाम् 9. (ब) मालायाम् 10. (अ) बालकेषु।

2. (1) अश्रु = आँसू

(i) अश्रु: (ii) अश्रुणी (iii) अश्रुणा (iv) अश्रुणे (v) अश्रुण:

(vi) अश्रुण: (vii) अश्रुणि (viii) हे अश्रुणि!

(2) उकारान्त = पुल्लिंङ्ग ''गुरु'' शब्द:

(i) गुरुव: (ii) गुरु (iii) गुरुणा (iv) गुरुभ्याम् (v) गुरुभ्य:

(vi) गुरो: (vii) गुर्वो:

(3) उकारान्त = पुल्लिंङ्ग ''भानु'' शब्द:

(i) भानू (ii) भानुम् (iii) भानुभि: (iv) भानुभ्याम् (v) भानुभ्य:

(vi) भानो: (vii) भान्वो:

(4) इकारान्त = पुल्लिंङ्ग ''कपि:'' शब्द:

(i) कपय: (ii) कपिम् (iii) कपिभ्याम् (iv) कपिभ्य: (v) कपिभ्याम्

(vi) कपीनाम् (vii) कपौ

(5) इकारान्त = पुल्लिंङ्ग ''मुनि:'' शब्द:

(i) मुनय: (ii) मुनी (iii) मुनिना (iv) मुनिभ्याम् (v) मुने:

(vi) मुनीनाम् (vii) मुनौ:

(6) आकारान्त = नपुंसक लिंग ''फल'' शब्द:

(i) फले (ii) फलम् (iii) फलै: (iv) फलाभ्याम् (v) फलात्

(vi) फलानाम् (vii) फले

(7) आकारान्त = स्त्रीलिंग ''माला:'' शब्द:

(i) माले (ii) मालाम् (iii) मालाभि: (iv) मालाभ्याम् (v) मालाया:

(vi) मालानाम् (vii) मालयो:

(8) अकारान्त = पुल्लिंङ्ग ''बालक'' शब्द:

(i) बालकौ (ii) बालकान् (iii) बालकाभ्याम् (iv) बालकाय (v) बालकेभ्य:

(vi) बालकस्य (vii) बालकयो:

(9) महाराज = महाराजा

(i) महाराजा: (ii) महाराजौ (iii) महाराजेन (iv) महाराजाय (v) महाराजात्

(vi) महाराजयो: (vii) महाराजो (viii) हे महाराजा !

(10) सखा = मित्र

(i) सखा (ii) सखीन् (iii) सख्या (iv) सख्ये (v) सख्यु:

(vi) सखीनाम् (vii) सख्यौ (viii) हे सखाय:!

(11) हरि = विष्णु, वानर

(i) हरय: (ii) हरिम् (iii) हरिभ्याम् (iv) हरये (v) हरे:

(vi) हरीणाम् (vii) हरौ (viii) हे हरय:।

अध्याय–10 धातु–रूप प्रकरणम्

1\. 1. (ब) चलिष्याव: 2. (अ) चलत: 3. (द) खेलिष्यसि 4. (स) खेलथ: 5. (ब) खादिष्यामि
6\. (अ) खादति 7. (द) आगमिष्यथ: 8. (स) आगच्छन्ति 9. (ब) लेखिष्यति 10. (अ) लिखाम:।

2\. **1. वद (बोलना) लट् लकार:**

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वदति	**वदत:**	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथ:	**वदथ**
उत्तम पुरुष	**वदामि**	वदाव:	वदाम:

लृट् लकार:

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यत:	**वदिष्यन्ति**
मध्यम पुरुष	**वदिष्यसि**	वदिष्यथ:	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	**वदिष्याव:**	वदिष्याम:

लङ् लकार:

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	**अवदन्**
मध्यम पुरुष	अवद:	अवदतम्	**अवदत**
उत्तम पुरुष	अवदम्	**अवदाव**	अवदाम

लोट् लकार:

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वदतु	**वदताम्**	वदन्तु
मध्यम पुरुष	**वद**	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	**वदाम**

विधिलिङ् लकार:

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	**वदेयु:**
मध्यम पुरुष	वदे:	वदेतम्	**वदेत**
उत्तम पुरुष	वदेयम्	**वदेव**	वदेम

2. चुर् = चुराना (लट् लकार)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयति	**चोरयत:**	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	**चोरयथ:**	चोरयथ:
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयाव:	**चोरयाम:**

लृट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	**चोरयिष्यत:**	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथ:	**चोरयिष्यथ:**
उत्तम पुरुष	**चोरष्यियामि**	चोरयिष्याव:	चोरयिष्याम:

लङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	**अचोरयन्**
मध्यम पुरुष	अचोरय:	अचोरयतम्	**अचोरयत**
उत्तम पुरुष	**अचोरयम्**	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयाताम्	**चोरयन्तु**
मध्यम पुरुष	**चोरय**	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	**चोरयाव**	चोरयाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	**चोरयेयु:**
मध्यम पुरुष	चोरये:	चोरयेतम्	**चोरयेत**
उत्तम पुरुष	**चोरयेयम्**	चोरयेव	चोरयेम

3. श्रु = सुनना (लट् लकार)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुत:	**शृण्वन्ति**
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथ:	**शृणुथ**
उत्तम पुरुष	**शृणोमि**	शृणुव:/शृण्व	शृणुम:/शृण्म:

लृट लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	**श्रोष्यति**	श्रोष्यत:	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	**श्रोष्यसि**	श्रोष्यथ:	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्याव:	**श्रोष्याम:**

लङ् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	**अशृण्वन्**
मध्यम पुरुष	अशृणो:	**अशृणुतम्**	अशृणुत
उत्तम पुरुष	**अशृणवम्**	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम

लोट् लकार:

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	**शृण्वन्तु**
मध्यम पुरुष	शृणु	**शृणुतम्**	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	**शृणवाम**

विधिलिङ् लकार:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	**शृणुयु:**
मध्यम पुरुष	**शृणुया:**	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	**शृणुयाव**	शृणुयाम

(4) भक्ष् = खाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयति	**भक्षयत:**	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	**भक्षयसि**	भक्षयथ:	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयाव:	**भक्षयाम:**

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	**भक्षयिष्यत:**	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथ:	**भक्षयिष्यथ**
उत्तम पुरुष	**भक्षयिष्यामि**	भक्षयिष्याव:	भक्षयिष्याम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**अभक्षयत्**	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षय:	अभक्षयतम्	**अभक्षयत**
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	**अभक्षयताव**	अभक्षयाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**भक्षयतु**	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	**भक्षयतम्**	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयानि	भक्षयाव	**भक्षयाम**

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	**भक्षेयु:**
मध्यम पुरुष	**भक्षयै:**	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	**भक्षयेव**	भक्षयेम

(5) कथ् = कहना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयत:	**कथयन्ति**
मध्यम पुरुष	कथयसि	**कथयत:**	कथयथ
उत्तम पुरुष	**कथयामि**	कथयाव:	कथयाम:

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**कथयिष्यति**	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	**कथयिष्यत:**	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	**कथयिष्याम:**

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	**अकथयताम्**	अकथयन्
मध्यम पुरुष	**अकथयत:**	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	**अकथयाम**

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	**कथयताम्**	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	**कथय**	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	**कथयाम**

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	**कथयेताम्**	कथयेयु:
मध्यम पुरुष	कथये:	कथयेतम्	**कथयेत**
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	**कथयेम**

(6) दृश = देखना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पश्यति**	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	**पश्यथ:**	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	**पश्याम:**

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	**द्रक्ष्यन्ति**
मध्यम पुरुष	**द्रक्ष्यसि**	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	**द्रक्ष्याव:**	द्रक्ष्याम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	**अपश्यताम्**	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	**अपश्य:**	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	**अपश्याम**

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पश्यतु**	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	**पश्य**	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	**पश्याम**

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पश्येत्**	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यम पुरुष	पश्ये:	पश्येतम्	**पश्येत**
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	**पश्येव**	पश्येम

(7) स्था = ठहरना / रुकना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**तिष्ठति**	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	**तिष्ठथः**	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	**तिष्ठामः**

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थास्यति	**स्थास्यतः**	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	**स्थास्यसि**	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	**स्थास्यामः**

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	**अतिष्ठन्**
मध्यम पुरुष	**अतिष्ठः**	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	**अतिष्ठाव**	अतिष्ठाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	**तिष्ठताम्**	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	**तिष्ठ**	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	**तिष्ठाम**

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**तिष्ठेत्**	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	**तिष्ठेत**
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	**तिष्ठेव**	तिष्ठेम

(8) पच् = पचाना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	**पचन्ति**
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	**पचथ**
उत्तम पुरुष	**पचामि**	पचावः	पचामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	**अपचताम्**	अपचन्
मध्यम पुरुष	**अपचः**	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	**अपचाम**

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	**पक्ष्यतः**	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	**पक्ष्यसि**	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	**पक्ष्यामः**

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	**पचन्तु**
मध्यम पुरुष	**पच**	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	**पचाव**	पचाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पचेत्**	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	**पचेतम्**	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	**पचेम**

(9) रक्ष = रक्षा करना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षति	**रक्षतः**	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	**रक्षसि**	रक्षथः	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षावः	**रक्षामः**

लृट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षिष्यति	**रक्षिष्यतः**	रक्षिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	**रक्षिष्यसि**	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उत्तम पुरुष	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	**रक्षिष्यामः**

लङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरक्षत्	अरक्षताम्	**अरक्षन्**
मध्यम पुरुष	अरक्षः	**अरक्षतम्**	अरक्षत
उत्तम पुरुष	**अरक्षम्**	अरक्षाव	अरक्षाम

लोट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षतु	रक्षताम्	**रक्षन्तु**
मध्यम पुरुष	**रक्ष**	रक्षतम्	रक्षत
उत्तम पुरुष	रक्षानि	रक्षाव	**रक्षाम**

विधिलिङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षेत्	**रक्षेताम्**	रक्षेयुः
मध्यम पुरुष	**रक्षेः**	रक्षेतम्	रक्षेत
उत्तम पुरुष	रक्षेयम्	रक्षेव	**रक्षेम**

(10) हस् = हँसना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	**हसन्ति**
मध्यम पुरुष	हससि	**हसथः**	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	**हसामः**

लृट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**हसिष्यति**	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	**हसिष्यथ**
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	**हसिष्यावः**	हसिष्यामः

लङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहसत्	**अहसताम्**	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः	अहसतम्	**अहसत**
उत्तम पुरुष	**अहसम्**	अहसाव	अहसाम

लोट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**हसतु**	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	**हसतम्**	हसत
उत्तम पुरुष	**हसानि**	हसाव	हसाम

विधिलिङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसेत्	**हसेताम्**	हसेयुः
मध्यम पुरुष	**हसेः**	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	**हसेम**

(11) वस् = रहना (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वसति	**वसतः**	वसन्ति
मध्यम पुरुष	**वससि**	वसथः	वसथ
उत्तम पुरुष	वसामि	**वसावः**	वसामः

लृट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वत्स्यति	वत्स्यतः	**वत्स्यन्ति**
मध्यम पुरुष	**वत्स्यसि**	वत्स्यथः	वत्स्यथ
उत्तम पुरुष	वत्स्यामि	**वत्स्यावः**	वत्स्यामः

लङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**अवसत्**	अवसताम्	अवसन्
मध्यम पुरुष	अवसः	अवसतम्	**अवसत**
उत्तम पुरुष	अवसम्	**अवसाव**	अवसाम

लोट् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**वसतु**	वसताम्	वसन्तु
मध्यम पुरुष	**वस**	वसतम्	वसत
उत्तम पुरुष	वसानि	वसाव	**वसाम**

विधिलिङ् लकारः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वसेत्	**वसेताम्**	वसेयुः
मध्यम पुरुष	वसेः	वसेतम्	**वसेत**
उत्तम पुरुष	**वसेयम्**	वसेव	वसेम

●●

अध्याय–11 कारक–प्रकरणम्

1. 1. (ब) सप्तमी 2. (अ) षष्ठी 3. (द) पंचमी 4. (स) पंचमी 5. (ब) चतुर्थी
6. (अ) चतुर्थी 7. (द) तृतीया 8. (स) द्वितीया 9. (अ) प्रथमा 10. (अ) प्रथमा

2. (1)
1. मोहनः धावति। 2. बालकः पठतः। 3. राधाः भोजनम् पचति।
4. छात्रः पश्यति। 5. श्रृगालः आगच्छति। 6. सः प्रश्नम् पृच्छति।
7. कपिः फलम् भक्षयति। 8. बालकौ पठतः। 9. ते धावन्ति।
10. बालकाः चित्रम् पश्यन्ति।

(2) 1. त्वम् पाठम् पठसि। 2. त्वम् किम् पश्यसि? 3. त्वम् कदा गच्छसि?
4. युवाम् चित्रम् पश्यतः। 5. युवाम् पत्रम् लिखतः। 6. यूयम् अत्र आगच्छतः।
7. यूयम् प्रातः धावतः। 8. युवाम् फलम् भक्ष्यथः। 9. त्वम् अत्र आगच्छसि।
10. यूयं कुत्र गच्छथ?

(3) 1. अहम् दुग्धं पिबामि। 2. आवां कुत्र गच्छावः? 3. वयं कथां कथयामः।

4. अहं मयूरं पश्यामि। 5. आवाम् जलं पिबाव:। 6. वयं क्रीडाक्षेत्रं गच्छाम:।
7. अहं किं भक्षयामि? 8. आवां किं पचाव:? 9. वयं प्रश्नं पृच्छाम:।
10. आवां किं लिखाव:?

(4) 1. स: ग्रामम् अगच्छत्। 2. विप्र: गृहम् अगच्छत्। 3. स: स्नानम् अकरोत्।
4. राम: मोहन: च अपठताम्। 5. तौ उद्यानम् अगच्छताम्। 6. सीता जलम् आनयत्।
7. बालिका भोजनम् अभक्षयत्। 8. किं तव सहोदर: अत्र आगच्छत्? 9. यूयं कुत्र अगच्छथ?
10. सीता एकं पत्रम् अलिखत्।

(5) 1. तस्य मित्रम् आगच्छत्। 2. कृष्ण: अर्जुनम् अकथयत्। 3. मुनि: तप: अकरोत्।
4. शिशु: भयभीत: आसीत्। 5. अहं चौरान् अपश्यम्। 6. राम: सदा सत्यम् अवदत्।
7. सेवक: स्वकार्यम् अकरोत्। 8. धनिक: धनम् अयच्छत्। 9. अध्यापक: क्रुद्ध: अभवत्।
10. त्वं ह्य: किम् अकरो:?

(6) 1. ब्रह्मदत्त: गमिष्यति। 2. मोहन: पत्रं लेखिष्यति। 3. बालका: पाठं पठिष्यन्ति।
4. त्वम् पाठं स्मरिष्यसि। 5. सीता वनं गमिष्यति। 6. ते चित्रं द्रक्ष्यन्ति।
7. प्रमिला भोजनं पक्ष्यति। 8. युवां दुग्धं पास्यथ:। 9. छात्रा: क्रीडाक्षेत्रे धाविष्यन्ति।
10. अहं किं करिष्यामि?

(7) 1. राधा पाठं पठतु। 2. छात्र: भोजनं करोतु। 3. नृप: धनं यच्छतु।
4. ईश्वर: जीवनं रक्षतु। 5. वयं चित्रं पश्याम्। 6. त्वम् उद्याने धाव।
7. ते पुष्पाणि नयन्तु। 8. तौ जलं पिबताम्। 9. राधा भोजनं पचतु।
10. युवां पाठ पठतम्।

(8) 1. शिशव: भयभीता: न भवेयु:। 2. यूयं देशस्य रक्षां कुर्यात्। 3. बालिका न हसेत्।
4. स: प्राज्ञस्य सम्मानं कुर्यात्। 5. वयं शिक्षकानाम् आज्ञापालनं कुर्याम्। 6. त्वं कलहं न कुर्या:।
7. वयं स्वपुस्तकानि पठेन्। 8. राम: शनै: शनै: वदेत्। 9. त्वं प्रात: पाठान् स्मरे:।
10. पुत्र: जनकेन सह भवेत्।

3. **कारक**—वाक्य में क्रिया की सिद्धि करने वाले को अथवा जिसका क्रिया के साथ सीधा संबंध होता है, उसको कारक कहते हैं। उदाहरण—'मोहन चित्रं पश्यति' वाक्य में मोहन: और 'चित्र' का संबंध 'पश्यति' क्रिया से है। अत: उक्त 'मोहन' और 'चित्र' ये दोनों ही पद कारक हैं।

4. संस्कृत-व्याकरण में कारक 6 होते हैं—
1. कर्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. सम्प्रदान, 5. अपादान, 6. अधिकरण।

5. (i) अपादान कारक। पंचमी विभक्ति। (ii) करण कारक। तृतीया विभक्ति।
(iii) संप्रदान कारक। चतुर्थी विभक्ति। (iv) कर्मकारक। द्वितीया विभक्ति।
(v) संप्रदान कारक। चतुर्थी विभक्ति। (vi) कर्म कारक । द्वितीया विभक्ति।

6. धिक् के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

7. किसी कार्य की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक हो, उसे 'करण' कहते हैं। करण में तृतीय विभक्ति होती है, जैसे—'राम:

कलेमन लिखति' राम कलम से लिखता है। उक्त वाक्य में लिखने के कार्य में कलम सहायक है, वह करण है। अतः उसमें तृतीया विभक्ति हुई है।

8. संप्रदान कारक। चतुर्थी विभक्ति।

9. संबंध कारक। षष्ठी विभक्ति।

10.

कारक	**कारक चिह्न**	**विभक्ति**
कर्ता	ने	प्रथमा
कर्म	को	द्वितीया
करण	से (द्वारा)	तृतीया
सम्प्रदान	के लिए	चतुर्थी
अपादान	से (अलग होना)	पंचमी
सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे	षष्ठी
अधिकरण	में, पर	सप्तमी
सम्बोधन	ओ, अरे, हे	सम्बोधन

अध्याय–12 अनुवाद–प्रकरणम्

1. 1. बालकः धावति। 2. बालकौ पठतः। 3. त्वम् गच्छसि।
4. छात्रः पश्यति। 5. त्वम् पश्यसि। 6. अहम् पठामि।
7. त्वम् जलम् पिबसि। 8. मयूरं नृत्यति। 9. बालकः चित्रम् पश्यति।
10. सः पत्रम् लिखति।

2. 1. त्वम् विद्यालयम् अगच्छः। 2. अहम् जलम् पिबामि। 3. अहम् रामायणम् अपठम्।
4. बालकः राजमार्गे अधावत्। 5. सः प्रश्नम् अपृच्छत्। 6. बालकः सिंहम् अपश्यत्।
7. बालकः अश्वात् अपतत्। 8. शिष्यः प्रश्नम् अपृच्छत्। 9. रमा पत्रम् अलिखत्।
10. अहम् निबंधम् अलिखम्।

3. 1. बालकः राजमार्गे धाविष्यति। 2. छात्रः पुस्तकम् पठिष्यति। 3. अहम् प्रयागे गमिष्यामि।
4. मोहनः पत्रम् लिखष्यति। 5. रामः दुग्धम् पिबष्यति। 6. वयम् वाराणसीम् गमिष्यामः।
7. त्वम् इदं कार्यम् करिष्यसि। 8. सः असत्यम् न वदिष्यति। 9. आवाम् पुस्तकम् पठिष्यावः।
10. चोरः धनम् चोरिष्यति।

4. 1. सर्वदा सत्यम् वदतु। 2. देशस्य रक्षाम् करोतु। 3. युवाम् पाठम् पठतम्।
4. परस्पर कलहम् मा कुरु। 5. आगच्छः पठ च। 6. त्वम् धाव।
7. सः पत्रम् लिखतु। 8. ते बागेन धावन्तु। 9. त्वम् विद्वानम् भव।
10. ते प्रश्नम् पृच्छन्तु।

5. 1. माताः कथाम् कथयेत्। 2. ते ग्रामम् न गमेयुः। 3. त्वम् स्वच्छ जलम् पिबेः।

4. ते भोजनम् करेयुः। 5. ते न हसेयुः। 6. त्वम् पठेः।

6. 1. त्वम् न गमसि। 2. ते श्वः जयपुरम् गमिष्यन्ति। 3. अहम् रामायणम् अपठतः।
4. मोहनः पुस्तकम् पठति। 5. बालिका: खेलन्ति। 6. श्यामः गीताम् पठति।

अध्याय–13 पद परिवर्तनम्

1. (i) आवां अवश्यमेव सह एव चलिष्याव:।
(ii) एक: रघु: नामक: नृप: अस्ति।
(iii) नृप: यज्ञे दानम् करोति।
(iv) रघु: कौत्सस्य आतिथ्यम् करोति।
(v) भवान् मम सहायतां करोति।

अध्याय–14 पर्यायवाचिन: शब्दा:

1. 1. भूमिः, अवनिः, मही। 2. गिरिः, महीधरः, अचलः। 3. नभः, गगनम्, व्योमः।
4. वारिः, नीरम्, अम्बु। 5. गिरितनया, सरित्, निर्झरिणी। 6. रविः, दिनकरः, भानुः।
7. धनिन्, सम्पन्नः, श्रीमत्। 8. तरुण, वयस्कः, युवाः। 9. कुसुमम्, प्रसूनम्, फूलम्।
10. करः, पाणिः, शयः। 11. लोचनं, नयनं, चक्षुस। 12. पक्षिन्, अंडजः, नीडजः।
13. अध्यापकः, गुरुः, उपाध्यायः। 14. मोर, नीलकंठ, केकिन्। 15. मृगेन्द्रः, हरिः, केशरी।
16. घड़ियाल, मगरमच्छ, झषावां। 17. कलरवः, कबूतर, छदेः। 18. चूहा, खनकः, बिलेशयः।
19. धावकः, शौचेयः, कर्मकीलकः। 20. तृणराजः, मधुरसः, आसबद्रुः

2. अलिः, मिलिन्द, मधुपः।

3. अग्निः

अध्याय–15 विलोम शब्दा:

1. (क) अल्पज्ञः

2. 1. अवनति 2. मूढ़ः 3. सज्जनः
4. दिनम् 5. प्रतिकूलः 6. अनादरः
7. अग्रजः 8. अहिंसा 9. अनिष्टः
10. स्थूलः 11. पराजयः 12. शोक
13. दुष्करः 14. दुर्जनः

अध्याय–16 समयलेखनम्

1. (i) सार्धषड् (ii) पादोनाष्ट (iii) सपादाष्ट (iv) एकादश
2. (i) पञ्चवादनम् (ii) सार्धपञ्चवादनम् (iii) सपादषड्वादनम्
   (iv) चतुश्चत्वारिंशत्–पलोत्तरषड्वादनम्
3. (i) षड् (ii) अष्ट (iii) सार्धत्रि
4. अष्टवादनम् दशपलोत्तरदशवादनम्
   सपादैकादशवादनम् सार्धैकवादनम्

अध्याय–17 पत्र लेखनम्

1. **अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्**

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्य महोदयः

पब्लिक जू. हा. स्कूल

दौसा (राजस्थानम्)

मान्यः

निवेदनम् **इदम्** अस्ति **यत्** अस्य मासस्य **पञ्चमे** दिनांके मम **ज्येष्ठभ्रातुः** विवाहो भविष्यति। **अहम्** अपि तस्मिन् **महोत्सवे** सम्मिलितो भविष्यामि। **अतः** दिनत्रयस्य **अवकाशं** दत्त्वा **माम्** अनुग्रहण्न्तु भवन्तः **इति** प्रार्थये।

भवताम् आज्ञानुवर्ती

दिनांक 2.1.20....

शशिकान्तः

कक्षा (षष्ठः)

2. **विद्यालयपरिवर्तनात् विद्यालयत्यागस्य प्रार्थनापत्रम्**

श्रीमन्तः प्राचार्यमहोदयः

केन्द्रीयः विद्यालयः

कुरुक्षेत्रम्

महोदयाः

सेवायाम् **इदं** निवेदनम् अस्ति **यत्** मम पितुः **स्थानान्तरणं** जातम्। अतः **मह्यम्** अपि तत्रैव गत्वा **पठनम्** अनिवार्यम् वर्तते। पितरौ **बिना** मया अत्र एकाकिना स्थातुं **न** शक्यते। अतः **मया** विद्यालयान्तरणं **प्रमाणपत्रं** प्रदापयन्तु **भवन्तः** इति प्रार्थये।

भवदीयः शिष्यः

दिनांक 20.8.20....

राजकुमारः

अनुक्रमांकः 18

कक्षा (षष्ठः)

3. **अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्**

सेवायाम्

प्रधानाचार्या महोदया:

राजकीय: कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय:

बून्दी (राजस्थानम्)

महोदया:

तत्र भवतीनां **चरणकमलेषु** सविनयं निवेदनमस्ति **यत्** मम माता **विगतरात्रित:** शीतज्वरेण पीडिता **वर्तते।** सा गृहकार्यं सम्पादयितुं न सक्षमा। मामन्तरा **गृहे** नान्या अपि **या** मातु: परिचर्यां कुर्यात् **अत:** प्रार्थये यद् दिनद्वयस्य **अवकाशं** प्रदाय मयि **अनुगृहं** करिष्यन्ति भवन्त:।

भवतीनाम् आज्ञाकारिणी शिष्या

दिनांक: 2.1.20....

हेमलता झा

कक्षा (षष्ठ:)

4. **मित्राय वर्धापन पत्रम्**

935, सेक्टर-13,

अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्रम्

दिनांक 28.8.20...

प्रिय मित्र **धर्मानन्द**

सप्रेम नमोनम:।

अद्यैव मया शुभा **सूचना** प्राप्ता **यत्** भवान् **परीक्षायाम्** न केवलम् **उत्तीर्ण:** जात:, अपितु **प्रथमं** स्थानं लब्धवान्। अस्मिन् **प्रसन्नतया:** अवसरे **निजपक्षत:** मम मातृ-पितृ-पक्षत: अपि कोटिश: **वर्धापनानि** स्वीकरोतु भवान्। शीघ्रं मेलनं **प्रतीक्षे।**

भवदीयं मित्रम्

आनन्दरूपम्

5. **मित्राय विवाहप्रसङ्गे निमन्त्रणपत्रम्**

निज - सङ्केत: नगरम्

दिनांक 10.12.20....

प्रिय मित्र राकेश

अत्र कुशलं **तत्रास्तु** । भवान् इदं **विज्ञाय** अतीव प्रसन्नो **भविष्यति** यत् मम **भ्रातु:** विवाह: **निश्चित:** जात:। आगामिनि **मासे** प्रथम दिनाङ्के एव **माङ्गलिककार्यम्** भविष्यति। अस्मिन् **अवसरे** भवान् **द्विदिनपूर्वम्** एव आगच्छतु।

भवदीयं **स्नेहाङ्कितम्**

रामकुमार

अध्याय–18 चित्राधारित वर्णनम्

2. 1. अत्र द्वौ बालकौ कन्दुकेन क्रीडन्ति।
2. अस्मिन् चित्रे वयम् विद्यालयस्य क्रीडाक्षेत्रं पश्याम:।
3. आदर्श विद्यालयस्य प्राङ्गणम् क्रीडाक्षेत्रे बालिका पयोहिमम् खादति।
4. क्रीड़ाक्षेत्रे परित: अनेका: वृक्षा: सन्ति।
5. बालका: अत्र क्रीडित्वा अतिप्रसन्न: भवन्ति।

3. 1. कृषक: क्षेत्रेषु वृषभाभ्यां हलं कर्षति।
2. स: क्षेत्रेषु बीजानि वपति।
3. बीजेभ्य शस्यानि उद्भवन्ति।
4. यदा शस्यानि पक्वन्ति तदा कृषक: तानि कर्तति।
5. कृषक: अन्नदाता: कथ्यते।

4. 1. अत्र बाल: कुक्कुरेण सह खेलति।
2. बाल: कुक्कुरं स्नेहेन पश्यति।
3. बालस्य शिरसि एका टोपिका: अस्ति।
4. बालक: प्रसन्ना अस्ति।
5. इदं चित्रं कुक्कुर–बालस्य स्नेहेन पश्यति।

5. 1. इदं चित्रं शिशु मातो: स्नेहस्य अस्ति।
2. अत्र एक: शिशु: अस्ति।
3. माता शिशुं स्नेहेन पश्यति।
4. शिशु: मातु: अङ्के स्वपिति।
5. माता प्रसन्ना भवति।

1. 1. अस्मिन् चित्रे वयं नृत्यशालां पश्याम:।
2. अत्र द्वे बालिके नृत्यत:।
3. शिक्षिका ते नृत्यं शिक्षयति।
4. ते प्रतिदिनं गृहात् आगच्छत: नृत्यस्य अभ्यासं च कुरुत:।
5. ते नृत्यम् अर्चत:।

2. 1. एतस्मिन् चित्रे एक: जलाशय: रमणीय: पर्वत: च स्त:।
2. जलाशये वर्तिका: तरन्ति।
3. जलाशयस्य तटे बहव: वृक्षा: सन्ति।
4. अत्र शीतलवायु: प्रवहति।
5. जलाशयस्य दृश्यं मनोरमम् अस्ति।

3. 1. अयम् मम विद्यालयः अस्ति।
2. मम विद्यालयः सुन्दरः अस्ति।
3. विद्यालयः मम गृहस्य समीपे अस्ति।
4. विद्यालयं परितः बहवः वृक्षाः सन्ति।
5. अहं प्रतिदिनं मित्रेण सह विद्यालयं गच्छामि।

4. 1. अस्मिन् चित्रे होलिकोत्सवः आयोज्यते।
2. अयं महापर्व फाल्गुनमासस्यं पौर्णमास्या भवति।
3. अस्मिन् दिने जनाः रक्तपीतादिवर्णैः क्रीडन्ति, गायन्ति नृत्यन्ति चा।
4. अस्मिन् दिने गृहे-गृहे मिष्ठान्नं पच्यते।
5. जनाः परस्परं द्वेषं विस्मृत्य गलेन मिलन्ति।

5. 1. अस्मिन् चित्रे मोहनः कार्यालयं गच्छति।
2. सः ग्रामात् आगच्छति, तत्र सः परिवारजनैः सह निवसति।
3. अस्मिन् ग्रामे बसयानं न चलति यतः अयं मार्गः रेणुपूर्णः अस्ति।
4. मार्गे बहवः पादपाः मिलन्ति।
5. ग्रामस्य वातावरणं शुद्धं भवति।

अध्याय-19 लघु कथा लेखनम्

1. लुब्धः जम्बुकः

आसीत् एकः बधिकः। सः **वनम्** उपवसति स्म। माँस लुब्धोऽसौ व्याधः एकदा **धनुरादाय** मृगयार्थ मृगमन्विष्मन् काननान्तरम् अगच्छत्। **तत्र** तेनैको मृगः व्यापादितः। **मृगमादाय** गच्छता तेन घोराकृतिः शूकरो दृष्टः। **सः** मृगं भूमौ निधाय शरेण शूकरमहनत्। **शूकरः** गर्जन कुर्वाणः पादाघातेन तमाहतवान्। **व्याधः** हतः छिन्नद्रुम इव पपात। तस्य पादस्खलितेन एक सर्पः **अपि** मृतः। मृते व्याधे तत्रागत एकः श्रृगालः। सः **तान्** मृतानवलोक्य प्रसन्नोऽभवत्। सोऽचिन्तयत्—'अहो ! **भाग्यम्** अद्य महद् भोजनं मे समुपस्थितम्। अद्यतु धनुर्लग्नं स्नायुबन्धनमेव **खादामि**।' एवं कुर्वन्नसौ छिन्ने स्नायुबन्धने द्रुतम् **उत्प्लुतेन** कोरण्डेन हृदिभिन्नः श्रृगालः पञ्चत्वं गतः।

2. गज सौचिकयोः कथा

केनचिद् मनुष्येण एकः **गज पालितः** आसीत्। सः जलं पातुं स्नातुं च नित्यमेव नद्यास्तटं **गच्छति स्म** । मार्गे एकस्य सौचिकस्य आपणमासीत् सः **तस्मै किमपि** खादितुं यच्छन्ति। आपणेऽनेकानि स्यूतानि वस्त्राणि **अवलम्बितानि** आसन्। एकदा असौ सौचिकः परिहासे **गजस्य** करे सूचिम् अभिनत्। क्रुद्धः सन् गजः नद्याः **तटमगच्छत्** । तत्र स्नात्वा जलं च पीत्वा स्वकीये करे (शुण्डे) पङ्किलं **जलमानयत्**। सौचिकस्यापणमागत्य नव स्यूतेषु महार्घेषु वस्त्रेषु असिंचत्। **सौचिकः** किमपि न कर्तुमशक्नोत्। पश्चात्ताप-निमग्नोऽसौ **गजं** क्षममयाचत्। आत्मग्लानिमनुभूय **अति** खिन्नोऽभूत्।

3. चतुरः गर्दभः

कस्यचिद् **मनुष्यस्य** गृहे एक गर्दभः आसीत्। सः तस्य पृष्ठे **लवणस्य भारं धृत्वा** नयति स्म। सः सदैव नद्याः **पारं** नयति। एकदा **यदा सरितः जलमध्ये चलति स्म तदा** तस्य पादम् अस्खलत्। सः जले अपतत्। लवणः जले **विलीयते**

स्म। गर्दभ: इदं तथ्यम् अजानत्। यत् यथा यथा लवण: जले विलीयते तथा तथा एव भारमपि **अल्पताम्** आप्नोति। एतद् ज्ञात्वा गर्दभ: **नित्यमेव** सरित: जले पतति भारं च **अलपतरम्** करोति। एकदा स: **मनुष्य:** तस्य पृष्ठे तूलं (कर्पासं) अनयत्। गर्दभ: **नित्यमिव** जले अपतत्। जल **संग्रहणात्** तूलस्य भारमतितरमभवत्। भारस्य आधिक्यात् गर्दभ: **उत्थातुमति** असमर्थो अभवत्। यत्नेन उत्थाय अपि **चलितुमसमर्थ:** अजायत्। असमर्थो असौ भारेण **पीडित:** स्वामिना **प्रताडित** ताडित:। वराक: धूर्तताम् अत्यजत्।

4. चतुर: शृगाल:

कस्मिंश्चिद वन–प्रदेशे एक: **व्याघ्र:** वसति स्म। एकदा असौ **बधिकेन** पञ्जरे बद्ध:। व्याघ्र: पाशे खिन्न: सन् स्थित:। ततोऽसौ मार्गे **विप्रमेकं** गच्छन्तम् अपश्यत्। व्याघ्र: न्यवेदयत्–'मां मोचय।' दयार्द्र: ब्राह्मण: व्याघ्रे **दयमानं** तं **मोचयित्वा** सहाय्यमकरोत्। परञ्च हिंसक: व्याघ्र: तु कृतघ्न: आसीत्। स: विप्रं **खादितुमैच्छत्** । विप्र: तं स्वजीवनं **याचमान:** न्यवेदयत्–हे मृगराज! मा मां **व्यापादय** मां मा भक्षय। कृतज्ञो भव। परञ्च **निर्दय:** व्याघ्र: न शृणोत्। तदैव तत्र एक: **शृगाल:** आगच्छत्। सोऽवदत् – नाहं मन्ये यत् त्वं **विशालकाय:** अस्मिन् लघु पञ्जरे बद्ध: आसीत्। अत: पुन: **प्रविश्य** मां दर्शय। व्याघ्र: यावत् पुन: प्रविश्य दर्शयति तावत् शृगाल: **कपाटं** व्युपदयात्। एवं व्याघ्रं पञ्जरे पुन: निक्षिप्य विप्रं रक्षति।

5. सिंहमूषकयो: कथा

कस्मिंश्चित् वन–प्रदेशे एक: **सिंह:** प्रतिवसति स्म। एकदा सा: **वृक्षस्य** छायायां **स्वपिति** स्म। तस्य वृक्षस्य **अधस्तात्** एक: मूषक: बिलं **कृत्वा** वसति। स: मूषक: बिलात् **निसृत्य** सुप्तस्य सिंहस्य **पृष्ठमारुहय** तस्य केशान् कृतन्ति स्म। जागृत: सिंह मूषकं **हस्ते** गृहीत्वा अवदत्–कोऽसि? कथं मे **केशान्** कृतन्ति? अहं त्वां हनिष्यामि। मूषकोऽपिभीत: सन् न्यवेदयत्– अहं छुद्रमूषक: सन् अपि भवतां सहाय्यं कर्तुं प्रतिज्ञां करोमि।

एकदा सिंह बधिकै: पाशे निबद्ध:। स उच्चै: **अगर्जत्**। मूषक: सिंहमापन्न **ज्ञात्वा** तत्रैव प्राप्नोत्। स: तस्य जालं छित्वा तं पाश **मुक्तम्** अकरोत्। मुक्त: सिंह: मूषकेन सह मैत्रीं **विधाय** स्वच्छन्दं विचरति स्म।

अध्याय–20 वाक्यक्रम–संयोजनम्

1. 1. एकस्मिन् वृक्षे एक: काक: वसति।
2. एकदा स: रोटिकां आनयति।
3. लोमश: रोटिकां ग्रहीतुम् इच्छति।
4. काक: यावत् गायति रोटिका भूमौ पतति।
5. मूर्ख काक: स्वमूर्खताया: पश्चात्तापं करोति।

2. 1. कृषक: कुक्कुट–पालनं करोति।
2. कुक्कुटी नित्यम् एकं स्वर्णाण्डं ददति।
3. कृषक: अति लुब्ध: अस्ति।
4. स: सर्वाणि अण्डानि ग्रहीतुम् इच्छति।
5. स: तस्या: उदरं व्यदारयति।

3. 1. द्वे मित्रे सहैव गच्छतः।
2. ततः एकम् ऋक्षम् आगच्छति।
3. एकस्तु वृक्षारोहणं जानाति अन्यस्तु भूमौ एवं शेते।
4. ऋक्षेण किं परामृष्टम्?
5. सावहितो भवत कपटमित्रेभ्यः।

4. 1. व्याघ्रः बधिकस्य पञ्जरे पतति।
2. व्याघ्रः ब्राह्मणाय निवेदयति-मां मोचय।
3. सः विप्रं खादितुम् इच्छति।
4. तत्र एकः शृगालः आगच्छति।
5. व्याघ्रं पञ्जरे पुनः निक्षिप्य विप्रं रक्षति।

5. 1. एकः हृष्ट-पुष्टः हरिणः वने वसति।
2. शृगालः तस्य मांसभक्षितुम् इच्छति।
3. धूर्तः शृगालः मृगं शस्य-पूर्णं क्षेत्रं नयति।
4. काकः अपि तत्र आगच्छति।
5. लगुडेन गुल्मे स्थितः शृगालः मरति।

अध्याय–21 अपठित गद्यांश

1. 1. क्रोधः महान् शत्रुः।
2. क्रुद्धः जनः ज्येष्ठानां हितवचनानि अपि न शृणोति।
3. क्रोधे अगते मौनं धरणीयम्।
4. मौनेन मनः शान्तं भवति।
5. कोपात् सर्वदा आत्मानं रक्षेम।

2. 1. दीपावली पर्व।
2. दीपावल्यां रात्रौ महालक्ष्मी पूजनं क्रियते।
3. दीपावली महोत्सवे गृहाणि नव वधूरिव भासन्ते।
4. दीपावली पर्व प्रतिवर्ष कार्तिकामावस्यायां आयोज्यते।
5. प्रतिवर्ष कार्तिकामावस्यायां स्वगृहेषु दीपान् भारतीयाः प्रज्वालयन्ति।

3. 1. चतुर्थः पुरुषार्थः मोक्षः।
2. निर्वाणम्।
3. मोक्षः चतुर्थः पुरुषार्थः।
4. मोक्षोनाम त्रिविधि-दुखेभ्यः सर्वथा मुक्तिः।
5. मानवः मोक्षं प्राप्नोति-यदा सः रागं द्वेषं चातिक्रामति।

4. 1. पर्यटन उद्योग:।

2. प्रियजनै: सह कृतं पर्यटनम् आनन्दं ददाति।

3. पर्यटनेन भारतशासनं पर्याप्तं धनं लभते।

4. पर्यटन उद्योगं वर्धयितुं शासनं यत्नशीलमस्ति।

5. रोमांचकारि पर्यटनमस्ति।

5. 1. प्रदूषणसमस्या।

2. निरंतरं वर्धमानेन प्रदूषणेन मानवजाति: विविधै: रोगै: आक्रान्ता दृश्यते।

3. वैज्ञानिका: अस्या: प्रदूषण समस्याया: समाधाने दिवानिशं प्रयतन्ते।

4. पर्यावरणस्य रक्षणे अस्माकं रक्षणं भविष्यति।

5. स्थाने-स्थाने वृक्षा: रोपणीया कर्तव्यम्।

अध्याय–22 निबन्ध लेखनम्

1. विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव

अस्माकं विद्यालय: राजकीय: विद्यालय: अस्ति। अत्र पठनस्य तु श्रेष्ठां व्यवस्था अस्ति एव, युगपदेव क्रीडानामपि सुलभा व्यवस्था अस्ति। अतएव अस्माकं विद्यालयस्य सर्वाषां कक्षाणां परिणाम: शतप्रतिशतं भवति। क्रीडानां प्रतियोगितासु अपि अस्माकं विद्यालयस्य छात्रा: बहून पुरस्कारान् अलभन्त। अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव: परह्य: सम्पन्नो जात:। अस्माकं प्रदेशस्य राज्यपाल: मुख्यातिथि: आसीत्। यदैव मुख्यातिथि: द्वारं सम्प्राप्त: छात्रा: वाद्ययन्त्राणां ध्वनिना तस्य स्वागतमाचरन्। तत: स: मञ्चस्य सम्मुखे आसनं भूषितवान्।

2. वृक्षाणां महत्त्वम्

वृक्षा: भूमौ उद्‌भवन्ति। वृक्षा: अपि मनुष्य इव भुक्त्वा पीत्वा च जीवन्ति। मूलानि वृक्षाणां मुखानि भवन्ति। ते पादै: जलं पिबन्ति अतएव 'पादपा:' कथ्यन्ते। तेषां मूलानि भूमित: रसं गृहीत्वा सर्वेषु अवयवेषु नयन्ति, तेन ते प्रवर्धन्ते, पुष्पन्ति, फलन्ति। वृक्षा: अपि वर्षाशीतातपै: प्रभाविता भवन्ति। तेऽपि सुखानि दु:खानि च अनुभवन्ति। तेषु अपि प्राणा: भवन्ति, अतएव ते प्राणिन: इव जायन्ते, वर्धन्ते, पुष्पन्ति, फलन्ति, म्रियन्ते च। ते कदापि खगमृगजलचरनरा: इव न विचरन्ति अत: अचरा: कथ्यन्ते। बहूपकार कुर्वन्ति वृक्षा प्राणिनाम्। ते अशरणानां शरणम् बुभुक्षितानां भोजनम्, संतप्तानां समाश्रया:, श्रान्तानां विश्रामगृहाणि, सुखिनं सौख्योपकरणानि, अच्छत्रिणां छत्रम्, निरालम्बिनां आलम्बनम्, प्राणवायुभि: प्राणदातार:, वृष्टिकारका:, मृद्‌रक्षका: सुहृदश्च जगत:। वृक्षारोपणं वृक्षरक्षणं च अस्माकं रक्षायै परमावश्यकम्।

3. प्रभात काल:

प्रभात काल: अति मनोरम: भवति। भानूदयात् प्राक् उत्थाय प्रकोष्ठात् बहि: आगत्य प्रकृति प्रांगणे विचरणम् उत्तमा औषधि:। ये जना: सूर्योदयात् प्राक् उत्थाय भ्रमणार्थं गच्छन्ति ते अरुणोदयं प्रेक्ष्य परमानन्दम् अनुभवन्ति। रात्रौ: वृक्ष शाखासु निलीना: खगा: प्रात:काले कलरवं कुर्वन्ति। सूर्योदय समये आकाशपटले लालिमाया: साम्राज्यं भवति। प्रभातकाल: सर्वजीवान् स्व-स्व कार्येषु योजयति। प्रभाते शरीर: स्फूर्तिमान् भवति।

4. होलिकोत्सव:

भारतदेशे अनेके उत्सवा: भवन्ति। तेषु होलिकोत्सव: एक: प्रमुख: उत्सव: अस्ति। एष: हिन्दूनां प्रधानोत्सव: अस्ति। अयं फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां तिथौ मन्यते। प्रथमे दिवसे रात्रौ होलिकादाह: भवति। द्वितीये दिने जना: परस्परम् अबीरगुलालादीनि प्रक्षिपन्ति। अस्मिन् दिने गृहे गृहे विविधा: पाका: पच्यन्ते। पौराणिककथानुसारेण होलिका प्रह्लादम् आदाय अग्नौ अतिष्ठत्। ईश्वरेच्छया सा क्षणेन भस्मीसात् अभवत्। प्रह्लाद: तु सुरक्षित: एव अतिष्ठत्।

5.दीपावली

दीपावली हिन्दूनां प्रमुखः उत्सवः अस्ति। अयम् उत्सवः विशेषतया वैश्यानाम् उत्सवः अस्ति। दीपावल्याः उत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्यायां तिथौ भवति। जनाः पूर्वमेव स्वगृहाणि स्वच्छानि कुर्वन्ति। सर्वे स्वगृहेषु विविध्व्यञ्जनानि पचन्ति। रात्रौ लक्ष्म्याः गणेशस्य च पूजनं भवति। सर्वत्र दीपकानां पंक्त्यः अत्यधिकं शोभन्ते। अस्मिन् दिने श्रीरामः रावणं हत्वा अयोध्याम् आगच्छत्। श्रीरामस्य स्वागतार्थं सर्वैः अयोध्यावासिभिः दीपाः प्रज्ज्वलिताः। एवम् अयं प्रकाशस्य सुखस्य वा उत्सवः अस्ति ।

अध्याय–23 सड़क सुरक्षा

1. **सडक-सुरक्षार्थं किं करणीयम् लिखत। सड़क सुरक्षा के लिए क्या करना चाहिए, लिखिए।**

उत्तरम्— राजमार्ग-सुरक्षार्थम् अस्माभिः सडक-सुरक्षा- नियमानां ज्ञानं प्राप्तव्यम्। राजमार्गम् उभयतः स्थापितानां यातायात-सङ्केतानाम् अभिज्ञानमपि करणीयम्। अल्पायुसि एव वाहन न चालयेत्। वाहन-सञ्चालन काले उच्च-स्वरेण सङ्गीत वर्जयेत्। मार्गे ध्यानं सर्वतः आकृष्य मार्गागतानि वस्तूनि एव न पश्येत्। नैतस्मिन् काले धूम्रपानं कुर्यान्न च चलदूरभाषे केनापि सह वार्तालापं कुर्यात्। सहयात्रिभिः सार्धमपि न संवदेत्।

2. **मार्गे दुर्घटनायाः कारणानि लिखत।**

उत्तरम्— सामान्यतः जनाः यातायात-नियमेभ्यः अनभिज्ञाः भवानि। विज्ञाः अपि यातायात सङ्केतान् न पश्यन्ति। बहवः तु उपेक्षन्ते। जनाः भूमिगतपदाति मार्गस्योपयोगमपि न कुर्वन्ति। निषेधेऽपि निषेध मार्गं प्रविशन्ति। वाहन चालकः समीपस्थैः जनैः सह, चल दूरभाषे च दत्तचित्ताः सन्तः वार्तालापं कुर्वन्ति। केचन तु उपहास-निमग्नाः परिवर्त्य पृष्ठ भागे पश्यन्ति सहयात्रिणः।

3. **सड़क सुरक्षा नियम-शिक्षणाय सरलतमा का व्यवस्था भवेत् ?**

उत्तरम्— गृहे परिजनैः विद्यालये च शिक्षकैः छात्राः एतद्विषये प्रशिक्षणीया। प्रार्थना-सभायां समये-समये सडक सुरक्षा नियमानां ज्ञानं प्रदेयम्। भूगोलविषयाध्ययन काले विषयाध्यापकेन यथावसरं यातायात-सङ्केतानां मानचित्राध्ययनस्य परिचयः प्रदेयः। विद्यालये एतद्विषयक प्रश्न-पृच्छा-स्पर्धा अपि आयोज्या। वृत्तपत्रेषु सडक दुर्घटनायाः समाचारं श्रावयित्वा तं प्रति सावहितं कुर्यात् तेभ्यः च मार्ग-सञ्चरण नियम-ज्ञानपि पुनः-पुनः प्रदेयम्। एकस्मिन् सत्रे वारद्वयं सडक-सुरक्षा-नियमान् आधृत्य संवाद, वाद-विवाद, भाषणादीनां स्पर्धानामप्यायोजनं कुर्यात् विजेतारश्च पुरस्करणीयाः।

4. **जन-सम्मर्दाकीर्णे मार्गे वाहन-चालकेन किं करणीयम्?**

उत्तरम्— सुसञ्चालनं विधाय वाहन चालकः दुर्घटनां परिहर्तुं शक्नोति। अतः सुसञ्चालकः जनसम्मर्दाकीर्णमार्गे वाहनं कदापि तीव्र गत्या न चालयेत। वाहनस्यगतिः निर्धारिता निर्दिष्टा नियन्त्रिता च भवेत्। अपर्याप्तमपि मार्गं प्राप्य अग्रगमनस्य प्रयत्नं न कुर्यात्। द्रुत गमनमपि सदैव वर्जनीयम्। आगते गत्यावरोधके वाहनस्य गतिरपि अवरोधनीया। निर्दिष्टं मार्गमेवानुसरेत्।

5. **अधोदत्त यातायात-सङ्केतानां अभिप्रायमपि लिखत।** (नीचे दिये हुए यातायात के चिह्नों का अभिप्राय बताइये।)

उत्तरम्— (i) सङ्केतोऽयं सन्दशकावर्त (U-TURN) इति कथ्यते यन्निर्दिशति यदत्र व्यावर्तन निषिद्धम्।

(ii) सङ्केतोऽयं निर्दिशति यदत्र प्रवेश: निषिद्ध: अत: नात्र गन्तव्यम्।

(iii) ओवरटेक–निषेधकं चिह्नमुपदिशति यत्र अग्रगमन- प्रयत्नं निषिद्धम्।

6. यदा चालकः सड़क–सुरक्षा नियमान् न पालयति तदा किं करणीयम्?

उत्तरम्— यदा वाहन–चालक: सडक–सुरक्षा–नियमान् न पालयति तदा छात्रै: स: निरोधनीय, बोधनीय: विरोधनीय:। एषा उपेक्षा भावना च अवरोधनीया। तस्यायनुचित–व्यवहारस्य परिवाद: विद्यालयस्याधिकारिणां समक्षे निवेदनीय:। अधिकारिभि: असौ सम्यक् निर्देष्टव्य:। यद्यसौ पुनरपि करोति तदा परिवर्तनीय: अन्यथा आरक्षि- स्थाने परिवाद: प्रस्तोतव्य: स: यातायात- नियमानवगन्तु चं आदिष्टव्य:। छात्रै: शिक्षकै: अधिकारिभिश्चासौ उपेक्षणीय:।

7. सड़क–सुरक्षार्थं बालकैः किं न करणीयम्?

उत्तरम्— केचन छात्रा: बालका: व अल्पायुसि एव वाहन- चालनाय अत्युत्सुका: भवन्ति। ते वाहन- चालनेऽनभिज्ञा अल्पज्ञा: वा सन्तोऽपि वाहनं नीत्वा राजमार्गे आगच्छन्ति। वाहन–चालनस्य प्रयत्न कुर्वन्ति एवं दुर्घटना सम्भवति अतोऽल्पायुसि बालकै: वाहन–चालन कार्यं न कुर्यात्। षोडशदेश वर्षीया बालका: गियर (गतिपरिवर्तक) युक्त वाहनं न चालयेयु:। प्रशिक्षिता: अपि केचन बालका: आत्मविश्वासस्य अभावे असावधानतया दुर्घटनां विदधति। अत: आत्मविश्वास न त्यजेत् परञ्च वाहने चलदूरभाषै सङ्गीतं चापि न श्रणुयु सहयात्रिणा सह वार्तालापमपि न कुर्यु:।

8. राजमार्ग सुरक्षायाः सामान्य नियमान् लिखत?

उत्तरम्— राजमार्गस्य वामपार्श्वे एव चलेत्। व्यावर्तने: चतुष्पथे, पदातिमार्गे, गत्यावरोधके च वाहनं शनै: शनै: चालयेत। उभयत: संलग्नयो: आदर्शयो: मार्गस्थितिं विचरन्तश्च जनान् पश्येत्। व्यावर्तने हस्त–सङ्केत कुर्यात्। द्विचक्रवाहन चालकेन शिरस्त्राणम् (हैलमेट) अवश्यनेन धारणीयम्। यातायात संकेतान् अवलोक्य अभिज्ञाय, तेषाम् अभिप्राय प्रयोजनं वा ज्ञात्वा अनुपालयेत् राजमार्गविभाजिका पीत रेखा नोल्लङ्घनीया। वाहनोऽकस्मात् नावरोधनीय। पश्चगमने आदर्शयो स्थितिं जन–सम्मर्द च पश्येत सावहित: सन् चालयेत्।

9. प्रवेश–निषेध मार्गे गते का हानिर्भवति?

उत्तरम्— 'प्रवेश निषेध' मार्गं न प्रविशेत्। यदि प्रविशति तदा किमपि दुर्घटितुं शक्यते। स्वस्यापरस्य व हानिर्भवितुं शक्नोति। तत्र नियुक्त: राज–पुरुष: निरोद्धं शक्नोति, वाहनस्य चालनं विधाय परिवादमपि आरब्धुं शक्नोति। अनेन आर्थिकहानि: तु भविष्यति एव मानसिक अशान्ति: अपि वर्धिष्यते। न्यायालय: दण्डयितु शक्नोति। अवमानना वाहनस्य क्षति: सम्भवति वाहनमपि निरोद्धुं शक्यते। अत: प्रवेश निषेध मार्गे प्रविष्टेतु अपाय एव सम्भवति।

10. राजमार्ग–सङ्केता कतिधा भवन्ति? लिखत।

उत्तरम्— राजमार्ग सङ्केता: मुख्यत: चतुर्धा: भवन्ति। एतेषु प्रवेश–निषेधादय: पञ्चत्रिंशत सङ्केता: अनिवार्या: भवन्ति एते वृत्ताकारेऽङ्किता: भवन्ति। सचेतका: सङ्केता: त्रिकोणात्मका: अङ्किता: भवन्ति, एते व्यावर्तनादिबोधका: चत्वारिंशत् भवन्ति। सूचना चिह्नाणि विद्यमानता बोधकानि पञ्चदश संख्यकानि भवन्ति। चतुर्थ–विद्या दश सङ्केता: यातायात–कर्मकरस्य हस्ताभ्यां सङ्केतिता: भवन्ति। चतुष्पथे पुलिस कर्मकार: स्व हस्तयो: मार्गं, व्यावर्तक मार्गस्य रिक्ततां व्यस्ततां च दर्शयति।

●●

संस्कृत व्याकरण-7

अध्याय-1 वर्ण विचारः

(क) 1. (द) वर्णमाला 2. (अ) पञ्च 3. (अ) 25 4. (द) च् 5. (अ) अष्ट

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. त्रयोदश 2. स्वराणां 3. अर्द्ध 4. 48 5. पदस्य

(घ) 1. येषां वर्णानाम् उच्चारणं स्वतन्त्ररूपेण भवति ते स्वरः कथ्यते।

2. अयोगवाहा चत्वारः भेदा सन्ति।

3. ऊष्मवर्णाः श्, ष्, स्, ह् सन्ति।

4. (i) प (ii) नु (iii) हे (iv) धू (v) झो (vi) बो

5. (i) श् + ए (ii) प् + इ (iii) ह् + अ (iv) घ् + आ (v) स् + ई (vi) त् + उ

6. (i) द्य (ii) द्व (iii) ध्य (iv) ज्ञ (v) त्र (vi) क्ष

7. अ, इ, उ, ऋ, लृ

8. क्, ख्, ग्, घ्, ङ् च्, छ्, ज्, झ्, ञ् त्, थ्, द्, ध्, न्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् प्, फ्, ब्, भ्, म्

9. (i) च् + अ + ण् + अ + क् + अ + : (ii) स् + ऊ + च् + इ + क् + आ
(iii) ह् + अ + र् + इ + ण + इ (iv) ज् + अ + न् + अ + न् + ई
(v) व् + इ + ड् + आ + ल् + अ (vi) अ + ज् + अ + य् + अ + :

10. (i) छात्रः (ii) कपोतः (iii) भोजनम् (iv) कन्या (v) मुखम् (vi) पुष्पा

11.

ह्रस्व स्वर	–	अ, इ, उ, ऋ, लृ	दीर्घ स्वर	–	आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ
त वर्ग	–	त्, थ्, द्, ध्, न्	प वर्ग	–	प्, फ्, ब्, भ्, म्
संयुक्त स्वर	–	त्र्	क वर्ग	–	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
अंतःस्थ व्यंजन	–	य्, र्, ल्, व्	ऊष्म व्यंजन	–	श्, ष्, स्, ह
च वर्ग	–	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	ट वर्ग	–	ट्, ठ, ड्, ढ्, ण्
अयोगवाह	–	अं, अः			

●●

अध्याय-2 वर्णोच्चारण स्थानानि

(क) 1. (द) कण्ठः 2. (ब) दन्तोष्ठौ 3. (अ) तालु 4. (ब) दन्ताः 5. (स) जिह्वामूल

(ख) 1. ओष्ठ 2. कण्ठोष्ठ 3. दन्त 4. अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

5. इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) (i)– (घ) (ii) – (ख) (iii) – (ग) (iv) – (ङ) (v) – (य) (vi) – (क)

(ङ) 1. न् 2. मूर्धन्य 3. ऋ 4. स् 5. म् 6. ऐ
7. अ 8. इ 9. तालु 10. ओष्ठ

अध्याय–3 पद परिचय

1. रम्, दिव्, शीङ्, भूः, पठ्, हस्
2. सरलः, सुन्दरी, पवित्रम्, योग्यः, निपुणः, हार्दिकः
3. राम, लता, गो, कृष्ण।
4. जगन्ति, भाषते, पीडयन्ति, भवन्ति।
5. अधः, उपरि, अव, प्र, कृ, नी, शी, आ, वि।
6. रामाः, देवाः।
7. च् + अ + र् + अ + ण् + अ। प् + अ + द् + अ। व् + अ + द्।
व् + अ + द् + आ + म् + अ + : ह् + अ + स्। ह् + अ + स् + अ + न् + त् + इ।
8. भवति, हसति, गच्छति।

अध्याय–4 सन्धि प्रकरणम्

(क) 1. (स) भानु + उदयः 2. (द) प्रति + एकम् 3. (स) अयादि
4. दीर्घः 5. (ब) अतीव

(ख) 1. स्वच्छं 2. अतीव 3. देव + ऋषि 4. तद् + एव 5. देव + आलये

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) (i)– (ङ) (ii) – (ग) (iii) – (घ) (iv) – (ख) (v) – (क)

(ङ) **1.** (i) वर्षर्तुः (ii) मात्रार्थम् (iii) वृद्धोपसेविनः
2. (i) वधु + उत्सवे (ii) गण + ईशः (iii) द्वा + एव
3. (i) गृह + आदीनम् (स्वर संधि) (ii) तव + आगमने (स्वर संधि) (iii) कदा + अपि (स्वर संधि)
(iv) स + आनन्दम् (स्वर संधि)
4. (i) साहित्यादयः (स्वर संधि) (ii) अन्नाभावे (स्वर संधि) (iii) परिश्रमेणर्जितम् (स्वर संधि)
(iv) सत्यंवद (व्यंजन संधि)

अध्याय–5 शब्द रूप प्रकरणम्

(क) 1. (अ) सप्तमी 2. (ब) तृतीया 3. (स) सप्तमी 4. (द) सप्तमी 5. (अ) तृतीया
6. (अ) भवतः 7. (ब) भवतीभिः 8. (द) एताभ्याम् 9. (अ) कस्मात् 10. (अ) अस्मत्

11. (अ) 18 12. (ब) 22 13. (ब) षडशीतिः 14. (स) सप्तषष्टिः 15. (अ) 58

16. (ब) विकसिष्यथ 17. (अ) कर्षावः 18. (द) अगायन् 19. (स) नृत्याम 20. (ब) आरोहयेत्

(ख) (i) (i)– (घ) (ii) – (ङ) (iii) – (क) (iv) – (ख) (v) – (ग)

(ii) (i)– (ङ) (ii) – (घ) (iii) – (ग) (iv) – (ख) (v) – (क)

(iii) (i)– (ङ) (ii) – (घ) (iii) – (ग) (iv) – (ख) (v) – (क)

(iv) (i)– (ङ) (ii) – (घ) (iii) – (ग) (iv) – (ख) (v) – (क)

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓

7. ✗ 8. ✗ 9. ✓ 10. ✓ 11. ✓ 12. ✓

13. ✗ 14. ✓ 15. ✗ 16. ✓ 17. ✓ 18. ✗

19. ✗ 20. ✓

(घ) 1. 1. महाभारत 2. अमरतायाः 3. मित्रम् 4. नेत्राभ्यां 5. सागरं

2. 1. आवां 2. यूयम् 3. अहम् 4. सा 5. ते

3. 1. षड् 2. तृतीयेन 3. पञ्चदश 4. सप्तविंशति 5. द्वादशः

(ङ) 1. (i) आदिकवेः (ii) मात्रा 2. (i) ऋषयः (ii) कर्णपथे 3. (i) वने (ii) भयकारेण

4. (i) पोषणाय (ii) चरणे 5. (i) ऋषिणा (ii) नद्याः 6. (i) वैद्येण (ii) योग शिक्षिकया

7. (i) आसना (ii) मातृभूमेः 8. (i) अनेकम् (ii) लक्ष्यात् 9. (i) अनादिकालात् (ii) अनुसारेण

10. (i) सज्जनः (ii) पुत्रस्य 11. (i) सर्वस्य (ii) ते 12. (i) भवत्योः (ii) यो

13. (i) एषाम् (ii) एतया 14. (i) भवद्भ्याम् (ii) कस्मात् 15. (i) सर्वाभ्याम् (ii) कैः

16. (i) तुभ्यम्, ते (ii) एतासु 17. (i) सर्वम् (ii) कासु 18. (i) अस्मिन् (ii) ये

19. (i) इमानि (ii) तयोः 20. (i) माम्, मा (ii) एतासाम्

21. (क) सप्तत्रिंशी छात्रा (ख) चत्वारिंशी छात्रा

22. (क) त्रिंशम् पत्र (ख) अष्टात्रिंशम् पत्र

23. (क) षडविंशः वानरः (ख) चतुस्त्रिंशः वानरः

24. (क) सप्तविंशी उत्तरपुस्तिका (ख) अष्टाचत्वारिंशी उत्तरपुस्तिका

25. (क) एकत्रिंशः गजः (ख) पंचत्रिंशः गजः

26. (क) षट्त्रिंशी चटका (ख) द्वाचत्वारिंशी चटका

27. (क) पंचविंशी लता (ख) षट्चत्वारिंशी लता

28. (क) सप्तचत्वारिंशः दिवसः (ख) पञ्चाशः दिवसः

29. (क) नवत्रिंशम् उद्यान (ख) एकचत्वारिंशम् उद्यान

30. पञ्चचत्वरिंशत्तम गृहः (ख) पंचत्रिंशत्तम् गृहः

31. (i) भवत (ii) पठामि 32. (i) आस्ताम् (ii) तुदेयुः 33. (i) कथयिष्यामः (ii) वसतु

34. (i) पश्यसि (ii) अमिलाम् 35. (i) पतताम् (ii) स्प्रक्ष्यसि 36. (i) गच्छेव (ii) चिन्तयथः

37. (i) अयच्छाव (ii) वहन्तु 38. (i) गमिष्यथः (ii) सेवध्वे 39. (i) अवदम् (ii) श्रृणोतु

40. (i) कुर्याम् (ii) नयन्ति।

अध्याय-6 उपसर्ग प्रकरणम्

(क) 1. (अ) समागत्य	2. (द) निरगच्छत्	3. (स) परिश्रमः	4. (अ) उपसृत्य	5. (अ) प्रविशति
(ख) 1. — (iv)	2. — (i)	3. — (v)	4. — (ii)	5. — (iii)
(ग) 1. ✗	2. ✓	3. ✓	4. ✗	5. ✗
(घ) 1. प्र	2. सम् + आङ्	3. परि	4. निद्	5. उप

(ङ) 1. (i) प्र (ii) आ 2. (i) प्रति (ii) वि 3. (i) परि (ii) सु
4. (i) सम् + आङ् (ii) निर् 5. (i) उप (ii) अव 6. (i) दुर्लभः (ii) दुस्तरः
7. (i) विहरति (ii) निपतति 8. (i) निमज्जति (ii) अधिगच्छति 9. (i) अत्यादरः (ii) अपिनाम
10. (i) सुजनः (ii) प्रतिकरोति।

अध्याय-7 विशेषण प्रकरणम्

(क) 1. (अ) सर्वेषां	2. (अ) पटुतरः	3. (द) एकस्मिन्	4. (स) एका	5. (स) बहवः
(ख) 1. — (iii)	2. — (iv)	3. — (v)	4. — (ii)	5. — (i)
(ग) 1. प्रिय	2. प्रमुदिता	3. पुण्यमासः	4. कश्चित्	5. मधुरं
(ग) 1. ✓	2. ✗	3. ✗	4. ✓	5. ✓

(ङ)

1. विशेषण दस प्रकार के होते हैं।
2. **विशेष्य**—जिस पद या शब्द की विशेषता बताई जाती है, वह विशेष्य पद होता है।
   उदाहरण—सुन्दरः बालकः। शोभने पुस्तके।
3. **निश्चित संख्यावाचक विशेषण**—'एक' शब्द का अर्थ संख्यावाचक एक होकर इसका रूप केवल एकवचन में होता है। अन्य अर्थों में इसके रूप तीनों वचनों में होते हैं।
4. **अजहल्लिङ्ग विशेषण**—ऐसे विशेषण जो विशेष्य का अनुसरण नहीं करते उन्हें अजहल्लिङ्ग विशेषण कहा जाता है। जैसे—वेदाः प्रमाणम्। अग्निः पवित्रं स मां पुनातु। दुहिताश्च कृपणं परम्। आपः पवित्रं परं पृथिव्याम्।
5 **सर्वनाम विशेषण**—एतद्, तद्, यद्, किम् तथा अनिश्चयवाचक और निश्चयवाचक सर्वनाम सभी का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। जैसे—बहवः वैदेशिकाः। एकस्मिन् ग्रामे। अनेन कारणेन। एषा बालिका।
6. **विभागबोधक विशेषण**—'हर एक' या 'सब' आदि शब्दों से विभाग का बोध होता है, ऐसे शब्दों का संस्कृत अनुवाद 'सर्व' या 'सकल' आदि शब्दों द्वारा किया जाता है जैसे—अस्याः वाटिकायाः सर्वाणि आम्राणि मिष्ठानि सन्ति।
7. **अजहल्लिङ्ग विशेषण**—ऐसे विशेषण जो विशेष्य का अनुसरण नहीं करते उन्हें अजहल्लिङ्ग विशेषण कहा जाता है। जैसे—वेदाः प्रमाणम्। अग्निः पवित्रं स मां पुनातु। दुहिताश्च कृपणं परम्। आपः पवित्रं परं पृथिव्याम्।
8. **विशेषण**—जिस शब्द से संज्ञा पद अथवा सर्वनाम पद की विशेषता प्रकट होती है, वह शब्द विशेषण कहलाता है।
   विशेष्य—जिस पद या शब्द की विशेषता बताई जाती है, वह विशेष्य पद होता है।
   उदाहरण—सुन्दरः बालकः। शोभने पुस्तके।

यहाँ बालक की विशेषता है सुन्दर। पुस्तक की विशेषता है शोभन। अतः बालकः, पुस्तके शब्द विशेष्य शब्द हैं तथा सुन्दरः और शोभने पद विशेषण हैं।

9. विशेषण विशेष्य पद के गुणानुसार होता है। कहा गया है–

यल्लिंङ्ग यद्वचनं या च विभक्तिः विशेष्यस्य।

तल्लिङ्ग तद्वचनं सा च विभक्तिः विशेषणस्य॥

अर्थात् जो लिंग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है, वही लिंग, वही वचन और वही विभक्ति विशेषण की होती है।

10. **विशेषण** – सुन्दरः, शौभनौ, महान्, लघु, श्रेष्ठतमः, लघु
विशेष्य – बालकः, ग्रन्थौ, ग्रन्थः, कायः, पुरुषः, काव्यम्।

अध्याय–8 प्रत्यय प्रकरणम्

(क) 1. (ब) ल्यप्	2 (अ) तुमुन्	3. (अ) तुमुन्	4 (ब) अनीयर्	5 (स) क्तवतु
(ख) 1. — (v)	2. — (iii)	3. — (iv)	4. — (ii)	5. — (i)
(ग) 1. पीत्वा	2 पटुतरः	3. आगत्य	4 श्रेष्ठतमः	5. पीत्वा
(ग) 1. ✓	2. ✗	3. ✓	4. ✗	5. ✓

(ङ) 1. **प्रत्यय के दो भेद होते हैं**– (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।

2. **कृत् प्रत्यय**–धातु (क्रिया) के साथ विभिन्न अर्थों का ज्ञान कराने वाले जिन प्रत्ययों को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय तथा क्रियापद का निर्माण किया जाता है, वे प्रत्यय 'कृत् प्रत्यय' कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय को प्रमुखतः तीन विभागों में बाँटा गया है–(i) क्त्वा प्रत्यय (ii) ल्यप् प्रत्यय (iii) तुमुन् प्रत्यय।

3 **तद्धित प्रत्यय (तरप् एवं तमप्)**–संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में जोड़े जाने वाले प्रत्यय 'तद्धित' प्रत्यय कहे जाते हैं। तद्धित प्रत्ययों में 'तरप्' आदि प्रत्यय आते हैं।

4.	(i) आ + गम् + तुमुन्	(ii) घोर + तमप्।
5.	(i) त्यज् + तुमुन्	(ii) नि + यम् + तुमुन्।
6.	(i) दृश् + तुमुन्	(ii) मृ + क्त।
7.	(i) स्था + णिच् + तुमुन्	(ii) प्र + आप् + क्तवतु।
8.	(i) कथ् + क्तवतु	(ii) स्था + णिच् + क्त्वा
9.	(i) मृ + णिच् + क्त्वा	(ii) ताड् + क्त्वतु
10.	(i) कृ + तुमुन्	(ii) निकृष्ट + तरप्।

अध्याय–9 कारक प्रकरणम्

(क) 1. (अ) प्रथमा	2. (स) द्वितीया	3. (स) तृतीया	4 (अ) सप्त	5. (द) षष्ठी
(ख) 1. — (v)	2. — (iv)	3. — (i)	4. — (ii)	5. — (iii)

(ग)	1. ✓	2. ✗	3. ✓	4. ✗	5. ✓
(घ)	1. बालकाय	2. बैकुण्ठम्	3. पुत्रे	4. रामेण	5. शिवाय

(ङ) 1. करण में तृतीया विभक्ति । 2. संप्रदान में चतुर्थी विभक्ति।
3. संबंध में षष्ठी विभक्ति। 4. करण में तृतीया विभक्ति।
5. संप्रदान में चतुर्थी विभक्ति। 6. 'सह' के योग में तृतीय विभक्ति।
7. करण में तृतीया विभक्ति। 8. 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति।
9. 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति। 10. संबंध में षष्ठी विभक्ति।

अध्याय–10 अव्यय प्रकरणम्

(क)	1. (द) एकदा	2. (ब) सहसा	3. (स) अत्रैव	4. (अ) अत्रैव	5. (स) अद्य
(ख)	1. चिरम्	2. एव	3. विना	4. नीचै	5. आम्
(ग)	1. — (v)	2. — (iv)	3. — (i)	4. — (ii)	5. — (iii)
(ग)	1. ✗	2. ✓	3. ✓	4. ✓	5. ✗

(ङ) 1. (i) एव (ही) सः एव मम मित्रम्।
(ii) सम्प्रति (इस समय) सम्प्रति सा अत्र नास्ति।
2. (i) एकदा (एक बार) सः एकदा उपवनम् अगच्छत्।
(ii) एवम् (इस प्रकार) एवं पाठं पठ।
3. (i) अत्रैव (यहाँ ही) अहम् अत्रैव वत्स्यामि।
(ii) तत्रैव (वहाँ ही) सः तत्रैव क्रीडिष्यति।
4. (i) यावत् (जब तक) यावत् सः पठिष्यति तावदहं क्रीडिष्यामि।
(ii) तावत् (तब तक) तावत् सः क्रीडिष्यति तावदहं पठिष्यामि।
5. (i) प्रति (की ओर) गृहं प्रति गच्छ।
(ii) प्रायः (अक्सर) सः प्रायः तत्र गच्छति।
6. (i) सर्वदा (हमेशा) सर्वदा परिश्रमं कुरु।
(ii) इह (यहाँ) इह एकः मन्दिरः आसीत्।
7. (i) तथैव (उसी तरह) यथा निर्दिष्टः तथैव करिष्यामि।
(ii) कदा (कब) बालकः कदा गमिष्यति?
8. (i) अधुना (इस समय) अधुना अत्र मेला आयोज्यते।
(ii) इति (इस प्रकार) सः 'लौहपुरुषः' इति कथ्यते।
9. (i) अद्यापि (आज भी) अत्र अद्यापि उत्सवो भवति।
(ii) अस्तु (ठीक है) अस्तु पुस्तकं पठ।
10. (i) न (नहीं) अहं तत्र न गमिष्यामि।
(ii) अलम् (बस, मत) अलम् विवादेन।

अध्याय–11 समास प्रकरणम्

(क)	1. (ब) दशपात्रम्	2. (अ) पीताम्बरम्	3. (अ) बहुव्रीहिः	4. (द) प्राप्तोदकः	5. (अ) कर्मधारयः
(ख)	1. — (iii)	2. — (v)	3. — (iv)	4. — (ii)	5. — (i)
(ग)	1. पीताम्बरः	2. चतुर्युगम्	3. कृष्णः	4. महान्	5. विग्रहम्।
(घ)	1. ✓	2. ✗	3. ✗	4. ✓	5. ✓

(ङ) 1. यदा अनेकपदानि मिलित्वा एकपदं जायन्ते तदा सः समासः इति कथ्यते।

2. यदि तत्पुरुष समासस्य द्वयोः पदयोः एक विभक्तिः अर्थात् समान विभक्तिः भवति तदा सः समानाधिकरणः तत्पुरुष समासः कथ्यते। अयमेव समासः कर्मधारयः इति नाम्ना ज्ञायते। अस्मिन् समासे साधारणतया पूर्वपदं विशेषणम् उत्तरपदं विशेष्य भवति।

3. 'संख्यापूर्वो द्विगु' इति पाणिनीय सूत्रानुसारं यदा कर्मधारय समासस्य पूर्वपदं संख्यावाची उत्तरपदस्य संज्ञावाची भवति तदा सः 'द्विगुसमासः' कथ्यते।

4. (i) घन इव श्यामः (बहुव्रीहि समास) (ii) चक्रं पाणौ यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

5. (i) उपकृष्णम् (अव्ययीभाव समास) (ii) सप्तर्षि (द्विगु समास)

6. (i) गुरुः एव देवः (कर्मधारय समास) (ii) त्रयाणां भुवनानां समाहारः (द्विगु समास)

7. (i) कुपुरुषः (तत्पुरुष समास) (ii) द्विरात्रम् (द्विगु समास)

8. (i) यथाशक्तिः (अव्ययीभाव समास) (ii) सुखदुखौ (द्वन्द्व समास)

9. (i) पीतं च तद् अम्बरम् (कर्मधारय समास) (ii) धर्मेणहीनः (पंचमी तत्पुरुष समास)

10. (i) देवपुत्रः (षष्ठी तत्पुरुष समास) (ii) पुत्रपौत्रा (द्वन्द्व समास)

अध्याय–12 पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

(क)	1. (स) कानने	2. (अ) क्रौञ्च विहगम्	3. (द) शिक्षिका	4. (ब) अपयशः	5. (अ) हिंसा
(ख)	1. — (iii)	2. — (iv)	3. — (v)	4. — (ii)	5. — (i)
(ग)	1. अम्बा	2. अध्यापकानाम्	3. नरेशं	4. वारिम्	5. उपवनं
(घ)	1. ✓	2. ✗	3. ✓	4. ✓	5. ✗

(ङ) 1. (i) वृक्षः—द्रुमः, विटपः, तरुः। (ii) दुग्धम्—पयः, गोरसः, क्षीरं।

2. (i) पुत्रः— सुतः, तनयः, आत्मजः। (ii) माता— जननी, जन्मदात्री, प्रसू।

3. (i) चन्द्रमाः—चन्द्रः, इन्द्रः, निशाकरः। (ii) पर्वतः—गिरि, महीधरः, अचलः।

4. (i) नृपः—भूपतिः, अधिपतिः, नरेशः। (ii) रात्रि—निशा, यामिनी, रजनी।

5. (i) पत्नी—भार्या, दारः, प्रियतमा। (ii) लक्ष्मी—श्रीः, कमला, विष्णुप्रिया।

6. अधिकः— न्यूनः। हिंसा— अहिंसा। अनुरागः—विरागः।

7. सुकरः— दुष्करः। निर्मलम्—मलिनम्। सत्यम्—असत्यम्।

8. इष्टः—अनिष्टः। उत्कर्षः— अपकर्षः। मानम् — अपमानम्।

9. प्राप्य—लब्ध्वा। कुशला—दक्षा, हर्षस्य—प्रसन्नतायाः।

10. वैद्यम्—चिकित्सकम्। देवालये—मन्दिरे। वने—कानने।

अध्याय–13 अशुद्धि संशोधन

1. (क) रामात् श्यामः चतुरतरः। (ख) सा स्त्री कलावती विद्यते।
2. (क) सूर्ये अस्तंगते स आगतः। (ख) अस्माकं राष्ट्र बलवत् विद्यते।
3. (क) तं विना अहं किं करोमि? (ख) ततः राज्ञा उक्तम्।
4. (क) रामात् श्यामः लघुतरः विद्यते। (ख) तत्र अनेके नेतार सन्ति।
5. (क) छात्रेषु गोपालः बुद्धिमत्तमः। (ख) वृक्षेक्ष्य पत्राणि पतन्ति।
6. (क) उपाध्यायाद् व्याकरणं पठति। (ख) भोजनाद् अनन्तरं शतपदं गच्छेत्।
7. (क) तिलेभ्यो माषान् प्रतियच्छति। (ख) क्रोशं कुटिला नदी।
8. (क) ग्रामं परितो वनम् अस्ति। (ख) बालकः आसन्दिकाम् अधितिष्ठति।
9. (क) ग्रामम् अजां नयति। (ख) मरणात् कस्य भयं नास्ति।
10. (क) ग्रामस्य दक्षिणतः विद्यालयोऽस्ति। (ख) कामात् क्रोधोऽभिजायते।

अध्याय–14 वाच्यपरिवर्तनम् (लट् लकार)

1. (i) छात्रेण पुरस्कारः गृह्णाति। (ii) छायाकारः छायाचित्रं रच्यते। (iii) मया लेखः लिख्यते।
2. (i) वृक्षैः फलानि दीयन्ते। (ii) छात्रैः गुरवः नम्यन्ते। (iii) पापिनां पापं क्रियते।
3. (i) विद्यया विनयः दीयते। (ii) मया पिता सेव्यते। (iii) त्वया अहं पृच्छ्ये।
4. (i) नृपेण शत्रुः हन्यते। (ii) सर्पैः पवनः पीयते। (iii) वृद्धेन वेदाः पठ्यन्ते।
5. (i) त्वं कथां श्रणोमि। (ii) अहं मोहः त्यज्यते। (iii) रामः जनकं प्रणमति।
6. महेशः — दिनेशः प्रातःकाले **भवान्** किं करोति?
   दिनेशः — मया **पाठः** स्मर्यते।
   महेशः — किं भवान् प्रातः भ्रमणाय गच्छति?
   दिनेशः — अहम् अस्वस्थः, अतः **मया** भ्रमणाय न गम्यते।
   महेशः — किं भवान् नित्यं **व्यायामं** करोति?
   दिनेशः — आम्! मया नित्यं व्यायामः **क्रियते**।
7. सीता — बालिका कां खादति?
   गीता — तया रोटिका **खाद्यते**।
   सीता — त्वं कि पठसि?

गीता — **मया** गीता पठ्यते।
सीता — त्वं कानि **खाद्यन्ते**।

8. देवदत्त — ब्रह्मदत्त! किं त्वं पत्रालयं गच्छसि?
ब्रह्मदत्त — न, मया तु इदानीं पत्र **लिख्यते।**
देवदत्त — अधुना त्वं निबन्धम् अपि **लिखसि** किम्?
ब्रह्मदत्त — मया तु अधुना गणितस्य अभ्यासः **क्रियते**।
देवदत्त — अहं तु पत्रालयमेव **गच्छामि**।
ब्रह्मदत्त — गच्छ त्वम् । मया तु अत्रैव **स्थीयते**।

अध्याय–15 अनुवाद प्रकरणम्

(क) (1) मोहनः धावति। (2) बालक पठति। (3) राधा भोजनं पचति।
(4) छात्रः पश्यति। (5) श्रृगालः आगच्छति। (6) सः प्रश्नं पृच्छति।
(7) वानरः फलं भक्षयति। (8) शिशू पठतः। (9) ते धावन्ति।
(10) बालकाः चित्रं पश्यन्ति।

(ख) (1) त्वं पाठ स्मरसि। (2) त्वं किं पश्यसि? (3) त्वं कदा गच्छसि?
(4) युवां चित्रं यच्छथः। (5) युवां पत्रं लिखथः। (6) यूयं अत्र आगच्छथ।
(7) यूयं प्रातः धावथ। (8) युवां फलं भक्षयथः। (9) त्वम् अत्र आगच्छसि।
(10) यूयं कुत्र गच्छथ।

(ग) (1) अहं दुग्धं पिबामि। (2) आवां कुत्र गच्छावः? (3) वयं कथां कथयामः।
(4) अहं मयूरं पश्यामि। (5) आवां जलं पिबावः। (6) वयं क्रीडाक्षेत्रं गच्छामः।
(7) अहं किं भक्षयामि? (8) आवां किं पचावः। (9) वयं प्रश्नं पृच्छामः।
(10) आवां किं लिखावः।

(घ) (1) सः ग्रामम् अगच्छत्। (2) विप्रः गृहम् अगच्छत्। (3) सः स्नानम् अकरोत्।
(4) रामः मोहनः च अपठताम्। (5) तौ उद्यानम् अगच्छताम्। (6) सीता जलम् आनयत्।
(7) बालिका भोजनम् अभक्षयत्। (8) किं तव सहोदरः अत्र आगच्छत्? (9) यूयं कुत्र अगच्छथ।
(10) सीता एकं पत्रम् अलिखत्।

(ङ) (1) तस्य मित्रम् आगच्छत्। (2) कृष्णः अर्जुनम् अकथयत्। (3) मुनिः तपः अकरोत्।
(4) रामः पत्रः अलिखत्। (5) अहं चौरान् अपश्यम्। (6) रामः सदा सत्यम् अवदत्।
(7) सेवकः स्वकार्यम् अकरोत्। (8) धनिकः धनम् अयच्छत्। (9) अध्यापकः क्रुद्धः अभवत्।
(10) त्वं ह्यः किम् अकरो?

(च) (1) बालकाः पाठं पठिष्यन्ति। (2) त्वं पाठं स्मरिष्यसि। (3) सीता वनं गमिष्यति।
(4) ते चित्रं द्रक्ष्यन्ति। (5) प्रमिला भोजनं पक्ष्यति। (6) युवां दुग्धं पास्यथः।

(7) छात्राः क्रीडाक्षेत्रे धाविष्यन्ति। (8) अहं किं करिष्यामि? (9) आवां तत्र पठिष्यावः।
(10) यूयं किं भक्षयिष्यथ।

(छ) (1) रामः स्नानं करिष्यति। (2) अहं क्रोत्स्यामि। (3) पुत्रः जनकेन सह गमिष्यति।
(4) बालकः पुस्तकानि गणयिष्यति। (5) चौरः धनं चोरयिष्यति। (6) अहं त्वया सह चलिष्यामि।
(7) सः पुरस्कारं जेष्यति। (8) शिक्षकः छात्रं ताडयिष्यति। (9) यूयं पुस्तकानि दास्यथ।
(10) ते कथां कथयिष्यन्ति।

(ज) (1) राधा पाठं पठतु। (2) छात्राः भोजनं कुर्वन्तु। (3) नृपः धनं यच्छतु।
(4) ईश्वरः जीवनं रक्षतु। (5) वयं चित्रं पश्याम। (6) त्वम् उद्याने धाव।
(7) ते पुष्पाणि नयन्तु। (8) तौ जलं पिबताम्। (9) राधा भोजनं पचतु।
(10) युवां पाठ पठतम्।

(झ) (1) सः कवितां रचयतु। (2) युवां पत्रं लिखतम्। (3) अहं सत्यं वदामि।
(4) वयं सर्वे सृजाम। (5) मोहनः सोहनः च पाठं स्मरताम्। (6) ते पुष्पाणि न स्पृशन्तु।
(7) त्वं मा हस। (8) वयम् उद्यानं गच्छाम। (9) आगच्छ, पठ लिख।
(10) तत्र मा गच्छ।

(ञ) (1) सः पाठं पठेत्। (2) त्वं तत्र गच्छेः। (3) सीता भोजनं पचेत्।
(4) सः पत्रं लिखेत्। (5) त्वं क्रोधं न कुर्याः? (6) त्वं पाठं स्मरेः।
(7) अहं त्वया सह भवेयम्। (8) जननी कथां कथयेत्। (9) वयं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छेम।
(10) ते ग्रामं न गच्छेयुः।

(ट) (1) शिशवः भयभीताः न भवेयुः। (2) यूयं देशस्य रक्षां कुर्यात्। (3) बालिका न हसेत्।
(4) सः विदुषः सम्मानं कुर्यात्। (5) वयं शिक्षकानां आज्ञापालनं कुर्याम्।
(6) त्वं कलहं न कुर्याः। (7) वयं स्वपुस्तकानि पठेम। (8) रामः मन्दं-मन्दं शनै वदेत्।
(9) त्वं प्रातः पाठान् स्मरेः। (10) पुत्र जनकेन सह भवेत्।

●●

अध्याय–16 घटिकाचित्रसाहाय्येन समय–लेखनम्

(सामान्य–सार्ध–पादोन इत्यादयः)

(क) (i) दश (ii) सार्ध दशवादने
(iii) पादोन एकादश वादने (iv) दशपलोत्तरएकादशवादने

(ख) (i) सार्ध सप्त (ii) अष्ट
(iii) सपाद नव (iv) पञ्चपञ्चाशत् पलोत्तरनव

(ग) (i) सपाद षष्ठ (ii) सार्ध सप्तवादने
(iii) पादोन नववादने (iv) दशपलोत्तरनववादने

(घ) (i) सार्ध अष्ट (ii) पादोन अष्टवादने

(iii) सपाद एकादशवादने (iv) पञ्चत्रिंशत् पलोत्तरएकादशवादने

(ङ) (i) पादोन नव (ii) सपाद दश

(iii) सार्ध दश (iv) एकादश

(च) (i) सार्ध सप्त (ii) दश

(iii) सपाद दश (iv) पादोन द्वादश

(छ) (i) सार्ध सप्त (ii) अष्ट

(iii) सपाद नव (iv) पादोन नव

(ज) (i) सार्ध षष्ठ (ii) पादोन सप्त

(iii) सपाद अष्ट (iv) एकादश

(झ) अष्टवादनम्, दशपलोत्तरदशवादने, पञ्चपञ्चाशत्पलोत्तरद्विवादने, सार्धएकवादने

(ञ) (i) सार्ध चतुर्वादने (ii) सार्ध पञ्च

(iii) सपाद षष्ठ (iv) पंचपलोत्तरसप्तवादने

अध्याय–15 चित्राधारित वर्णनम्

(क) 1. इयं कक्षा अस्ति। 2. कक्षायां त्रय: बालका: पठन्ति।
3. शिक्षक: तान् छात्रान् पाठयति। 4. स: श्यामपट्टे लिखति।
5. सर्वे छात्रा: शिक्षकस्य आदरं कुर्वन्ति।

(ख) 1. अस्मिन् चित्रे वृष्टि: भवति। 2. स: बालक: विद्यालयात् गृहं गच्छति।
3. स: वृष्टिजलेन आर्द्र: भवति। 4. आकाशे मेघा–गर्जन्ति तान् च द्रष्ट्वा मयूरा: नृत्यन्ति।
5. वर्षाकाले कोकिल: मधुर गीतं गायति।

(ग) 1. अस्मिन् चित्रे मोहन: स्वमित्रेण सह दूरदर्शनं पश्यति।
2. दूरदर्शने कश्चित् समाचार: आयाति। 3. तौ आसन्दिकायां तिष्ठत:।
4. गृहस्य अयं कक्ष: साधारण: अस्ति। 5. तौ दूरदर्शने आगतस्य समाचारस्य विषये वार्तालापं कुरुत:।

(घ) 1. इयं रमा अस्ति। 2. सा पाकशालायां स्थिता।
3. सा पोलिका: सूप–ओदनं च पचति। 4. सा प्रतिदिनं स्वपरिवारेण सह भोजनं करोति।
5. सर्वे: जना: भोजनं कृत्वा तृप्तं भवन्ति।

(ङ) 1. माता पुत्रेण सह भोजन कक्षे उपस्थिता। 2. सा पुत्राय भोजनं यच्छति।
3. पुत्र: जननीं पृच्छति–अद्य किं पचसि? 4. जननी कथयति–अद्य मिष्ठान्नम् पचामि।
5. पुत्र: जननीं कथयति–मह्यं मोदकं रोचते।

(च) 1. इदं चित्रं हिन्दूनां महापर्व दीपावल्या: अस्ति। 2. इदं पर्व कार्तिकमासस्य अमावस्यायां भवति।
3. अस्मिन् दिवसे जना: स्वगृहाणि अलङ्कुर्वन्ति, दीपकान् प्रज्ज्वालयन्ति लक्ष्मीपूजनं च कुर्वन्ति।
4. सर्वे जना: परस्परं मिष्ठान्नं वितरन्ति।
5. अस्मिन् चित्रे एका महिला स्वगृहे दीपान् प्रज्ज्वालयति एक: बालक: च स्फोटकपदार्थान् विस्फोटयति।

रचना

अध्याय-18 पत्र-लेखनम्

(क) अध्ययने परिश्रमं हेतु अनुजाय पत्रं मञ्जूषाया: उचितपदैः पूरयत—

प्रिय अशोक:। दौसात:

अत्र कुशलं तत्रास्तु। दिनांक 16-9-20--

चिरंजीव

आवयोर्माता **स्वपत्रेण** सूचयति यत् तव मन: **अध्ययने** पूर्ववत् न रमते। प्रायेण **क्रीडने** एव संलग्न: तिष्ठसि त्वम्। इदं तु महत् **अशोभनम्** अस्ति। अयं ते **जीवनम्** निर्माणकाल:, अत: कथञ्चिदपि **आत्मनो** लक्ष्यात् न विरन्तव्यम्। अध्ययनमेव तव **जीवनस्य** उन्नेध्यति।

चि. अशोक: उपाध्याय:

किशनगढ़ (अजमेर) **शुभेच्छु**

पद्माकार: उपाध्याय:

(ख) प्रधानाचार्यां प्रति अवकाशहेतो: प्रार्थना-पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पूरयत—

सेवायाम्

श्रीमत्य: प्रधानाध्यापिका महोदया:

राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय:,

बनारस:।

महोदया:

सविनयं **निवेदनमस्ति** यत् मम ज्येष्ठभगिन्या: **पाणिग्रहण संस्कार** दिनद्वयं पश्चात् **भविष्यति**। एतत्कारणात् दिनद्वयं **यावद्** अहं स्वकक्षायामुपस्थातुं न **शक्नोमि**।

अत: निवेदनमस्ति यत् दिनांक: 1-8-20-- त: 2-8-20-- पर्यन्तं **दिनद्वयस्य** अवकाशं **स्वीकृत्य** माम् अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमत्य:।

भवदाज्ञाकारिणी शिष्या,

अभिलाषा शर्मा

कक्षा सप्तम्-अ

(ग) अग्रजं प्रति वर्धापनपत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदै पूरयत—

रतनगढ़त:

सेवायाम् दिनांक: 27-3-20--

सम्मान्य बन्धुवर्य।

सादरं वन्दे।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

प्राप्तं भवतः **कृपापत्रं** अद्यैव। ह्यः **परिषदा** अस्माकं परीक्षा-फलं **घोषितम्**। भवतः आशीर्वादात् इयं **परीक्षा** मया प्रथमश्रेण्याम् उत्तीर्णा। अंक-पत्रे प्राप्ते सति सविस्तारं **लेखिष्यामि।**

भवतः अनुजः

रामेश्वरदासः

(घ) नगरपालिकाप्रशासकाय प्रार्थना-पत्रं मञ्जूषायाः उचितपदैः पूरयत—

प्रेषकः दिनाङ्कः 14-12-20--

प्रह्लाद चावला, **पार्षदः**

सुभाषवसतिः झालावाड़म्।

प्राप्तकर्त्ता—

श्रीमन्तः **नगरपालिका** प्रशासकमहोदयः

नगरपालिका, झालावाड़म्।

विषय—सुभाषवसत्याः स्वच्छता **सम्पादनार्थम्**।

महोदयाः,

निवेदनमस्ति यद् अस्माकं 'सुभाषवसति' नाम्नि **उपनगरे** स्वच्छकार्यं नेव क्रियते। अनेन **कारणेन** यत्र-तत्र अस्वच्छवस्तूनाम् अनियतप्रसारणं **भवति**। अनेन विविध **रोगाणाम्** प्रसारस्य आशंका अस्ति।

अतएवं प्रार्थ्यते स्वच्छताकार्ये **नियुक्तान्** कर्मकरान् स्वच्छतासम्पादनार्थम् आदिशतु। **आशासे** भवान् समुचितां व्यवस्थां करिष्यति।

निवेदकः

(प्रह्लाद चावला)

पार्षदः

(ङ) सदाचारपालनाय अनुजं प्रति पत्रं मञ्जूषायाः उचितपदैः पूरयत—

प्रिय अनुजः!

चिरंजीव। ब्यावर (अजयमेरु)

अत्र **कुशलम्** तत्रास्तु। दिनांकः 03-10-20--

तव एकेन मित्रेण **व्यवहारः** यत् स्वशिक्षकैः सह तव **सहपाठिषु** शिष्टः न अस्ति। **सूचितम्** अपि त्वम् असाधुः संवृत्तः **असि**। इदं **नोचितम्**। सदाचारस्तु **जीवनस्य** मूलमन्त्रोऽस्ति। कथितं च **आचारः** परमो धर्मः इति। आशासे यत् त्वं मम **परामर्शम्** अनुसरिष्यसि।

चि. सुरेन्द्र नाथः, कक्षा 8 (स) **तवाग्रजः**

राजकीय सी. सै. स्कूल, बाड़मेर। राजेन्द्रनाथः

●●

अध्याय–19 लघु कथा लेखनम्

1. काशीनगरे एकः **पण्डित** अस्ति। पण्डितसमीपम् एकः **शिष्यः** आगच्छति। शिष्यः वदति– ''आचार्य! अहं **विद्याभ्यासार्थम्** आगतवान्!'' पण्डितः शिष्यबुद्धि **परीक्षार्थम्** पृच्छति– ''वत्स! देवः **कुत्र** अस्ति?'' शिष्यः वदति– गुरो ! देवः कुत्र **नास्ति** । कृपया भवान् एवं वदतु। सन्तुष्टः गुरु वदति– देवः सर्वत्र अस्ति। देवः **सर्वव्यापी**। त्वम् बुद्धिमान् अतः विद्याभ्यासार्थम् **अत्रैव** वस।
2. एकः वृद्धः व्याघ्रः नद्याः तटे वसति स्म। एकदा **व्याघ्रः स्नातः** कुशहस्तः ब्रूते- 'भोः भोः पान्थाः। इदं **सुवर्ण कङ्कणं** गृह्यताम्।' एकः पान्थः **आगच्छति** स्म। तमवलोक्य व्याघ्रः पुनः तथैव अकथयत्। व्याघ्रं निवेदनं श्रुत्वा लोभाकृष्टः पान्थः व्याघ्रमुपासरत्। सः चिन्तयति 'न सन्दिग्धे प्रवृत्तिर्विधेया। तथाप्यसौ तत्र प्राप्यापृच्छ 'कुत्र ते कङ्कणम्।' व्याघ्रः **हस्तं प्रसार्य** दर्शयति। पान्थेनोक्तम् 'कथं त्वयि हिंसके विश्वासः।' व्याघ्रः उवाच 'इदानीं तु अहं धार्मिकानामुपदेशेन हिंसां परित्यज्य स्नानशीलो दाता च भूत्वा विश्वासभूमिः। इति **विश्वासम्** उत्पादयति। लोभरहितोऽहं सुवर्णकङ्कणं यस्मै यस्मै कस्मैचित् दातुमिच्छामि। व्याघ्रो मानुषं खादति। इति अपवादस्तु दुर्निवारः। अतः त्वसरति स्नात्वा गृहाण इदं कङ्कणम्।' **पान्थः** अग्रे स्नातुं प्रविष्टः तावत् **महापंके** निमज्जतिः पलायितमक्षमोऽजायत्। वृद्ध व्याघ्रः विहसन्नेव शनैः शनैः उपगम्य पान्थं धृतवान्।
3. एकस्मिन् निर्जने वने एकः **वटवृक्षः** आसीत्। तस्मिन् कोटरे **वायस दम्पती** सुखेन अवसताम्। वटवृक्षस्य अधस्तात् एव एकस्मिन् बिले **एकः कृष्ण सर्प** तिष्ठति स्म। सः तयोः **शावकानि खादति** स्म। एकदा काकः **शृगालेन परामृष्ट** महाराजाः रत्नजटितं **स्वर्णहारं** अपहृत्य आनयत्। मित्रेण शृगालेन परामृष्टोऽसौ स्वर्णहारं सर्पस्य बिले अक्षिपत्। **राजपुरुषाः** स्वर्णहारम् अन्वेष्टम् इतस्ततः अगच्छन् भ्रमन्तः राजपुरुषाः वृक्षस्य समीपम् आगच्छत्। तैः सर्पस्य बिले हारं दृष्टम्। सर्पमेव चौरं मत्वा बिलं च खनित्वा दण्डप्रहारैः **सर्पमघ्नन्** एवं मित्रस्य सत्यपरामर्शेन सदुपायेन च वायस दम्पती स्व शावकान् अरक्षताम्।
4. एकः अहितुण्डिकः आसीत्। सः सर्पान् गृहीत्वा जीवनं यापनं करोति स्म। एकदा सः एकं सर्पम् आनयति। सर्पम् **पेटिकाया** स्थापयति च। प्रतिदिनं सर्पस्य प्रदर्शनं करोति जीवनं यापयति। **कदाचित्** अहितुण्डिकः अन्यं ग्रामम् अगच्छत्। तस्य पत्नी पुत्रः अपि अगच्छतः। सर्पः पेटिकायामेव बद्धः आसीत्। पञ्च दिनानि अभवन्। अहितुण्डिकः न आगच्छत्। सर्पस्य **अक्ष्याणि** एव नास्ति। सः पेटिकात् बहिः **गमनस्य** प्रयत्नम् अकरोत्। सः बभुक्षित आसीत्। अतः शक्तिः नास्ति। विफलः अभवत्। तदा पेटिका समीपे एकः मूषकः आगच्छत्। सः पेटिकाम् अपश्यत्। पेटिकायां **आहारः** सन्ति। इति मूषकः अचिन्तयत् **निश्चयम्** करोमि। इति सः **रन्ध्रम्** अकरोत्। अनन्तरं सः रन्ध्रं कृत्वा अन्तः **प्रवेशम्** अकरोत्। मूषकः सर्पस्य मुखे एव अपतत्। सर्पः मूषकम् अखादत्। तेन रन्ध्रेव एवं बहिः आगच्छत्। अहो सर्पस्य सौभाग्यम् मूषकस्य दौर्भाग्यम्।

●●

अध्याय–20 वाक्य क्रम–संयोजनम्

1. 1. एकः पिपासितः काकः आसीत्।
   2. सः वने एकं घटम् अपश्यत्।
   3. घटे जलम् अल्पम् आसीत्।
   4. तस्य मस्तिष्के एकः विचारः समागतः।
   5. सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम्।

6. जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत्।

2. 1. एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म।
2. एकदा सः जाले बद्धः।
3. सः सम्पूर्णं प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्तः।
4. तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।
5. मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत्।
6. सिंहः जालात्–मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

3. 1. एकदा कश्चित् कुक्कुरः एकां रोटिकां प्राप्नोत्।
2. सः रोटिकां मुखे गृहीत्वा गच्छन् आसीत्।
3. तदाः सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।
4. स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रोटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।
5. सः कुक्कुरः रोटिकां प्राप्तुं तेन सह युद्धार्थं मुखम् उद्घाटयति।
6. तदा तस्य मुखस्थ रोटिका अपि जले पतति।
7. अत एव कथ्यते 'लोभः न करणीयः।'

4. 1. एकः बुभुक्षितः श्रृगालः भोजनार्थं वने इतस्ततः भ्रमति स्म।
2. एकस्मिन् स्थाने सः द्राक्षालतां पश्यति।
3. लतायां बहूनि पक्वानि द्राक्षाफलानि आसन्।
4. तानि खादितुं सः नैकवारं प्रयासम् अकरोत्।
5. परं तथापि द्राक्षाफलानि न प्राप्नोत्।
6. ''एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि'' इति उक्त्वा कुपितः श्रृगाल ततः गतः।

5. 1. एक गजः आसीत्।
2. सः जलं पातुं स्नातुं च प्रतिदिनम् सरितः तटम् अगच्छत्।
3. एकदा सौचिकस्य पुत्रः गजस्य करे सूचिकाम् अभिनत्।
4. क्रुद्धः सन् गजः सरितः तटम् अगच्छत्। तत्र स्नात्वा जलं च पीत्वा स्वकरे पङ्किलं जलम् आनयत्।
5. सौचिकस्य आपणे स्यूतेषु वस्त्रेषु असिंचत्।
6. तदा सौचिकस्य पुत्रः आत्मग्लानिम् अनुभूय अति खिन्नः अभवत्।

अध्याय–21 अपठित गद्यांशः

1. 1. प्रदूषणसमस्या।
2. निरन्तरं वर्धमानेन प्रदूषणेन मानवजातिः विविधैः रोगैः आक्रान्ता दृश्यते।
3. वैज्ञानिकाः अस्याः प्रदूषण समस्यायाः समाधाने दिवानिशं प्रयतन्ते।
4. पर्यावरणस्य रक्षणे अस्माकं रक्षणं भविष्यति।
5. स्थाने-स्थाने वृक्षाः रोपणीया कर्तव्यम्।

2. 1. पर्यटन उद्योगः।
2. प्रियजनैः सह कृतं पर्यटनम् आनन्दं ददाति।
3. पर्यटनेन भारतशासनं पर्याप्तं धनं लभते।
4. पर्यटन उद्योगं वर्धयितुं शासनं यत्नशीलमस्ति।
5. रोमांचकारि पर्यटनमस्ति।

3. 1. चतुर्थः पुरुषार्थः मोक्षः।
2. निर्वाणम्।
3. मोक्षः चतुर्थः पुरुषार्थः।
4. मोक्षोनाम त्रिविधि-दुखेभ्यः सर्वथा मुक्तिः।
5. मानवः मोक्षं प्राप्नोति-यदा सः रागं द्वेषं चातिक्रामति।

4. 1. दीपावली पर्व।
2. दीपावल्यां रात्रौ महालक्ष्मी पूजनं क्रियते।
3. दीपावली महोत्सवे गृहाणि नव वधूरिव भासन्ते।
4. दीपावली पर्व प्रतिवर्ष कार्तिकामावस्यायां आयोज्यते।
5. प्रतिवर्ष कार्तिकामावस्यायां स्वगृहेषु दीपान् भारतीयाः प्रज्वालयन्ति।

5. 1. क्रोधः महान् शत्रुः।
2. क्रुद्धः जनः ज्येष्ठानां हितवचनानि अपि न श्रृणोति।
3. क्रोधे आगते मौनं धारणीयम्।
4. मौनेन मनः शान्तं भवति।
5. कोपात् सर्वदा आत्मानं रक्षेम।

●●

अध्याय–22 निबन्ध लेखनम्

(1) उद्यम

संसारे सर्वे जनाः सुखम् इच्छन्ति। कोऽपि दुःखं न इच्छति। उद्यमं विना सुखं न भवति। उद्यमेन एव मनुष्यः धनी भवति। ये उद्यमं न कुर्वन्ति, ते सुखिनः न भवन्ति । उद्यमेन एव सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति । उद्यमेन एव विद्याहीनः विद्वान्

भवति। उद्यमेन च बलहीनः बलवान् भवति। उद्यमहीनः पुरुषः किमपि न प्राप्नोति । अतः अस्माभिः सदैव उद्यमः करणीयः।

(2) विजयादशमी

विजयादशमी प्रमुखतः क्षत्रियाणाम् उत्सवः अस्ति। अयं 'दशहरा' इत्यपि कथ्यते। अयं क्षत्रियाणां □ते उत्साहवर्धकः उत्सवः अस्ति। एषः आश्विनमासस्य शुक्लपक्षस्य दशम्यां तिथौ मन्यते। अयम् उत्सवः मर्यादापुरुषोत्तमस्य रामचन्द्रस्य विजयोल्लासे मन्यते। अस्मिन् एव दिने रामः सीतापहारिणं रावणम् अवधीत्। क्षत्रियाः अस्मिन् दिने स्वशस्त्राणि पूजयन्ति। अयम् उत्सवः अधर्मे धर्मविजयस्य सूचकः अस्ति। विजयादशमी शक्तिपूजायाः उत्सवः वर्तते। बंगालप्रान्ते एतस्मिन् अवसरे दुर्गापूजा भवति।

(3) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृतभाषा विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। प्राचीनकाले इयं जनसाधारणस्य भाषा आसीत्। सर्वे जनाः संस्कृतम् एव वदन्ति स्म। संस्कृतभाषा सर्वाः भाषाः शब्ददानेन पोषयति। अतः संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। भारतीया संस्कृतिः अस्याम् एव भाषायां सुरक्षिता अस्ति। ये एतां 'मृतभाषा' इति कथयन्ति, ते एव मृताः सन्ति। ते अस्याः भाषायाः महत्त्वं न जानन्ति। अस्माकं वेदाः, पुराणानि, महाकाव्यानि अस्यां भाषायाम् एव सन्ति। अतः अस्माभिः अस्याः प्रचारः प्रसारः च कर्त्तव्यः।

(4) अस्माकं देशः

भारतः अस्माकं देशः अस्ति। अस्य संस्कृतिः धर्मपरम्परा च श्रेष्ठा अस्ति। अयं देशः सर्वासां विद्यानां केन्द्रम् अस्ति। अयं देशः प्रकृतेः क्रीडास्थली अस्ति। अनेकाः पवित्रतमाः नद्यः अत्र वहन्ति। अस्य उत्तरस्यां दिशि हिमालयः रक्षकः इव स्थितः। अत्र सर्वधर्माणां समानः सम्मानः अस्ति। अस्य भूमिः विविधरत्नानां जननी अस्ति। अत्र विविधः जातयः निवसन्ति। अस्माभिः सदा अस्य रक्षा करणीया।

अध्याय–23 सड़क सुरक्षा

1. सडक-सुरक्षार्थं किं करणीयम् लिखत।

उत्तरम्— राजमार्ग–सुरक्षार्थम् अस्माभिः सडक–सुरक्षा– नियमानां ज्ञानं प्राप्तव्यम्। राजमार्गम् उभयतः स्थापितानां यातायात–सङ्केतानाम् अभिज्ञानमपि करणीयम्। अल्पायुसि एव वाहन न चालयेत्। वाहन–सञ्चालन काले उच्च–स्वरेण सङ्गीत वर्जयेत्। मार्गे ध्यानं सर्वतः आकृष्य मार्गागतानि वस्तूनि एव न पश्येत्। नैतस्मिन् काले धूम्रपानं कुर्यान्न च चलदूरभाषे केनापि सह वार्तालापं कुर्यात्। सहयात्रिभिः सार्धमपि न संवदेत्।

2. मार्गे दुर्घटनायाः कारणानि लिखत।

उत्तरम्— सामान्यतः जनाः यातायात–नियमेभ्यः अनभिज्ञाः भवानि। विज्ञाः अपि यातायात सङ्केतान् न पश्यन्ति। बहवः तु उपेक्षन्ते। जनाः भूमिगतपदाति मार्गस्योपयोगमपि न कुर्वन्ति। निषेधेऽपि निषेध मार्गं प्रविशन्ति। वाहन चालकः समीपस्थैः जनैः सह, चल दूरभाषे च दत्तचित्ताः सन्तः वार्तालापं कुर्वन्ति। केचन तु उपहास–निमग्नाः परिवर्त्य पृष्ठ भागे पश्यन्ति सहयात्रिणः।

3. सड़क सुरक्षा नियम–शिक्षणाय सरलतमा का व्यवस्था भवेत् ?

उत्तरम्— गृहे परिजनैः विद्यालये च शिक्षकैः छात्राः एतद्विषये प्रशिक्षणीया। प्रार्थना–सभायां समये–समये सडक सुरक्षा नियमानां ज्ञानं प्रदेयम्। भूगोलविषयाध्ययन काले विषयाध्यापकेन यथावसरं यातायात–सङ्केतानां मानचित्राध्ययनस्य परिचयः प्रदेयः। विद्यालये एतद्विषयक प्रश्न–पृच्छा–स्पर्धा अपि आयोज्या। वृत्तपत्रेषु सडक दुर्घटनायाः समाचारं

श्रावयित्वा तं प्रति सावहितं कुर्यात् तेभ्य: च मार्ग–सञ्चरण नियम–ज्ञानपि पुन:–पुन: प्रदेयम्। एकस्मिन् सत्रे वारद्वयं सडक–सुरक्षा–नियमान् आधृत्य संवाद, वाद–विवाद, भाषणादीनां स्पर्धानामप्यायोजनं कुर्यात् विजेतारश्च पुरस्करणीया:।

4. जन–सम्मर्दाकीर्णे मार्गे वाहन–चालकेन किं करणीयम्?

उत्तरम्— सुसञ्चालनं विधाय वाहन चालक: दुर्घटनां परिहर्तुं शक्नोति। अत: सुसञ्चालक: जनसम्मर्दाकीर्णमार्गे वाहनं कदापि तीव्र गत्या न चालयेत। वाहनस्यगति: निर्धारिता निर्दिष्टा नियन्त्रिता च भवेत्। अपर्याप्तमपि मार्गं प्राप्य अग्रगमनस्य प्रयत्नं न कुर्यात्। द्रुत गमनमपि सदैव वर्जनीयम्। आगते गत्यावरोधके वाहनस्य गतिरपि अवरोधनीया। निर्दिष्टं मार्गमेवानुसरेत्।

5. अधोदत्त यातायात–सङ्केतानां अभिप्रायमपि लिखत। (नीचे दिये हुए यातायात के चिह्नों का अभिप्राय बताइये।)

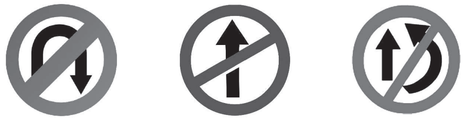

उत्तरम्— (i) सङ्केतोऽयं सन्दशकावर्त (U-TURN) इति कथ्यते यन्निर्दिशति यदत्र व्यावर्तन निषिद्धम्।
(ii) सङ्केतोऽयं निर्दिशति यदत्र प्रवेश: निषिद्ध: अत: नात्र गन्तव्यम्।
(iii) ओवरटेक–निषेधकं चिह्नमुपदिशति यत्र अग्रगमन– प्रयत्नं निषिद्धम्।

6. यदा चालक: सड़क–सुरक्षा नियमान् न पालयति तदा किं करणीयम्?

उत्तरम्— यदा वाहन–चालक: सडक–सुरक्षा–नियमान् न पालयति तदा छात्रै: स: निरोधनीय, बोधनीय: विरोधनीय:। एषा उपेक्षा भावना च अवरोधनीया। तस्यायनुचित–व्यवहारस्य परिवाद: विद्यालयस्याधिकारिणां समक्षे निवेदनीय:। अधिकारिभि: असौ सम्यक् निर्देष्टव्य:। यद्यसौ पुनरपि करोति तदा परिवर्तनीय: अन्यथा आरक्षि– स्थाने परिवाद: प्रस्तोतव्य: स: यातायात– नियमानवगन्तु चं आदिष्टव्य:। छात्रै: शिक्षकै: अधिकारिभिश्चासौ उपेक्षणीय:।

7. सड़क–सुरक्षार्थं बालकै: किं न करणीयम्?

उत्तरम्— केचन छात्रा: बालका: व अल्पायुसि एव वाहन– चालनाय अत्युत्सुका: भवन्ति। ते वाहन– चालनेऽनभिज्ञा अल्पज्ञा: वा सन्तोऽपि वाहनं नीत्वा राजमार्गे आगच्छन्ति। वाहन–चालनस्य प्रयत्न कुर्वन्ति एवं दुर्घटना सम्भवति अतोऽल्पायुसि बालकै: वाहन–चालन कार्यं न कुर्यात्। षोडशदेश वर्षीया बालका: गियर (गतिपरिवर्तक) युक्त वाहनं न चालयेयु:। प्रशिक्षिता: अपि केचन बालका: आत्मविश्वासस्य अभावे असावधानतया दुर्घटनां विदधति। अत: आत्मविश्वास न त्यजेत् परञ्च वाहने चलदूरभाषै सङ्गीतं चापि न श्रणुयु सहयात्रिणा सह वार्तालापमपि न कुर्यु:।

8. राजमार्ग सुरक्षाया: सामान्य नियमान् लिखत?

उत्तरम्— राजमार्गस्य वामपार्श्वे एव चलेत्। व्यावर्तने: चतुष्पथे, पदातिमार्गे, गत्यावरोधके च वाहनं शनै: शनै: चालयेत। उभयत: संलग्नयो: आदर्शयो: मार्गस्थितिं विचरन्तश्च जनान् पश्येत्। व्यावर्तने हस्त–सङ्केत कुर्यात्। द्विचक्रवाहन चालकेन शिरस्त्राणम् (हैलमेट) अवश्यनेन धारणीयम्। यातायात संकेतान् अवलोक्य अभिज्ञाय, तेषाम् अभिप्राय प्रयोजनं वा ज्ञात्वा अनुपालयेत् राजमार्गविभाजिका पीत रेखा नोल्लङ्घनीया। वाहनोऽकस्मात् नावरोधनीय। पश्चगमने आदर्शयो स्थितिं जन–सम्मर्द च पश्येत सावहित: सन् चालयेत्।

9. प्रवेश–निषेध मार्गे गते का हानिर्भवति?

उत्तरम्— 'प्रवेश निषेध' मार्गं न प्रविशेत्। यदि प्रविशति तदा किमपि दुर्घटितुं शक्यते। स्वस्यापरस्य व हानिर्भवितुं शक्नोति। तत्र नियुक्त: राज–पुरुष: निरोद्धं शक्नोति, वाहनस्य चालनं विधाय परिवादमपि आरब्धुं शक्नोति। अनेन

आर्थिकहानिः तु भविष्यति एव मानसिक अशान्तिः अपि वर्धिष्यते। न्यायालयः दण्डयितु शक्नोति। अवमानना वाहनस्य क्षतिः सम्भवति वाहनमपि निरोद्धुं शक्यते। अतः प्रवेश निषेध मार्गे प्रविष्टेतु अपाय एव सम्भवति।

10. राजमार्ग-सङ्केता कतिधा भवन्ति? लिखत।

उत्तरम्— राजमार्ग सङ्केताः मुख्यतः चतुर्धाः भवन्ति। एतेषु प्रवेश-निषेधादयः पञ्चत्रिंशत सङ्केताः अनिवार्याः भवन्ति एते वृत्ताकारेऽङ्किताः भवन्ति। सचेतकाः सङ्केताः त्रिकोणात्मकाः अङ्किताः भवन्ति, एते व्यावर्तनादिबोधकाः चत्वारिंशत् भवन्ति। सूचना चिह्नाणि विद्यमानता बोधकानि पञ्चदश संख्यकानि भवन्ति। चतुर्थ-विद्या दश सङ्केताः यातायात-कर्मकरस्य हस्ताभ्यां सङ्केतिताः भवन्ति। चतुष्पथे पुलिस कर्मकारः स्व हस्तयोः मार्गं, व्यावर्तक मार्गस्य रिक्ततां व्यस्ततां च दर्शयति।

●●

संस्कृत व्याकरण-8

अध्याय-1 वर्णोच्चारण स्थानानि

(क) 1. (अ) द्वौ 2. (अ) त्रयविधः 3. (अ) छ् 4. (ब) र् 5. (ब) त्रयःत्रिंशत्
6. (ब) दन्ताः 7. (अ) मूर्धा 8. (द) कण्ठोष्ठौ 9. (स) ओष्ठौ 10. (द) 'व्' वर्णस्य

(ख) 1. स्वराः 2. ह्रस्व 3. दीर्घ 4. प्लुत 5. व्यञ्जनानि

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ)

(क)	**(ख)**
1. स्वराः	त्रिविधा
2. स्पर्श	वर्णाः
3. प्लुत स्वराः	आह्वाने प्रयोगं
4. द्विमात्राकालेन	दीर्घ स्वराः
5. ह्रस्व	एक मात्रा

(ङ) 1. भाषायाः मूल ध्वनिः वर्णः अस्ति। (भाषा की मूल ध्वनि वर्ण है।)

2. स्वराः त्रिविधा सन्ति—(i) ह्रस्व स्वराः (ii) दीर्घ स्वराः (iii) प्लुत स्वराः।
(स्वर तीन प्रकार के होते हैं—(i) ह्रस्व स्वर (ii) दीर्घ स्वर (iii) प्लुत स्वर।)

3. वर्गीय व्यञ्जनानि स्पर्श वर्णाः कथ्यन्ते। पञ्चवर्गानाम् पञ्चविंशति व्यञ्जनानि कथ्यन्ते। (पाँच वर्णों के पच्चीस व्यंजन वर्गीय व्यंजन कहे जाते हैं। वर्गीय व्यंजनों को 'स्पर्श' वर्ण कहा जाता है।)

4. ह्रस्व स्वराणाम् उच्चारण कालं एकमात्रा भवति। ह्रस्व स्वरों का उच्चारण काल एक मात्रा के बराबर होता है।

5. कण्ठोष्ठौ 'व्' वर्णस्य उच्चारण स्थानम् स्तः। (कंठोष्ठ 'व्' वर्ण का उच्चारण स्थान है।)

6. येषां वर्णानाम् उच्चारणं स्वतन्त्रतया भवति ते स्वराः कथ्यन्ते। (जिन वर्णों का उच्चारण स्वतन्त्रता से होता है, वे स्वर कहे जाते हैं।)

7. एकमात्राकालेन उच्चार्यमाणः ह्रस्व स्वरा सन्ति। अ इ उ ऋ लृ इत्यादि ह्रस्व स्वराः सन्ति। (जिनके उच्चारण में एक मात्रा के बराबर समय लगे, ह्रस्व स्वर होते हैं। अ, इ, उ, ऋ लृ इत्यादि ह्रस्व स्वर हैं।

8. एते द्विमात्राकालेन उच्चार्यमाणः आ ई ऊ ॠ ए ओ ऐ औ अष्ट दीर्घ स्वराः। सर्वे मिलित्वा त्रयोदश स्वराः सन्ति। (जिनके उच्चारण में दो मात्रा के बराबर समय लगे अर्थात् ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दो गुना समय लगे—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ आठ दीर्घ स्वर हैं। सब मिलकर तेरह स्वर हैं।

9. दीर्घेभ्यः स्वरेभ्यः अपि अधिकः कालः येषां स्वराणाम् उच्चारणे प्रयुज्यते ते प्लुत स्वराः सन्ति। प्लुत स्वरस्य प्रयोगं कमपि आह्वाने अपि भवति। यथा—गोऽऽविन्द। (जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर होते हैं। जैसे— गोऽऽविन्द।

10. **पञ्चविंशति स्पर्श वर्णाः**— पञ्चवर्गानाम् पञ्चविंशति व्यञ्जनानि वर्गीय व्यञ्जनानि कथ्यन्ते। वर्गीय व्यञ्जनानि स्पर्श वर्णाः अपि कथ्यन्ते। (पाँच वर्गों के पच्चीस व्यञ्जन वर्गीय व्यञ्जन कहे जाते हैं। इन व्यञ्जनों को स्पर्श व्यञ्जन भी कहा जाता है।)

पञ्चविंशति स्पर्श वर्णा: (पच्चीस स्पर्श वर्ण)

वर्ग		वर्ण				
		1	2	3	4	5
क	वर्ग–	क	ख	ग	घ	ङ
च	वर्ग–	च	छ	ज	झ	ञ
ट	वर्ग–	ट	ठ	ड	ढ	ण
त	वर्ग–	त	थ	द	ध	न
प	वर्ग–	प	फ	ब	भ	म

अध्याय-2 संज्ञा शब्द रूप प्रकरणम्

(क) 1. (ब) बालकेन 2. (स) पत्यो 3. (द) गुरुभ्य: 4. (स) सखायम् 5. (अ) स्त्रिय:
6. (स) विभायाम् 7. (ब) पुस्तकाभ्याम् 8. (द) आत्मनो: 9. (स) पितर: 10. (अ) भगवद्भि

(ख) 1. रक्षासूत्रं 2. अन्त: 3. सम्मोह: 4. संयोगेन् 5. राजस्थानं
6. फलोद्गमै: 7. प्रेरणापुरुष: 8. स्वदुग्धेन 9. वैदिक कालात्

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) **1.**
- क. सरस्वती — 4. श्वेत पद्मासना
- ख. ब्राह्मण पुत्रा: — 1. मित्रभावेन वसन्ति स्म
- ग. रावत रत्नसिंह: — 3. हाडावती
- घ. सत्यमेव जयते — 2. भारत सर्वकार:

2.
- क. ब्राह्मण पुत्रा: — 4. सिंहेन उत्थाय मारिता:
- ख. राज्ञी अपि — 3. तम् अवलोकितवती
- ग. वृक्षायुर्वेद: — 2. पराशरस्य कृति: अस्ति
- घ. क्रोधात् — 1. भवति सम्मोह:

3.
- क. आर्यभट्ट: — 4. प्रकाशस्य गति:
- ख. सा बाला — 3. देवी स्वरूपा अस्ति
- ग. यौतकस्य विरोध: — 2. सरलया कृतवान
- घ. राजस्थानस्य — 1. दर्शनीय स्थलानि

4.
- क. नरेन्द्रस्य हृदय: — 4. व्यथित: सञ्जात:
- ख. स्वयं न खादन्ति — 3. फलानि वृक्षा
- ग. कम्बलेन — 2. शरीरमाच्छाद्य
- घ. महाराणा फतेहसिंह: — 1. लार्ड कर्जनस्य समारोहे गमिष्यति

5.	क.	सूर्य: सप्तविंशति	4.	नक्षत्रेषु परिभ्रमति
	ख.	अस्माकं देशे	1.	स्वच्छताभियानम् प्रचलति।
	ग.	उटजं	3.	नगराद् बहि: आसीत्
	घ.	महिषी ताडनेन	2.	अतीव कुपिता संजाता
6.	क.	चौरा:	4.	लज्जीभूता:
	ख.	मासे	3.	त्रिंशद दिवसा:
	ग.	बुद्धिप्रदां	2.	शारदाम्
	घ.	धेनव:	1.	अनेकवर्णीया: भवन्ति
7.	क.	बुद्धिहीना	2.	विनश्यन्ति
	ख.	पर्यटका:	3.	राजस्थानं नमन्ति
	ग.	शल्यचिकित्साया: जनक:	4.	आचार्य सुश्रुत:
	घ.	सत्यं	1.	शिवं सुन्दरम्
8.	क.	आरक्षागारे	2.	आरक्षका: नियुक्ता:
	ख.	विद्याधनं	4.	सर्वधनं प्रधानम्
	ग.	नरेन्द्रस्य हृदय:	1.	व्यथित: सञ्जात:
	घ.	भारते ग्रामो ग्राम:	3.	सिद्धवनम् तुल्यं अस्ति
9.	क.	भो मूर्ख!	3.	असत्यं मा वद:
	ख.	विद्यालये	4.	स्वच्छताकार्यक्रम: आसीत्
	ग.	काल चक्रं	1.	सततं प्रचलति
	घ.	मेदपाटस्य गौरवं	2.	विनष्टं भविष्यति
10.	क.	वीणा पुस्तक	4.	धारिणीम् शारदां नमत
	ख.	पृथ्वी सूर्यस्य	3.	परिक्रमां करोति
	ग.	चन्द्रगुप्तेन चाणक्याय	2.	कम्बला: समर्पिता:
	घ.	गावो	1.	विश्वस्य मातर:

(ङ) 1. संस्कृत व्याकरेण शब्दस्य त्रि प्रकारा भवति—(1) नाम (2) धातु (3) अव्यय।
(संस्कृत व्याकरण में शब्द के तीन प्रकार होते हैं—(1) नाम (2) धातु (3) अव्यय।)

2. नामस्य द्वि भेदा: सन्ति—(i) अजन्त (ii) हलन्त। (नाम के दो प्रकार हैं— (1) अजन्त (2) हलन्त)।

3. संस्कृते वचनस्य त्रिभेदा सन्ति—(संस्कृत में वचन तीन प्रकार के माने गए हैं—)
(i) एकवचन (ii) द्विवचन (iii) बहुवचन।

4. संस्कृते लिंगस्य त्रय भेदा सन्ति (संस्कृत में लिंग के तीन भेद हैं—) (1) पुल्लिग (2) स्त्रीलिंग। (3) नपुंसकलिंग।

5. पति (षष्ठी विभक्ति) — पत्यु: (एकवचन) पत्यो: (द्विवचन) पतीनाम् (बहुवचन)।

6. **अजन्त शब्द—** जिन शब्दों के अन्त में स्वर होता है उनको 'अजन्त शब्द' कहते हैं। उनको 'स्वरान्त शब्द' भी कहते हैं, जैसे- हरि, गुरु, बालक, लता, मति, वधू आदि। इन शब्दों के अन्त में क्रमश: इ, उ, अ, आ, इ, ऊ स्वर हैं। अत: ये सभी अजन्त शब्द हैं।

7. **हलन्त शब्द—** जिन शब्दों के अन्त में व्यञ्जन वर्ण हों वे हलन्त शब्द कहे जाते हैं। उनको 'व्यञ्जनान्त शब्द' भी कहा जाता है, जैसे- आत्मन्, पयस्, राजन्, मरुत् आदि। इन सभी शब्दों के अन्त में क्रमशः न्, स्, न्, त् व्यंजन हैं। अतः ये हलन्त शब्द हैं।

8. **इकारान्त पुल्लिंग 'सखि' (मित्र) शब्द**

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

9. **ऋकारान्त पुल्लिंग 'पितृ' (पिता) शब्द**

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ !	हे पितरः !

10.

	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रमा—	पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
	षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
	सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
फलम्—	पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
	षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
	सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
आत्मन्—	पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
	षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
	सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु

11. **अजन्त**—पतिः, गुरु, दधि, मधु, खग।

हलन्त—राजन्, आत्मन्, वणिक्, भूभृत्, भ्रातृ।

12. **(क)**

विभक्ति	**वचन**
1. प्रथमा	1. बहुवचन
2. तृतीया	2. एकवचन
3. पंचमी, षष्ठी	3. एकवचन
4. तृतीया	4. बहुवचन

(ख)

विभक्ति	**वचन**
1. द्वितीया	1. एकवचन
2. प्रथमा	2. बहुवचन
3. तृतीया	3. एकवचन
4. षष्ठी	4. बहुवचन

●●

अध्याय-3 सर्वनाम शब्द–रूप प्रकरणम्

(क) 1. (ग) सर्वस्मिन् 2. (घ) अस्माभिः 3. (ख) काभ्याम् 4. (ग) सा 5. (ग) इदम्
6. (घ) भवत्याः 7. (क) केन 8. (ख) तस्य 9. (क) तस्य 10. (ख) युष्मात्

(ख) 1. युवाम् 2. सर्वेषाम् 3. सः 4. मम 5. मम, अस्मिन्

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1.

(क) मेदपाटस्य सूर्यः	4. महाराणा फतेह सिंहः
(ख) सामञ्जस्येन	5. कार्य करणीयम्
(ग) आत्मवत् सर्वभूतेषु	1. यः पश्यति स पण्डितः
(घ) स्वच्छताभियानं	3. मोदी महोदयस्य चमत्कारं
(च) रक्षाबन्धनं	2. श्रावणमासे आयोज्यते

2.

(क) अहं प्रातः काले	4. भ्रमणार्थं गच्छामि।
(ख) सर्वनाम शब्दः	5. संज्ञा शब्दस्य स्थाने आगच्छति।
(ग) गुरुः शिष्यानां	1. मार्गदर्शनं करोति।
(घ) सतां विभूतयः	2. परोपकाराय भवन्ति।
(च) धनलोलुप जनाः	3. विवाहे यौतुकं इच्छन्ति।

(ङ) 1. यः शब्दः कस्यापि संज्ञायाः स्थाने प्रयुक्तः भवति सः सर्वनाम इति कथ्यते। (जो शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, वह सर्वनाम कहलाता है।)

यथा– 'पीयूषः एकः सुशीलः बालकः अस्ति। सः अस्मिन् गृहे निवसति।'

उपर्युक्ते वाक्ये 'सः' शब्द पीयूष स्व (संज्ञा शब्दस्य) प्रयुक्तः अतः अयम् सर्वनाम् शब्दः अस्ति। (उपर्युक्त वाक्य में 'सः' शब्द पीयूष के स्थान पर प्रयोग हुआ है। अतः यह सर्वनाम है।)

2. सर्व (सप्तमी) — सर्वस्मिन् (एकवचन), सर्वयोः (द्विवचन), सर्वेषु (बहुवचन)।

3. **तत्**

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः

4. **भवत् (आप) पुल्लिंग**

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः

द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवत:
षष्ठी	भवत:	भवतो:	भवताम्

भवती (आप) स्त्रीलिंग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भवती	भवत्यौ	भवत्य:
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवती:
षष्ठी	भवत्या:	भवत्यो:	भवतीनाम्

5. सर्वे।
6. **किम् (कौन) पुल्लिंग**

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	क:	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

7.

पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयो:, वाम्	युष्माकम्, व:
सप्तमी	त्वयि	युवयो:	युष्मासु

8. (क) सर्वे—प्रथमा, बहुवचन। (ख) मया— तृतीया, एकवचन। (ग) एतासु— सप्तमी, बहुवचन।
9. **भवती (आप) स्त्रीलिंग**

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भवती	भवत्यौ	भवत्य:
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवती:
तृतीया	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभि:
चतुर्थी	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्य:
पंचमी	भवत्या:	भवतीभ्याम्	भवतीभ्य:
षष्ठी	भवत्या:	भवत्यो:	भवतीनाम्
सप्तमी	भवत्याम्	भवत्यो:	भवतीषु

10. अस्य— तद्हम् अस्य आह्वानं करोमि।
आवाम्—आवां कुत्र गच्छाव:।
युवयो:—खेल प्रांगणे युवयो: क्रीडथ:।
तेषाम्—तेषाम् निवास: तु मम गृहे अस्ति।

अध्याय-4 विशेषण प्रकरणम्

(क) 1. (ख) प्राचीनतमः 2. (ख) सुन्दरी 3. (ग) आदर्श 4. (घ) सुगन्धितं 5. (घ) सर्वाः
6. (ग) मधुराणि 7. (क) मदीयं 8. (क) चत्वारो 9. (ख) अष्टौ 10. (ग) श्रेष्ठतम्

(ख) 1. श्वेत 2. द्वितीये 3. रक्त 4. प्रचुरं 5. एकः

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1.

(क) विशेषणः संज्ञापदस्य	4. विशेषता प्रकटी करोति
(ख) विशेषण विशेष्यस्य	2. श्रेष्ठतमा नारी
(ग) विशेषस्य	3. धनं लेभे
(घ) सुन्दरः	1. बालकः
(च) सर्वे छात्राः	9. मूर्खाः सन्ति।
(छ) मूल्य वाचक विशेषणः	7. रूप्यकम्
(ज) मदीय	5. सर्वनाम विशेषणः करोति
(झ) सुन्दरी	10. बालिका।
(ट) द्विगुणं	8. विशेषता प्रकटित भवति।
(ठ) श्रेष्ठतमः पुरुषः	6. लिंग, वचन, विभक्ति समान भवति।

(ङ) 1. **विशेषणः—** येन शब्देन संज्ञापदस्य सर्वनाम पदस्य वा विशेषता प्रकटी भवति सः शब्दः विशेषणः कथ्यते। (जिन शब्दों से संज्ञा पद या सर्वनाम पदों की विशेषता प्रकट होती है, विशेषण कहलाते हैं।)

2. **विशेष्यः—** विशेषणेन यस्य संज्ञा शब्दस्य, सर्वनाम शब्दस्य वा विशेषता प्रकटी भवति सः शब्दः विशेष्यः भवति। (जिस संज्ञा या सर्वनाम पदों की विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य होते हैं।)

3. विशेषण शब्दस्य लिंग, वचन, विभक्तिश्च विशेष्यस्यानुसारः भवति। (विशेष्य के अनुसार ही विशेषण शब्द के लिंग, वचन और विभक्ति होती है।)

4. **विशेषण**—1. संख्यावाचक, 2. आवृत्ति वाचक, 3. समुदाय बोधक, 4. विभाग बोधक, 5. परिमाण वाचक, 6. सर्वनाम विशेषण, 7. गुणवाचक, 8. तुलनात्मक विशेषण, 9. अजहल्लिंग।

5. नीलोत्पलम् आनय।

6. **गुणवाचक विशेषणः—** जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुणों को बतलाता है उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे□नीलम् उत्पलम्' यहाँ पर 'नीलम्' शब्द उत्पल को अनील (अर्थात् जो नीला न हो) से अलग करता है। अतः यह गुणवाचक विशेषण है।

7. **आवृत्तिवाचक विशेषण**— दुगना, चार गुना, पचास गुना आदि आवृत्तिसूचक शब्द आवृत्ति वाचक विशेषण कहे जाते हैं। इनके लिए शब्दों के आगे 'गुण' या 'गुणित' शब्द जोड़े जाते हैं। यथा–
तव गृहं मम गृहात् आकारे द्विगुणः अस्ति। (तुम्हारा घर मेरे गृह से आकार में दोगुना है।)

8. शोभनौ—विशेषण—गुणवाचक विशेषण।

9. **परिमाणवाचक विशेषण**— जो शब्द तोल, माप, समय तथा परिमाण आदि बताते हैं वे परिमाण वाचक विशेषण कहे जाते हैं। जैसे- तोल (पुरानी तोलें)— रत्तिका, माषकः (माषा), षष्टङ्कः (छटांक), शेरः (सेर) आदि (नई तोलें)- ग्रामः, किलो, लिटरः, मिली लिटरः आदि।

10. द्वावपि—शूर: दाता च द्वावपि नरौ धन्यौ।
कश्चित—कश्चित ग्रामे एक: कुम्भकार: वसति।
अङ्गुलम्—मम लेखनी त्रि अङ्गुलम् परिणात्मकीं अस्ति।

अध्याय--5 कारक प्रकरणम्

(क)	1. (क) द्वितीया	2. (घ) द्वितीया	3. (क) तृतीया	4. (ग) चतुर्थी	5. (ग) पंचमी
	6. (क) प्रथमा	7. (क) सप्तमी	8. (क) प्रथमा	9. (ख) चतुर्थी	10. (ख) चतुर्थी
(ख)	1. प्रयाग:	2. अभित:	3. बालकाय	4. कलमेन	5. गोषु
(ग)	1. ✓	2. ✓	3. ✗	4. ✗	5. ✓

(घ)

		'क'	'ख'
1.	(क)	नरेन्द्र:	(5) दीनबन्धु:
	(ख)	शल्यचिकित्सा	(4) सुश्रुत:
	(ग)	राजस्थानं	(3) पर्यटका:
	(घ)	सरस्वती	(1) पातु
	(ङ)	सत्यं, शिवं, सुन्दरम्	(2) राष्ट्रीय दूरदर्शनम्

		'क'	'ख'
2.	(क)	पातकम्	(4) यौतुकं
	(ख)	गीता	(1) श्रीकृष्ण:
	(ग)	राज्ञी	(5) हाडावती
	(घ)	भुशुण्डी	(3) कुँवर प्रताप:
	(ङ)	अगत्स्य:	(2) विद्युत्कोष:

(घ) 1. **कारकस्य परिभाषा**—'क्रियाजनकत्वं कारकम्' अथवा 'क्रियां करोति निर्वर्तयति इति कारकम्।' अर्थात् य: क्रियां सम्पादयति अथवा यस्य क्रियया सह साक्षात् परम्परया वा सम्बन्धो भवति स: 'कारकम्' इति कथ्यते। (क्रिया को जो करता है अथवा क्रिया के साथ जिसका सीधा अथवा परम्परा से सम्बन्ध होता है, वह 'कारक' कहा जाता है।)

2. हरये भक्ति: रोचते।
3. बालकाय मोदकं स्वदते। चतुर्थी विभक्ति।
4. **करण कारक की परिभाषा**— 'साधकतमं करणम्' अर्थात् किसी क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक होता है, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति आती है तथा कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के कर्त्ता में भी तृतीया विभक्ति आती है।
5. 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' अर्थात् करण कारक तथा कर्मवाच्य अथवा भाववाच्य के कर्त्ता कारक में तृतीया विभक्ति आती है।
6. **परिमाण मात्र में**—नाप या वजन का बोध कराने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे—द्रोण:, आढकम् आदि।

वचन मात्र में—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन का ज्ञान कराने हेतु भी प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है, जैसे—एक:, द्वौ, बहव:, क्रमश: एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन हैं।

उदाहरण— छात्रा: कुत्र गच्छन्ति? (छात्र कहाँ जाते हैं?)

7. 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र के अनुसार 'अधि' उपसर्गपूर्वक शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) एवं आस् (बैठना) धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है अर्थात् सप्तमी विभक्ति के अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है, जैसे— हरि: वैकुण्ठम् अधिशेते । (हरि वैकुण्ठ में सोते हैं।)

   यहाँ वैकुण्ठ में सप्तमी विभक्ति न होकर उक्त अधि उपसर्ग के प्रयोग के कारण द्वितीया विभक्ति ही हुई है। 'भूपति: सिंहासनम् अधितिष्ठति' । (राजा सिंहासन पर बैठता है।) अथवा 'भूपति: सिंहासनम् अध्यास्ते' । (राजा सिंहासन पर बैठता है।) इसी प्रकार के प्रयोग हैं।

8. 'रुच्यर्थानां प्रीयमाण:' अर्थात् रुच् (अच्छा लगना) अर्थ वाली धातुओं के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है। जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी आती है और जो वस्तु अच्छी लगती है, उसमें प्रथमा ही आती है। जैसे —

   बालकाय मोदकं रोचते । (बालक को लड्डू अच्छा लगता है।)

9. नम: स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे-

   1. देशभक्तेभ्य: नम: । (देशभक्तों को नमस्कार।)
   2. प्रजाभ्य: स्वस्ति । (प्रजाओं को आशीर्वाद।)
   3. अग्नये स्वाहा । (देवताओं के लिए अग्नि में आहुति।)

10. 'येनाङ्गविकार:' अर्थात् जिस अंग विशेष से शरीर का विकार जाना जाता है, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे —मोहन: कर्णाभ्यां बधिर: । (मोहन कानों से बहरा है।) अत: यहाँ तृतीया विभक्ति है।

●●

अध्याय-6 धातुरूप प्रकरणम्

(क) 1. (ख) भवति 2. (घ) गमिष्यथ 3. (ग) अभाषावहि 4. (घ) सेवध्वे। 5. (क) अवदम्
6. (ग) नयन्ति 7. (क) क्रीडतम् 8. (ख) पिबथ: 9. (क) लिखे: 10. (ख) करवाणि

(ख) 1. गच्छति 2. अक्रीडताम् 3. वदिष्याव: 4. भवाम: 5. पचेयु:

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ)

'क'	**'ख'**
(क) लिखति	(3) 'लट्' लकार
(ख) वयं	(4) पठाम:
(ग) विधिलिङ्लकार	(1) गच्छतु
(घ) 'लोट्' लकार उत्तम पुरुष	(2) शोभामहै
(ङ) विभक्तय:	(5) प्रथम पुरुष बहुवचन

'क'	**'ख'**
(क) मोदिष्यन्ते	(3) सेवामहे
(ख) पश्यसि	(1) सप्त भवन्ति
(ग) भव् + अ + ति	(4) भवति

(घ) आत्मनेपदी (5) परस्मैपदी

(ङ) करिष्यथ: (2) द्विवचन

(ङ) 1. क्रियाया: मूलरूपं धातु: भवति। (क्रिया के मूलरूप की धातु होती है।)

2. नमेतम्।

3. धातुओं के रूप बनाने के लिए उनके साथ दो प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं- परस्मैपद और आत्मनेपद। कई धातु केवल परस्मैपद में, कई केवल आत्मनेपद में आती हैं और कई दोनों में आती हैं जो उभयपदी होती हैं ।

4. वर्तमानकालाय लट् लकारस्य प्रयोगं भवति। (वर्तमान काल के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।)

5. प्रथमपुरुष, द्विवचन, लङ्लकार।

6. धातु—क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे—भू, पठ्, गम्, नम्, दृश्, लभ् आदि।

7. क्रिया—धातु के साथ प्रत्यय लगाकर जो वाक्य में सहायक पद बनता है, उसे क्रिया कहते हैं।
जैसे—भव् + अ + ति: भवति। पठ् + अ + ति = पठति।

8. द्रक्षत:—तौ: द्राक्षाफलान् द्रक्षत:।
यच्छाम:—ते आम्रफलानि यच्छाम:।
अवदाम—सर्वे बालका: सत्यं अवदाम।

9. **'स्था' लृट् लकार (भविष्यत् काल)**

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यम	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तम	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:

10. धातुओं के रूप प्राय: दस लकारों में बनते हैं, परन्तु उनमें निम्नलिखित पाँच लकार मुख्य हैं—
    1. लट् = वर्तमान काल के लिए।
    2. लङ् = भूतकाल के लिए।
    3. लृट् = भविष्यत् काल के लिए।
    4. विधिलिङ् = सम्भावना या चाहिए वाले प्रेरणार्थक वाक्य के लिए ।
    5. लोट् = आज्ञा देने या माँगने तथा आशीर्वाद के लिए।

अध्याय-7 उपसर्ग–प्रकरणम्

(क) 1. (घ) प्र 2. (ग) प्र 3. (घ) आ 4. (क) अ 5. (ख) वि
6. (घ) वि 7. (क) उप 8. (ग) नि 9. (क) उप 10. (ग) परि

(ख) 1. अवगच्छन्ति 2. प्रहार: 3. उपगच्छति 4. समागच्छत् 5. उन्नति:

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ)

'क' खण्डम्	**'ख' खण्डम्**
(क) उपसर्ग:	(घ) क्रियायोगे
(ख) उपसर्गात्	(च) नूतनक्रियापदानांनिर्माणं

(ग) सम+ह	(ग) संहार
(घ) उपसर्गाः	(क) द्वाविंशति संख्यकाः
(च) अनु	(ख) करोति

(ङ) 1. नूतनक्रियापदानांनिर्माणं धातोपूर्वम् उपसर्गानां योजयित्वा भवति। (नए क्रिया पदों का निर्माण धातु से पूर्व उपसर्ग जोड़कर होता है।)

2. धातोः पूर्वम् उपसर्गान् योजयित्वा वयं नूतनक्रियापदानां निर्माणं कुर्मः। (धातु से पहले उपसर्गों को जोड़कर हम नये क्रियापदों का निर्माण करते हैं ।) सूत्र– "उपसर्गः क्रियायोगे" अर्थात् क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञा होती है ।

3. प्रहारः।

4. मोहनः राजेशस्य पराभवति।

5. निपतति (नीचे गिरता है।)

6. **उपसर्गगतिस्त्रिधा**—उपसर्ग का प्रयोग करने से धातु के अर्थ में विशेषता आ जाती है । कहीं धातु का अर्थ परिवर्तित होकर एक नया अर्थ प्रकट करता है तो कहीं अर्थ का विपर्यय या विलोम हो जाता है और इस प्रकार अर्थ में सौन्दर्य आ जाता है। उपसर्ग का प्रयोग करने से धातु का अर्थ बलपूर्वक बदल जाता है। जैसे- विहार, परिहार, संहार, प्रहार तथा हार आदि।

7. **उपसर्ग की परिभाषा** — वे शब्दांश जो किसी क्रिया से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसमें सुन्दरता ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं ।

8. प्रयोगः—सपादद्वि नक्षत्राणां मेलनं कृत्वा एकस्या राशेः प्रयोगं भवति।
परिभ्रमन्—एकस्मिन् वर्षे सूर्यः सप्तविंशति नक्षत्रेषु परिभ्रमति।
आगच्छति—श्रृगालः आगच्छति।

9. प्रमादम्—प्र। विकारम्—वि। अपहरति—अप। परिश्रमः—परि। प्रयुक्तान्—प्र। समागत्य—सम् + आ। उपविशति— उप

10. उपसर्गाः साधारणतः द्वाविंशतिः (22) संख्यकाः सन्ति, तद्यथा (साधारणतः उपसर्ग 22 होते हैं, जो इस प्रकार हैं)—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, (आ), नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

●●

अध्याय-8 प्रत्यय-प्रकरणम्

(क) 1. (क) क्त्वा 2. (ख) क्तवतु 3. (ख) ल्यप् 4. (ख) क्तवतु 5. (ख) ल्यप्
6. (ख) क्त्वा

(ख) 1. पीत्वा 2. पठन् 3. लिखितम् 4. रचितवान् 5. वक्तव्यम्।

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ)

'क'	**'ख'**
(क) 'कृ' + क्त्वा	4. कृत्वा
(ख) 'शतृ' प्रत्ययस्य रूपं	2. पिवन्
(ग) क्त प्रत्ययः	5. भाववाच्ये
(घ) कृत् प्रत्ययः	3. तुमुन्
(च) प्रत्यय प्रयोगः	1. शब्दस्य पश्चात्

(ङ) 1. तुमुन् प्रत्ययस्य प्रयोगः अस्ति।

2. प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—(1) कृत् प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय।

3. नी + क्त्वा = नीत्वा। पी + क्त = पीतः। दा + तुमुन् = दातुम्।

4. क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है। 'क्तवतु' प्रत्यय में से 'क्' तथा 'उ' का लोप हो जाता है तथा तवत् शेष रहता है।

5. 'आनीय' शब्द में अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग है।

6. **प्रत्यय**—जो शब्द किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा धातु (क्रिया) शब्द के पश्चात् (अन्त में) किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करने के लिए जोड़ा जाता है, उसको 'प्रत्यय' कहते हैं।

7. मूल क्रिया (धातु) शब्द के बाद में भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराने वाले जिन प्रत्ययों को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय तथा कहीं-कहीं क्रियापद का निर्माण किया जाता है, उन प्रत्ययों को 'कृत्' प्रत्यय कहते हैं।
कृत् प्रत्ययों में 'क्त्वा', 'ल्यप्' एवं 'तुमुन्' आदि प्रत्यय आते हैं।

8. पृच्छ् + क्त्वा—पृष्ट्वा। गम् + ल्यप् — आगम्य।
स्था + क्त — स्थितः। ह्रस्व + शतृ — ह्रस्वन्।
पठ + क्तवतु — पठितवान्। जन् + शानच् — जायमानः।
क्षम् + तव्यत् — क्षन्तव्यः। वन्द् + अनीयर् — वन्दनीयः।

9. दो की तुलना में एक की विशेषता बताने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तरप्' का 'तर' शेष रहता है। 'तरप्' प्रत्यय से बने शब्द के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।

10. **'क्त'**

धातु		**अर्थ**	**धातु**	**प्रत्यय**	**क्त प्रत्यय से बना रूप**	**अर्थ**
गम्	=	जाना	गम्	+ क्त	गतः	गया
पठ्	=	पढ़ना	पठ्	+ क्त	पठितः	पढ़ा
आ + गम्	=	आना	आ + गम्	+ क्त	आगतः	आया
दृश्	=	देखना	दृश्	+ क्त	दृष्टः	देखा
कृ	=	करना	कृ	+ क्त	कृतः	किया
आ + नी	=	लाना	आ + नी	+ क्त	आनीतः	लाया
पा	=	पीना	पी	+ क्त	पीतः	पिया
वच्	=	कहना	वच्	+ क्त	उक्तः	कहा
हस्	=	हँसना	हस्	+ क्त	हसितः	हँसा
नश्	=	नष्ट होना	नश्	+ क्त	नष्टः	नष्ट हुआ

ल्यप्

उपसर्ग		**धातु**		**ल्यप् प्रत्यय**		**ल्यप् प्रत्यय से बना रूप**	**अर्थ**
सम्	+	अस् (भू)	+	ल्यप्	=	संभूय	एकत्रित होकर
उप	+	कृ	+	ल्यप्	=	उपकृत्य	उपकार करके
सम्	+	क्रुध्	+	ल्यप्	=	संक्रुध्य	क्रोध करके
आ	+	गम्	+	ल्यप्	=	आगम्य	आकर
प्र	+	चल्	+	ल्यप्	=	प्रचल्य	चलकर
वि	+	जि	+	ल्यप्	=	विजित्य	जीतकर

आ	+	दा	+	ल्यप्	=	आदाय		लेकर
आ	+	नी	+	ल्यप्	=	आनीय		लाकर
सम्	+	पठ्	+	ल्यप्	=	संपठ्य		पढ़कर
सम्	+	प्रच्छ्	+	ल्यप्	=	संपृच्छ्य		पूछकर

शतृ

धातु		**अर्थ**	**धातु**	**प्रत्यय**	**बना रूप**	**अर्थ**
गम्	=	जाना	गम्	+ शतृ	गच्छन्	जाते हुए
पठ्	=	पढ़ना	पठ्	+ शतृ	पठन्	पढ़ते हुए
हस्	=	हँसना	हस्	+ शतृ	हसन्	हँसते हुए
स्मृ	=	याद करना	स्मृ	+ शतृ	स्मरन्	याद करते हुए
स्था	=	खड़ा होना	स्था	+ शतृ	तिष्ठन्	खड़े होते हुए
कृ	=	करना	कृ	+ शतृ	कुर्वन्	करते हुए
चल्	=	चलना	चल्	+ शतृ	चलन्	चलते हुए
पृच्छ्	=	पूछना	पृच्छ्	+ शतृ	पृच्छन्	पूछते हुए
पा	=	पीना	पा	+ शतृ	पिबन्	पीते हुए
धाव्	=	दौड़ना	धाव्	+ शतृ	धावन्	दौड़ते हुए

क्तवतु

धातु		**अर्थ**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
गम्	=	जाना	गतवान्	गतवती	गतवत्
पठ्	=	पढ़ना	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
कृ	=	करना	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
ह	=	हरण करना	हृतवान्	हृतवती	हृतवत्
वच्	=	बोलना	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्
पा	=	पीना	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
प्रच्छ्	=	पूछना	पृष्टवान्	पृष्टवती	पृष्टवत
नी	=	ले जाना	नीतवान्	नीतवती	नीतवत्
कथ्	=	कहना	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
जि	=	जीतना	जितवान्	जितवती	जितवत्
पूज्	=	पूजा करना	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्

शानच्

धातु		**अर्थ**	**धातु**	**प्रत्यय**	**बना रूप**	**अर्थ**
भाष्	=	कहना	भाष्	+ शानच्	भाषमाण:	कहता हुआ
कृ	=	करना	कृ	+ शानच्	कुर्वाण:	करता हुआ
सेव्	=	सेवा करना	सेव्	+ शानच्	सेवमान:	सेवा करता हुआ
एध्	=	बढ़ना	एध्	+ शानच्	एधमान:	बढ़ता हुआ
लभ्	=	प्राप्त करना	लभ्	+ शानच्	लभमान:	प्राप्त करता हुआ
जन्	=	पैदा होना	जन्	+ शानच्	जायमान:	पैदा होता हुआ
सह्	=	सहन करना	सह्	+ शानच्	सहमान:	सहन करता हुआ
ताड्	=	पीटना	ताड्	+ शानच्	ताड्यमान:	पीटता हुआ

शी	=	सोना	शी	+ शानच्	शयानः	सोता हुआ
याच्	=	माँगना	याच्	+ शानच्	याचमानः	माँगता हुआ

अनीयर्

धातु		**अर्थ**	**धातु**		**प्रत्यय**	**बना रूप**	**अर्थ**
गम्	=	जाना	गम्	+	अनीयर्	गमनीयम्	जाना चाहिए
कृ	=	करना	कृ	+	अनीयर्	करणीयम्	करना चाहिए
स्मृ	=	याद करना	स्मृ	+	अनीयर्	स्मरणीयम्	याद करना चाहिए
एध्	=	बढ़ना	एध्	+	अनीयर्	एधनीयम्	बढ़ना चाहिए
दृश्	=	देखना	दृश्	+	अनीयर्	दर्शनीयम्	देखने योग्य
सेव्	=	सेवा करना	सेव्	+	अनीयर्	सेवनीयम्	सेवा करने योग्य
अर्च्	=	पूजा करना	अर्च्	+	अनीयर्	अर्चनीयम्	पूजा करने योग्य
पूज्	=	पूजा करना	पूज्	+	अनीयर्	पूजनीयः	पूजा करने योग्य
वन्द्	=	वन्दना करना	वन्द्	+	अनीयर्	वन्दनीयः	वन्दना करने योग्य

तुमुन्

धातु		**अर्थ**	**धातु**		**प्रत्यय**	**बना रूप**	**अर्थ**
कृ	=	करना	कृ	+	तुमुन्	कर्त्तुम्	करने के लिए
पठ्	=	पढ़ना	पठ्	+	तुमुन्	पठितुम्	पढ़ने के लिए
हन्	=	मारना	हन्	+	तुमुन्	हन्तुम्	मारने के लिए
गम्	=	जाना	गम्	+	तुमुन्	गन्तुम्	जाने के लिए
श्रु	=	सुनना	श्रु	+	तुमुन्	श्रोतुम्	सुनने के लिए
सह्	=	सहन करना	सह्	+	तुमुन्	सोढुम्	सहन करने के लिए
स्मृ	=	याद करना	स्मृ	+	तुमुन्	स्मर्तुम्	याद करने के लिए
हृ	=	चुराना	हृ	+	तुमुन्	हर्तुम्	चुराने के लिए
चल्	=	चलना	चल्	+	तुमुन्	चलितुम्	चलने के लिए
कथ्	=	कहना	कथ्	+	तुमुन्	कथयितुम्	कहने के लिए

तमप्– अल्पतमः, लघुतमः, पटुतमः, गुरुतमः, प्रियतमः, बुद्धिमत्तमः, अधिकतमः, निम्नतमः, मूर्खतमः, चतुरतमः।

तव्यत्

धातु		**अर्थ**	**धातु**	**प्रत्यय**	**बना रूप**	**अर्थ**	
कृ	=	करना	कृ	+	तव्यत्	कर्त्तव्यम्	करना चाहिए
सह्	=	सहन करना	सह्	+	तव्यत्	सोढव्यम्	सहन करना चाहिए
पठ्	=	पढ़ना	पठ्	+	तव्यत्	पठितव्यम्	पढ़ना चाहिए
गम्	=	जाना	गम्	+	तव्यत्	गन्तव्यम्	जाना चाहिए
हन्	=	मारना	हन्	+	तव्यत्	हन्तव्यः	मारने योग्य या मारना चाहिए
क्षम्	=	क्षमा करना	क्षम्	+	तव्यत्	क्षन्तव्यः	क्षमा करना चाहिए
एध्	=	बढ़ना	एध्	+	तव्यत्	एधितव्यम्	बढ़ने योग्य, बढ़ना चाहिए
नी	=	ले जाना	नी	+	तव्यत्	नेतव्यः	ले जाना चाहिए
वच्	=	कहना	वच्	+	तव्यत्	वक्तव्यम्	कहना चाहिए
भू	=	होना	भू	+	तव्यत्	भवितव्यम्	होना चाहिए

क्त

धातु		अर्थ	धातु	प्रत्यय	क्त प्रत्यय से बना रूप	अर्थ
गम्	=	जाना	गम्	+ क्त	गतः	गया
पठ्	=	पढ़ना	पठ्	+ क्त	पठितः	पढ़ा
आ + गम्	=	आना	आ + गम्	+ क्त	आगतः	आया
दृश्	=	देखना	दृश्	+ क्त	दृष्टः	देखा
कृ	=	करना	कृ	+ क्त	कृतः	किया
आ + नी	=	लाना	आ + नी	+ क्त	आनीतः	लाया
पा	=	पीना	पी	+ क्त	पीतः	पिया
वच्	=	कहना	वच्	+ क्त	उक्तः	कहा
हस्	=	हँसना	हस्	+ क्त	हसितः	हँसा
नश्	=	नष्ट होना	नश्	+ क्त	नष्टः	नष्ट हुआ

अध्याय-9 अव्यय–निरूपणम्

(क) 1. (क) कदा 2. (घ) एव 3. (ग) न 4. (क) सर्वदा 5. (ख) कुत्र
6. (ख) एकदा 7. (घ) अद्य 8. (क) बहुधा 9. (घ) तदा 10. (ख) अधुना

(ख) 1. (ग) प्रति 2. (क) च 3. (क) अद्य 4. (क) अत्र 5. (ग) सदा

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ)

'क'	'ख'
(क) अव्यय	2. व्यय न भवति
(ख) क्रिया विशेषण	1. अव्यय भेदः
(ग) सदृशं	3. अव्यय
(घ) उपसर्ग	5. त्रिषु लिंगेषु
(च) किल	4. निपात

(ङ) 1. सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तद्व्ययम् ।। व्यय शब्द का अर्थ है— जिसमें व्यय न हो। व्यय का अर्थ परिवर्तन होता है अर्थात् जिसमें कोई परिवर्तन या विकार न हो, जैसा का तैसा ही बना रहता है, उसे अव्यय कहते हैं।

2. **भेद**—अव्यय के निम्नलिखित चार भेद हैं—
   1. उपसर्ग—उपसर्ग 22 हैं।
   2. क्रियाविशेषण—जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।
      जैसे— अत्र, तत्र, यत्र, बहुत्र, सर्वत्र, श्वः, ह्यः, अन्येद्युः, इदानीम्, तदानीम्, बहुधा, एकदा आदि।
   3. समुच्चयबोधक अव्यय—जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।
      जैसे — यथा, तथा, किन्तु, परन्तु, च, तु, चेत्, अथवा, परंच, यदि, यावत्, तावत्, तदा, यदा आदि।
   4. विस्मयबोधक अव्यय—वाक्य में इन अव्ययों का प्रयोग करने पर कर्त्ता, क्रिया अथवा कर्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ये शब्द मात्र मन के भावों को ही प्रकट करते हैं। प्रायः ये भय, क्रोध, विषाद, उन्माद, आश्चर्य,

दया आदि मनोभावों की अभिव्यक्ति करते हैं।

जैसे—अरे, ओह, आह, हन्त, हा, धिक् आदि।

नोट—किल, खलु, नूनम्, आदि अव्यय हैं, जिन्हें निपात भी कहते हैं।

3. एव।
4. निपात — निपात अव्यय का ही एक भेद है। प्रायः विस्मयादि बोधक अव्यय निपात होते हैं। उदाहरण—किल, खलु, नूनम् आदि अव्यय हैं, जिन्हें निपात भी कहते हैं।
5. साम्प्रतम् सा अत्र नास्ति।
6. क्रिया विशेषण—जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।
   जैसे— अत्र, तत्र, यत्र, बहुत्र, सर्वत्र, श्वः, ह्यः, अन्येद्युः, इदानीम्, तदानीम्, बहुधा, एकदा आदि।
7. समुच्चयबोधक अव्यय—जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।
   जैसे — यथा, तथा, किन्तु, परन्तु, च, तु, चेत्, अथवा, परञ्च, यदि, यावत्, तावत्, तदा, यदा आदि।
8. 1. इत्थम् सः शान्तिं नालभत्। 2. यदा श्रीरामः आगच्छति तदा अहं गच्छामि।
   3. इदानीम् पठ। 4. अहं सर्वदा देवालयं गच्छामि।
9. विस्मयबोधक अव्यय—वाक्य में इन अव्ययों का प्रयोग करने पर कर्त्ता, क्रिया अथवा कर्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ये शब्द मात्र मन के भावों को ही प्रकट करते हैं। प्रायः ये भय, क्रोध, विषाद, उन्माद, आश्चर्य, दया आदि मनोभावों की अभिव्यक्ति करते हैं।
   जैसे—अरे, ओह, आह, हन्त, हा, धिक् आदि।
10. अव्यय शब्द वे हैं जो कि तीनों लिंगों—पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में, प्रथमा आदि सभी विभक्तियों में और तीनों वचनों—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन इन सभी वचनों में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं तथा जिनमें कोई परिवर्तन नहीं करना पड़ता है।

●●

अध्याय-10 संख्यावाची शब्दः

(क) 1. (ख) एकोन पञ्चाशत् 2. (ख) चतुषष्टि 3. (ग) सप्तति 4. (क) अष्टाविंशः 5. (ख) त्रयशीति
6. (ख) द्विचत्वारिंशत् 7. (घ) चतुस्सप्तति 8. (ग) एकनवति 9. (क) सप्तदश 10. (घ) विंशतिः।

(ख) 1. द्वौ 2. एकः 3. सप्त 4. चतुर्थः 5. तृतीये

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ)

'क'	'ख'
(क) अष्टाशीतिः	4. 88
(ख) अष्ट + अशीतिः	5. 88
(ग) एकस्मै	3. एकस्याः
(घ) एकस्य	2. चतुर्थी पुल्लिग
(ङ) नवविंशी	1. छात्रा

(ङ) 1. अष्टाशीतिः।

2. संस्कृत में संख्या को उल्टे क्रम से लिखना शुरू करते हैं । जैसे – 101 का पहले एक और फिर सौ को लिखेंगे, बीच में ज्यादा का शब्द 'अधिक' लिखेंगे। जैसे हमारे बुजुर्ग लोग गिनती बताते थे । 130 को = तीस ज्यादा सौ या तीस ऊपर सौ, 19 को = एक कम बीस, 540 को = चालीस ज्यादा पाँच सौ या चालीस ऊपर पाँच सौ' यही तरीका संस्कृत का है ।

3. 49, 16, 64, 97

4. शत, सहस्र, अयुत, प्रयुत।

5. 101, 165, 125

6. संस्कृत में संख्या उल्टे क्रम से लिखना शुरू करते हैं जैसे – 88 को लिखना है तो पहले इकाई अंक 8 की संस्कृत 'अष्ट' लिखेंगे बाद में 80 को 'अशीतिः लिखेंगे, दोनों को मिलाकर एक शब्द बनेगा 'अष्टाशीतिः'। इसी प्रकार 75 (पिचहत्तर) को लिखते समय पहले इकाई अंक 5 को संस्कृत में लिखकर पुनः 70 को संस्कृत में लिखेंगे तो शब्द सामने आयेगा 'पंचसप्ततिः'।

7. 5 पञ्च, 6. षट्, 7. सप्त, 8. अष्ट, 9. नव, 10. दश, 11. एकादश, 12. द्वादश, 13. त्रयोदश, 14. चतुर्दश, 15. पञ्चदश, 16 षोडश।

8. **त्रि (तीन)**

विभक्ति	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

9. त्रिंशत् (तीस), चत्वारिंशत् (चालीस), पंचाशत् (पचास), षष्टिः (साठ), सप्ततिः (सत्तर), अशीतिः (अस्सी), नवतिः (नब्बे) आदि सभी शब्दों में 'तम' जोड़ने पर क्रमवाची शब्द बन जाते हैं ।
जैसे- त्रिंशत् से त्रिंशत्तमः (तीसवाँ), चत्वारिंशत् से चत्वारिंशत्तमः (चालीसवाँ), पंचाशत् से पंचाशत्तमः (पचासवाँ), षष्टिः से षष्टितमः (साठवाँ), सप्ततिः से सप्ततितमः (सत्तरवाँ), अशीतिः से अशीतितमः (अस्सीवाँ), नवतिः से नवतितमः (नब्बेवाँ), शतम् से शततमः (सौवाँ) इत्यादि क्रमवाची शब्द बनते हैं ।

10. प्रयुतम् = दस लाख। लक्षम् = लाख। कोटिः = करोड़। अब्ज = अरब।
खर्वन् = दस अरब। अर्बुदम् = दस करोड़। महापद्म = दस खरब। जलधि = दस नील।

●●

अध्याय-11 सन्धि प्रकरणम्

(क) 1. (ब) दीर्घः 2. (ब) गुणः 3. (द) वृद्धिः 4 (अ) यण् 5. (अ) यण्
6. (स) वृद्धिः 7 (स) यण् 8. (स) अयादि 9. (अ) गुणः 10. (ब) अयादि

(ख) 1. हिम + आलयः 2. स्वर 3. रामः + चिनोति 4. पुरः + हित 5. व्यंजन संधेः

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ)

'क'	**'ख'**
(क) पद्म	3. आसना
(ख) वृद्धि रेचि	5. एकैकम्
(ग) सोऽपि	2. विसर्ग सन्धिः
(घ) सन्धिः	1. वर्णमेलनं
(ङ) एकेन	4. उक्तम्

(ङ) 1. सन्धिः एकस्मिन् पदे धातूपसर्गयोः समासे च नित्य भवति। (सन्धि एक पद में, धातु और उपसर्ग में और समास की स्थिति में नित्य (अवश्य) होती है।)

2. स्वर वर्णेन सह स्वरवर्णस्य मेलनं स्वर-सन्धिः कथ्यते। (स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण का मेल स्वर संधि कहलाती है।)
3. शश + अंक = शशांक।
4. स्वर वर्णेन सह स्वर वर्णस्य मेलनं स्वर सन्धिः कथ्यते। (स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण का मेल स्वर संधि कहलाता है।
5. अकारान्त उपसर्ग के बाद 'ए', 'ओ' स्वर होने पर पूर्व अर्थात् उपसर्ग में आए हुए 'अ' का लोप होकर अर्थात् ए, ओ हो जाता है।
6 **परिभाषा**—पूर्व पदस्य अन्तिम वर्णेन सह उत्तरपदस्य पूर्व वर्णस्य मेलनेन यत्परिवर्तन भवति तत्सन्धिः इति। (पूर्व पद के अन्तिम वर्ण के साथ उत्तरपद के पहले वर्ण के मिलने से जो परिवर्तन होता है, वह सन्धि है।)
7 **परिभाषा**—सन्धि युक्त पद में दो या दो से अधिक शब्दों को अलग करना संधि विच्छेद कहलाता है। जैसे—'हिमालयः' का संधि-विच्छेद करने पर 'हिम + आलयः' ये दो शब्द अलग हो गये।
8. जलाधिपतिः = जल + अधिपतिः । धर्मसंस्थापनार्थाय = धर्मसंस्थापन + अर्थाय। रामष्टीकते = रामः + टीकते। पितुरिच्छा = पितुः + इच्छा।
9. अत्रागत्य। नरोत्तम । महर्षि । शयनम् । समुद्रमासाद्य।
10. विसर्ग (:) के साथ किसी स्वर या व्यंजन के मिलने से जो परिवर्तन (विकार) होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। उदाहरण— नमः + ते = नमस्ते। शिशु : + आगच्छत् = शिशुरागच्छत्।

●●

अध्याय-12 निर्देशानुसार पद परिवर्तनम्

(क) 1. (क) कर्त्तुम् 2. (क) लिखित्वा 3. (क) पठितुम् 4. (क) दर्शनीय् 5. (घ) कुर्वाणः 6. (ख) हन्तुम् 7 (ख) मुदितः

(ख) 1. स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः भविष्यति।

2. परमाणुवादस्य जनकः महर्षि कणादः स्म।
3. अहं विवाहमपि न करिष्यामि।
4 बालकाः उद्याने क्रीडेत्।
5. यूयं विद्यालयं गच्छेत्।

6. गमिष्यति पिपीलिको योजनानां शतान्यपि यानि।
7. कति पुत्राः बुद्धि रहिताः आसन्?
8 राव रत्नसिंहस्य विवाह कस्य सह अभवत्?
9. प्राचीनकाले भारतदेश कैः आसन्?
10. कः सेवानिवृत्तः शिक्षकः अस्ति?
11. भ्रातुः कथनं श्रुत्वा कः मूकः जातः।

●●

अध्याय-13 अनुवाद प्रकरणम्

- (1) मोहनः धावति। (2) बालकः पठति
  (3) त्वं पाठं स्मरसि। (4) त्वं किं पश्यसि?
  (5) सः स्नानम् अकरोत्। (6) रामः मोहनः च अपठताम्।
  (7) मुनिः तपः अकरोत्। (8) रामः पत्रम् अलिखत्।
  (9) प्रमिला भोजनं पक्ष्यति। (10) युवां दुग्धं पास्यथः।
  (11) पुत्रः जनकेन सह गमिष्यति। (12) बालकः पुस्तकानि गणयिष्यति।
  (13) राधा भोजनं पचतु। (14) युवां पाठं पठतम्।
  (15) त्वं मा हस। (16) वयं उद्यानं गच्छाम।
  (17) वयं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छेम। (18) ते ग्रामं न गच्छेयुः।
  (19) बालिका न हसेत्। (20) सः प्राज्ञस्य सम्मानं कुर्यात्।

- (1) राधा भोजन पकाती है। (2) छात्र देखता है।
  (3) तुम कब जाते हो? (4) तुम दोनों चित्र देखते हो।
  (5) वे दोनों बाग को गये। (6) सीता पानी लाई।
  (7) चोर धन चुरावेगा। (8) मैं तेरे साथ चलूँगा।
  (9) प्रमिला भोजन पकाएगी। (10) तुम दोनों दूध पियोगे।
  (11) पुत्र पिता के साथ जाएगा। (12) बालक पुस्तकें गिनेगा।
  (13) राजा धन दे। (14) ईश्वर जीवन बचाए।
  (15) वह कविता रचे। (16) तुम दोनों पत्र लिखो।
  (17) हमें विद्यालय रोजाना जाना चाहिए। (18) उन्हें गाँव नहीं जाना चाहिए।
  (19) बच्चों को भयभीत नहीं होना चाहिए। (20) तुम सभी को देश की रक्षा करनी चाहिए।

●●

रचना

अध्याय-14 पत्र लेखनम्

1. सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधनाचार्य महोदयः,

राजकीयः उच्च माध्यमिक विद्यालयः,

दौसानगरम् ।

विषय-स्थानान्तरण-प्रमाण पत्रं प्राप्तुं प्रार्थना-पत्रम् ।

महोदयः,

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् मम पिता अत्र लिपिकः अस्ति । अधुना तस्य स्थानान्तरणं भरतपुरम् अभवत् । मम परिवारः मम पित्रा सह भरतपुरं गमिष्यति । अहम् अस्मात् विद्यालयात् सप्तकक्षाम् उत्तीर्णवान् अष्टककक्षायाम् अहं भरतपुरे पठिष्यामि। अतः मह्यं स्थानान्तरण-प्रमाण-पत्रं प्रदाय अनुग्रहीष्यन्ति भवन्तः इति ।

सधन्यवादम् ।

दिनांकः 15-7-20-- भवदाज्ञाकारी शिष्यः

रामकुमारः

(अष्टम् कक्षा)

2. सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापक महोदयः,

रा. उ. प्रा. विद्यालयः, श्रीकरनपुर ।

विषयः- विद्यालये स्वच्छतायाः व्यवस्थायै प्रार्थना-पत्रम्।

महोदयाः,

सविनयं निवेदयामो यद् अस्माकं विद्यालये सम्प्रति अस्वच्छतायाः साम्राज्यं वर्तते । अस्मिन् वातावरणे छात्राः शिक्षकाश्च रोगग्रस्ता जायन्ते । अध्ययने अस्माकं मनांसि न रमन्ते । अतः कृपया स्वच्छतायाः समुचित-व्यवस्थायै कर्मकरान् प्रेरयन्तु अत्रभवन्तः ।

दिनांकः 28-8-20-- भवताम् आज्ञानुवर्ती

समस्तः छात्रवृन्दः

3. दिनाङ्कः 12-12-20--

प्रेषकः,

प्रधानाध्यापकः

राजकीय-उच्च-प्राथमिक विद्यालयः

सीकरम् ।

प्राप्तकर्ता

प्राचार्याः

गायत्री-कन्या-महाविद्यालयः

सीकरम् ।

महोदया:,

प्रसन्नताया: प्रसंगोऽयं यत्प्रतिवर्षमिव अस्मिन् वर्षेऽपि अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव: 19-12-20-- दिनाङ्के बुधवासरे मध्याह्ने एकवादने विद्यालयस्य सभाभवने सम्पत्स्यते । अस्य मुख्यातिथय: क्षेत्रीया: विधायक महोदया: भविष्यन्ति।

अस्मिन् उत्सवे भवताम् उपस्थिति: सादरं प्रार्थ्यते ।

भवदीय:
(विजयानन्द:)
प्रधानाध्यापक

4. प्रेषक:
प्रह्लाद चावला, पार्षद:
सुभाषवसति: झालावाड़म् ।

प्राप्तकर्त्ता
श्रीमन्त: नगरपालिका प्रशासकमहोदय:
नगरपालिका, झालावाड़म्

विषय:– सुभाषवसत्या: स्वच्छता-सम्पादनार्थम् ।

महोदया:,

निवेदनमस्ति यद् अस्माकं 'सुभाषवसति' नाम्नि उपनगरे स्वच्छताकार्यं नैव क्रियते । अनेन कारणेन यत्र-तत्र अस्वच्छवस्तूनाम् अनियतप्रसरणं भवति । अनेन विविधरोगाणां प्रसारस्य आशंका अस्ति ।

अतएव प्रार्थ्यते स्वच्छताकार्ये नियुक्तान् कर्मकरान् स्वच्छतासम्पादनार्थम् आदिशतु । आशासे, भवान् समुचितां व्यवस्थां करिष्यति ।

निवेदक:
(प्रह्लाद चावला)
पार्षद:

5. सिरोहीत:
दिनांक: 17-10-20--

प्रिय सुहृन्महेन्द्रनाथ !
सप्रेम हरिस्मरणम् ।
अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

तव स्नेह-पत्रं अद्यैव अधिगतम्। तव उत्साहवर्धकै: वचनै: अहम् अनुगृहीतोऽस्मि । त्वादृशानां मित्राणां प्रेरणैव मम सफलताया: कारणम् । अहं स्वाध्याये एकचित्तया संलग्नोऽहं पुनरपि श्रेष्ठां सफलतां प्रति आश्वस्तोऽस्मि । तव प्रगतिम् अनामयं च कामयन् ।

प्रतिष्ठायाम्, तव मित्रम्
श्री महेन्द्रनाथ:, जगन्नाथ:
माउण्ट आबू ।

●●

अध्याय-15 निबन्ध लेखनम्

1. **उद्यानम्**

अस्माकं विद्यालयस्य समीपे एकम् उद्यानम् अस्ति। उद्याने अनेका: वृक्षा: वहु पादपानि च अपि सन्ति। अत्र एक: विशाल: वटवृक्ष: अपि तिष्ठति। तस्य शाखासु अनेका: खगा: कलरवं कुर्वन्ति। उद्याने पादपेषु पुष्पाणि विकसन्ति। जना: प्रात:काले उद्याने भ्रमणाय गच्छन्ति। प्रात:कालस्य भ्रमणं स्वास्थ्यवर्धकं भवति। सूर्योदय प्राक् उत्थाय प्रकोष्ठाय बहि: आगत्य उद्याने विचरणम् उत्तमा औषधि।

2. **संस्कृतभाषाया: महत्त्वम्**

संस्कृतभाषा विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। प्राचीनकाले इयं जनसाधारणस्य भाषा आसीत्। तदा सर्वे जना: संस्कृतम् एव वदन्ति स्म। संस्कृतभाषा सर्वा: भाषा: शब्ददानेन पोषयति। अत: संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। भारतीया संस्कृति: अस्याम् एव भाषायां सुरक्षिता अस्ति। ये एतां 'मृतभाषा' इति कथयन्ति, ते एव मृता: सन्ति। ते अस्या: भाषाया: महत्त्वं न जानन्ति। अस्माकं वेदा:, पुराणानि, महाकाव्यानि अस्यां भाषायाम् एव सन्ति। अत: अस्माभि: अस्या: प्रचार: प्रसार: च कर्त्तव्य:।

3. **अस्माकं विद्यालय:**

अस्माकं विद्यालय: नगरात् बहि: रम्यप्रदेशे अस्ति। अस्य नाम राजकीय: आदर्श: माध्यमिक: विद्यालय: अस्ति। अस्माकं विद्यालये पञ्चदश: अध्यापका: पञ्चशत छात्रा: च सन्ति। सर्वे अध्यापका: विविध विषयेषु निपुणा: सन्ति। अध्ययने तत्परा: छात्रा: क्रीडायाम् अपि कुशला: सन्ति। कन्दुकक्रीडायाम् अस्माकं विद्यालय: प्रथम अस्ति। विद्यालयं परित: एकं रमणीयकम् उद्यानम् अस्ति। अस्माकं विद्यालये एक: विशाल: पुस्तकालय: अपि अस्ति। पुस्तकालये दशसहस्रपुस्तकानि सन्ति। अयं विद्यालय: साक्षात् विद्याया: मन्दिरम् एव अस्ति।

4. **होलिकोत्सव:**

भारतदेशे अनेके उत्सवा: भवन्ति। तेषु होलिकोत्सव: एक: प्रमुख: उत्सव: अस्ति। एष: हिन्दूनां प्रधानोत्सव: अस्ति। अयं फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां तिथौ मन्यते। प्रथमे दिवसे रात्रौ होलिकादाह: भवति। द्वितीये दिने जना: परस्परम् अबीरगुलालादीनि प्रक्षिपन्ति। अस्मिन् दिने गृहे गृहे विविधा: पाका: पच्यन्ते। पौराणिककथानुसारेण होलिका प्रह्लादम् आदाय अग्नौ अतिष्ठत्। ईश्वरेच्छया सा क्षणेन भस्मीसात् अभवत्। प्रह्लाद: तु सुरक्षित: एव अतिष्ठत्।

5. **मम प्रिय पुस्तकम्**

पुस्तकानि ज्ञानस्य निधय: भवन्ति । ज्ञानप्रदानेन सहैव एतानि अस्माकं मनोरंजनमपि कुर्वन्ति। प्रेरणादायकपुस्तकानि मह्यम् अतीव रोचन्ते। ईदृशमेव एकं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति । अस्मिन् पुस्तके मानवमात्राय कल्याणसन्देश: निहित:। इदम् अस्मान् श्रेष्ठसफलजीवनस्य मार्गं दर्शयति । अत्र निहित: कर्मयोग: मानवान् उद्योगिन: करोति । अस्य अध्ययनं जनेषु कर्म प्रति रुचिं जनयति । स्वार्थहीनकर्मकरणेन मनुष्या: श्रेष्ठसन्तुष्टजीवनं यापयन्ति। एवम् इदं पुस्तकं सम्पूर्णं जीवनदर्शनम् अस्ति ।

6. **विद्याया: महत्वम्**

विद्या प्रधानं धनम् अस्ति। पुण्यं, पापम् इति ज्ञानं विद्यया एव भवति। स्वकर्तव्यज्ञानम् अपि विद्यया एव भवति। विद्या मनुष्याय विनयं ददाति। विनयात् मानव: पात्रतां याति। पात्रत्वात् च मनुष्य: धनं प्राप्नोति। विद्या मनुष्यस्य सुन्दरं रूपम् अस्ति। विद्यारहित: पुरुष: साक्षात् पशु: एव भवति। विद्या दानेन वर्धते संचयेन च नश्यति। अत: विद्या अपूर्वं श्रेष्ठं च धनम् अस्ति।

7. **सत्संगतिः**

सतां संगतिः 'सत्संगतिः' कथ्यते। ये परहितं कुर्वन्ति ते एव सज्जनाः सन्ति। मनुष्यः यादृशैः जनैः सह निवसति, सः तादृशः एव भवति। सत्संगतेः प्रभावेण दुर्जनाः अपि सज्जनाः भवन्ति। सत्संगत्या मानवः उन्नतिं लभते। सत्संगतिः यशसः विस्तारं करोति। पुरुषः सज्जनैः सह सज्जनः भवति, दुर्जनैः च सह दुर्जनः भवति। साधारणः पुरुषः अपि सतां संगत्या महान् भवति। सतां संगत्या अधार्मिकः अपि धार्मिकः, पापी अपि च पुण्यात्मा भवति। अतः सर्वदा सताम् एव संगतिः कार्या।

8. **रक्षाबन्धनम्**

रक्षाबन्धनं हिन्दूनां प्रधानमहोत्सवः अस्ति। अयं ब्राह्मणानां प्रमुखः उत्सवः अस्ति। एषः महोत्सवः श्रावणमासस्य पूर्णिमायां मन्यते। अस्मिन् दिने हिन्दुजनाः रक्षासूत्रं बध्नन्ति। वस्तुतः रक्षाबन्धनं रक्षायाः एव प्रतीकम् अस्ति। भगिन्यः भ्रातृगृहं गत्वा तेषाम् दक्षिणे हस्ते रक्षासूत्रंबध्नन्ति। भ्रातरः भगिनीभ्यः यथाशक्तिः दक्षिणां यच्छन्ति। अयम् उत्सवः भ्रातृभगिन्योः एव अस्ति। एतत् रक्षासूत्रं परस्परप्रेम्णः एकतायाः च सूचकम् अस्ति। वयं रक्षसूत्रस्य महत्त्वं ज्ञात्वा एकतायाः सूत्रो बद्धाः भवेम।

9. **दीपमालिका**

दीपावली हिन्दूनां प्रमुखः उत्सवः अस्ति। अयम् उत्सवः विशेषतया वैश्यानाम् उत्सवः अस्ति। दीपावल्याः उत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्यायां तिथौ भवति। जनाः पूर्वमेव स्वगृहाणि स्वच्छानि कुर्वन्ति। सर्वे स्वगृहेषु विविधाव्यञ्जनानि पचन्ति। रात्रौ लक्ष्म्याः गणेशस्य च पूजनं भवति। सर्वत्र दीपकानां पंक्ति अत्यधिकं शोभते। अस्मिन् दिने श्रीरामः रावणं हत्वा अयोध्याम् आगच्छत्। श्रीरामस्य स्वागतार्थं सर्वैः अयोध्यावासिभिः दीपाः प्रज्ज्वलिताः। इदम् एव अस्य उत्सवस्य विशेषता अस्ति।

10. **मम दिनचर्याः**

प्रत्येक मानवस्य दिनचर्या पृथक् भवति। अहम् एकः छात्रः अस्मि। अहम् अष्टम्–कक्षायां पठामि। अहं प्रतिदिन प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठामि। अहं चषकमेकं चायं पिबामि। अहं स्वमित्ररामचन्द्रेण सह भ्रमणाय गच्छामि। भ्रमणानन्तरम् अहं स्नानं करोमि। स्नात्वा विद्यालयं गच्छामि। विद्यालये प्रार्थना–घण्टिकावादनं भवति। सर्वैः छात्रैः सह प्रार्थनां कृत्वा स्वकक्षायां प्रविशामि। तदनन्तरं कक्षायाम् अध्ययनं करोमि। अर्धावकाशे मित्रेण सह भोजन करोमि। पूर्णे अवकाशे जाते स्वगृहम् आगच्छामि। विश्रामं कृत्वा पाठशालायाः गृहकार्यं करोमि। सायंकाले अहं क्रीडामि। तदनन्तरम् अहम् अधीतपाठानां पुनः अभ्यासं करोमि। अहं भोजनं कृत्वा दूरदर्शनं पश्यामि। दशवादने शयनाय गच्छामि। एषा भवति मम दिनचर्या।

अध्याय-16 कथा लेखनम्

1. एकस्मिन् वन **प्रदेशे** एकः लोमशः वसति स्म। एकदा असौ **भोजनस्य** अभावे बुभुक्षिता आसीत्। भोजनस्य अन्वेषणे सः वने **इतस्ततः** भ्रमन्नेव उद्याने अगच्छत्। तत्र एकां द्राक्षालताम् **अपश्यत्**। तस्यां लतायां **अनेकानि** सुपक्वानि द्राक्षा–फलानि आसन्। सः अति प्रसन्न अभवत्। सः उत्प्लुत्य **अनेकवारं** प्रायतत् परञ्च अति **दूरस्थात्** प्राप्तुम् असमर्थोऽभवत्। निराशायं लोमशा **प्रतिनिवृत्ता** अवदत्–नाहं खादानि द्राक्षाफलानि यतः इमानि अम्लानि सन्ति।
2. एकः **काकः** अस्ति। सः बहु **तृषितः** सः **जलार्थं** भ्रमति। तदा ग्रीष्मकालः कुत्रापि **जलं** नास्ति काकः **बहुदूरं** गच्छति। तत्र सः एकं **घटं** पश्यति। काकं अतीव **सन्तोषः** भवति। किन्तु घटे **स्वल्पम्** एव जलं अस्ति। जलं कथं पिबामि ? इति

काकः चिन्तयति। सः एकम् **उपायं** करोति। **प्रस्तरखण्डानि** आनयति। घटे पूरयति। जलम् **उपरि** आगच्छति। काकः सन्तोषेण जलं **पिबतिः** ततः गच्छति।

3. एकस्मिन् **ग्रामे** एकः कृषकः **प्रतिवसति** स्म। सः कुक्कुट- पालन करोति स्म। तस्य **कुक्कुटेषु** एक कुक्कुटी नित्यम् एकं **स्वर्णाण्डं** ददाति स्म। कृषकः अति **लुब्धः** आसीत्। सः एकदा एव **सर्वाणि** अण्डानि ग्रहीतुमैच्छत्। सः तस्या उदरं **व्यादारयत्** परञ्च तत्र **एकमपि** अण्डं न आसीत्। कुक्कुटी हता। कृषकोऽपि महद् **दुःखम्** अनुभवन् **पश्चात्तापम्** अकरोत्।

4. एकस्मिन् **वृक्षे** एकः काकः **वसति** स्म। एकदा सः एका **रोटिकाम्** आनयत्। एकः **लोमशः** तं दृष्ट्वा केनापि **उपायेन** तां रोटिकां **ग्रहीतुमैच्छतः** सः वृक्षस्य **अधस्तात्** अतिष्ठत् काकं च न्यवेदयत्-तात! मया **श्रुतम्** यत् त्वम् अति मधुरं गायसि। काकः आत्मनः **श्लाघां** श्रुत्वा प्रसन्नोऽभवत्। सगर्वोऽयं मूर्खः **काकः** यावत् **गायति** तावत् मुख विवृतात् **रोटिका** भूमौ अपतत्! लोमशः तां **नीत्वा** ततः पलायनम् अकरोत्। मूर्खः काकः तं पश्यन्नेव स्वमूर्खतायाः पश्चात्तापं करोति स्म।

5. कस्मिंश्चिद् वन **प्रदेशे** एकः मृगः **वसति** स्म। अहंकाराविष्टोऽयं स्वच्छन्दं **विचरति** स्म। एकदा असौ जले **स्वीकीयं** प्रतिबिम्बम् अपश्यत्। मनोहराणि **श्रृगाणि** अवलोक्य अति प्रसन्नोऽजायत्। परञ्च **अशोभनान्** पादान् **अवलोक्य** सः अति खिन्नो-अभवत् एकदा कोऽपि **वधिकः** तत्र आगच्छत्। तेन सह **कुक्कुराः** अपि आसन्। मृगः द्रुततराऽपि **द्रुतरमधावत्** परञ्च तस्य शृंगाणि वृक्ष **शाश्वासु** गुल्मेषु च संलग्नानि अभवन्। तेन असौ **धावने** असमर्थः अभवत्। तम् आक्रम्य कुक्करैः हतः।

6. कस्मिंश्चिद् वन-प्रदेशे एकः **सिंहः** प्रतिवसति स्म। एकदा सः **वृक्षस्य** छायायां **स्वपिति** स्म। तस्य वृक्षस्य **अधस्तात्** एकः मूषकः बिलं **कृत्वा** वसति। सः मूषकः बिलात् **निसृत्य** सुप्तस्य सिंहस्य **पृष्ठं** तस्य केशान् कृन्तति स्म। जागृतः सिंह मूषकं **हस्ते** गृहीत्वा अवदत्-कोऽसि? कथं मे **केशान्** कृन्तति? अहं त्वां **हनिष्यामि** । मूषकोऽपि भीतः सन् न्यवेदयत्-अहं छुद्रमूषकः सन् अपि **भवती** सहाय्यं कर्तुं प्रतिज्ञा करोमि। दयार्द्र सिंहः तम् उपहसन् अत्यजत्।

एकदा सिंह बधिकैः पाशे निबद्धः। स उच्चै **अगर्जत्**। मूषकः सिंहमापन्नं **ज्ञात्वा** तत्रैव प्राप्नोत्। सः तस्य जालं छित्वा तं पाश **बद्धं सिंह मुक्तम्** अकरोत्। मुक्तः सिंहः मूषकेन सह मैत्री **विधाय** स्वच्छन्दं विचरति स्म।

7. कस्मिंश्चिद् वन-प्रदेशे एकः **व्याघ्रः** वसति स्म। एकदा असौ **बधिकेन** पञ्जरे बद्ध। व्याघ्रः पाशे खिन्नः सन् स्थितः। ततोऽसौ मार्गे **विप्रमेकं** गच्छन्तम् अपश्यत्। व्याघ्रः **ब्राह्मणाय** न्यवेदयत्—'मां मोचय।' दयार्द्रः ब्राह्मणः व्याघ्रे **दयमानः** तं सहाय्यमकरोत्। परञ्च हिंसकः व्याघ्रः तु कृतघ्नः आसीत्। सः विप्रं **खादितुमैच्छत्** विप्र तं स्वजीवनं **याचमानः** न्यवेदयत्—'हे मृगराज! मा मां **व्यापदय** मां मा भक्षय। कृतज्ञो भव। परञ्च **निर्दयः** व्याघ्रः न श्रृणोत्। तदैव तत्र एकः **शृगालः** आगच्छत्। सोऽवद्त—नाहं मन्ये यत् त्वं **विशालकायः** अस्मिन् लघु पञ्जरे बद्धः आसीत्। अतः पुनः **प्रविश्य** मां दर्शय । व्याघ्रः यावत् पुनः प्रविश्य दर्शयति तावत् श्रृगालः **कपाटं** व्युपदयात्। एवं व्याघ्रं पञ्जरे पुनः निक्षिप्य विप्रं रक्षति।

8. कस्यचिद् **मनुष्यस्य** गृहे एक गर्दभः आसीत् । सः तस्य पृष्ठे **लवणस्य भारं धृत्वा** नयति स्म। सः सदैव नद्याः **पारं** नयति। एकदा **यदा सरितः जल मध्ये चलति स्म तदा** तस्य पादम् अस्खलत् सः जले अपतत्। लवणः जले **विलीयते** स्म। गर्दभः इदं तथ्यम् अजानत्। यत् यथा यथा लवणः जले विलीयते तथा तथा एव भारमपि **अल्पताम्** आप्नोति। एतद् ज्ञात्वा गर्दभः **नित्यमेव** सरितः जले पतति भारं च **अल्पतरम्** करोति। एकदा सः **मनुष्यः** तस्य पृष्ठे तूलं (कर्पासं) अनयत्। गर्दभः **नित्यमिव** जले अपतत्। जलं **संग्रहणात्** तूलस्य भारमतितरमभवत्। भारस्य आधिक्यात् गर्दभः **उत्थातुमपि** असमर्थो अभवत्। यत्नेन उत्थाय अपि **चलितुमसमर्थः** अजायत्। असमर्थो असौ भारेण **पीड़ितः** स्वामिना **प्रताडितः** ताडितः। वराकः गर्दभः धूर्तताम् अत्यजत्।

9. केनचिद् मनुष्येण **एकः** गजः पालितः आसीत्। सः जलं पातुं स्नातुं च नित्यमेव **नद्यास्तटं** गच्छति स्म। मार्गे एकस्य सौचिकस्य आपणि आसीत् । सः तस्मै किमपि **खादितुं** यच्छति स्म। सः वस्त्राणि सीव्यति स्म। आपणेऽनेकानि **स्यूतानि** वस्त्राणि अवलम्बितानि आसन्। एकदा **असौ** सौचिकः परिहासे गजस्य करे **सूचिम्** अभिनत्। क्रुद्धः सन् गजः नद्याः तटमगच्छत्। तत्र स्नात्वा जलं च पीत्वा स्वकीये करे (शुण्डे) पङ्किलं जलमानयत्। **सौचिकस्यापणमागत्य** नव स्यूतेषु महार्धेषु वस्त्रेषु असिंचत्। **सौचिकः** किमपि न कर्तुमशक्नोत्। पश्चात्ताप **निमग्नोऽसौ** गजं क्षमामयाचत्। आत्मग्लानिमनुभूय **अति** खिन्नोऽभूत्।

10. एकः **शृगाल** आसीत्। सः वनम् उपवसति स्म। **माँस** लुब्धोऽसौ व्याधः एकदा धनुरादाय **मृगयार्थ** मृगमन्विष्यन् काननान्तरम् अगच्छत्। तत्र तेनैको मृगः व्यापादितः। मृगमादाय गच्छता तेन घोराकृतिः **शूकरो** दृष्टः। सः मृगं भूमौ निधाय शरेण शूकरमहनत्। शूकरः गर्जनं कुर्वाण **पादाघातेन** तमाहतवान्। व्याधः हतः छिन्न द्रुम इव पपात। तस्य पादस्खलितेन एक सर्पः अपि मृतः। मृते **व्याधे** तत्रागत एकः शृगालः। सः तान् **मृतानवलोक्य** प्रसन्नोऽभवत् । सोऽचिन्तयत—'अहो ! भाग्यम्, अद्य महद् भोजनं मे **समुपस्थितम्**। अद्य तु धनुलग्नं स्नायुबन्धनमेव खादामि।' एवं कुर्वन्नसौ छिन्ने **स्नायुबन्धने** द्रुतम् उत्प्लुतेन कोरण्डेन हृदिभिन्नः **शृगालः** पञ्चत्वं गतः।

●●

अध्याय-17 चित्राधारित वर्णनम्

1. 1. अस्मिन् चित्रे वयम् एकं क्रीडाक्षेत्रं पश्यामः।
   2. अत्र त्रयः बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।
   3. क्रीडाक्षेत्रे प्रतिदिनं बालकाः क्रीडार्थम् आगच्छन्ति।
   4. बालकाः अत्र क्रीडित्वा अतिप्रसन्नाः भवति।
2. 1. कृषकः क्षेत्रेषु वृषभाभ्यां हल कर्षति।
   2. सः क्षेत्रेषु बीजानि वपति।
   3. बीजेभ्यः शस्यति उद्भवन्ति।
   4. यदा शस्यानि पक्वन्ति तदा कृषकः तानि कर्तति।
3. 1. इदं चित्रं शिशु-मात्रोः स्नेहस्य अस्ति।
   2. अत्र एकः शिशुः अस्ति।
   3. माता शिशुं स्नेहेन पश्यति।
   4. शिशुः मातुः अङ्के स्वपिति।
4. 1. इयं अस्माकं शिक्षिका अस्ति।
   2. सा शाटिकां धारयति।
   3. तस्याः व्यक्तित्वम् आकर्षकम् अस्ति।
   4. वयं सर्वे छात्राः तस्याः सम्मानं कुर्मः।
5. 1. अस्मिन् चित्रे मोहनः कार्यालयं गच्छति।
   2. सः ग्रामात् आगच्छति, तत्र सः परिवार जनैः सह निवसति।
   3. अस्मिन् ग्रामे बसयान न चलति यत अयं मार्गः रेणुपूर्णः अस्ति।

4. मार्गे बहवः पादपाः मिलन्ति।

6. 1. वृक्षाः अस्माकं मित्राणि सन्ति।
2. वृक्षैः पर्यावरणं शुद्धं भवति।
3. वृक्षारोपणम् अस्माकं कर्तव्यम्।
4. प्रतिवर्ष वर्षाकाले जनाः वृक्षारोपणं कुर्वन्ति।

7. 1. एतस्मिन् चित्रे एकः जलाशयः रमणीयः पर्वतः च स्तः।
2. जलाशयस्य तटे बहवः वृक्षाः सन्ति।
3. अत्र शीतलवायुः प्रवहति।
4. जलाशयस्य दृश्यं मनोरमम् अस्ति।

8. 1. अत्र बालः कुक्कुरेण सह खेलति उपविशति च।
2. बालः कुक्कुरं स्नेहेन पश्यति।
3. बालस्य शिरसि एका टोपिका: अस्ति।
4. बालकः प्रसन्नाः अस्ति।

9. 1. अस्मिन् चित्रे होलिकोत्सवः आयोज्यते।
2. अयं महापर्व फाल्गुनमासस्य पौर्णमास्या भवति।
3. अस्मिन् दिने जनाः रक्तपीतादि वर्णैः क्रीडन्ति, गायन्ति नृत्यन्ति।
4. जनाः परस्परं द्वेषं विस्मृत्य गलेन मिलन्ति।

10. 1. अद्य बालदिवसः अस्ति।
2. क्रीडाङ्गणे छात्राः कन्दुकेन क्रीडन्ति, धावन्ति च।
3. बाल दिवसे क्रीडाप्रतियोगिता वाद-विवाद प्रतियोगिता च भवति।
4. बालदिवसे सर्वे छात्राः आनन्दम् अनुभवन्ति।

अध्याय-18 कथाक्रम-संयोजनम्

1. (i) माणिककँवर—अत्र कोलाहलं मा करोतु कुमार।
(ii) कुँवर प्रतापः—तात ! माता मह्यं भुशुण्डीं न ददाति।
(iii) माणिककँवरः—किमर्थम् अद्य अतीव गम्भीरो दृश्यते ?
(iv) केसरीसिंहः—महाराणा फतेहसिंहः देहल्यां लार्ड कर्जनस्य समारोहे भागं ग्रहीतुं गमिष्यति।

2. (i) विद्याधरः सेवानिवृत्तः शिक्षकः अस्ति।
(ii) अहम् विवाहमपि न करिष्यामि।
(iii) भवन्तः एव अस्माकं निबन्धने सन्ति।
(iv) एतत् तु अस्माकं सौभाग्यं अस्ति।

3. (i) जीर्णशीर्णै: वस्त्रैरावृत: कोऽपि मानव: मार्गे पतित:।

(ii) स: अन्ध पङ्गु चेतनाविहीनश्च आसीत्।

(iii) तस्य मस्तकम् अपि रुधिरक्लिन्नम् आसीत्।

(iv) नरेन्द्र: स्ववस्त्रेण तस्य मस्तके व्रणपट्टिकाम् अबध्नात्।

अध्याय-19 सड़क सुरक्षा

1. सडक-सुरक्षार्थं किं करणीयम् लिखत।

उत्तरम्— राजमार्ग-सुरक्षार्थम् अस्माभि: सडक-सुरक्षा- नियमानां ज्ञानं प्राप्तव्यम्। राजमार्गम् उभयत: स्थापितानां यातायात-सङ्केतानाम् अभिज्ञानमपि करणीयम्। अल्पायुसि एव वाहन न चालयेत्। वाहन-सञ्चालन काले उच्च-स्वरेण सङ्गीत वर्जयेत्। मार्गे ध्यानं सर्वत: आकृष्य मार्गागतानि वस्तूनि एव न पश्येत्। नैतस्मिन् काले धूम्रपानं कुर्यान्न च चलदूरभाषे केनापि सह वार्तालापं कुर्यात्। सहयात्रिभि: सार्धमपि न संवदेत्।

2. मार्गे दुर्घटनाया: कारणानि लिखत।

उत्तरम्— सामान्यत: जना: यातायात-नियमेभ्य: अनभिज्ञा: भवानि। विज्ञा: अपि यातायात सङ्केतान् न पश्यन्ति। बहव: तु उपेक्षन्ते। जना: भूमिगतपदाति मार्गस्योपयोगमपि न कुर्वन्ति। निषेधेऽपि निषेध मार्गं प्रविशन्ति। वाहन चालक: समीपस्थै: जनै: सह, चल दूरभाषे च दत्तचित्ता: सन्त: वार्तालापं कुर्वन्ति। केचन तु उपहास-निमग्ना: परिवर्त्य पृष्ठ भागे पश्यन्ति सहयात्रिण:।

3. सड़क सुरक्षा नियम-शिक्षणाय सरलतमा का व्यवस्था भवेत् ?

उत्तरम्— गृहे परिजनै: विद्यालये च शिक्षकै: छात्रा: एतद्विषये प्रशिक्षणीया। प्रार्थना-सभायां समये-समये सडक सुरक्षा नियमानां ज्ञानं प्रदेयम्। भूगोलविषयाध्ययन काले विषयाध्यापकेन यथावसरं यातायात-सङ्केतानां मानचित्राध्ययनस्य परिचय: प्रदेय:। विद्यालये एतद्विषयक प्रश्न-पृच्छा-स्पर्धा अपि आयोज्या। वृत्तपत्रेषु सडक दुर्घटनाया: समाचारं श्रावयित्वा तं प्रति सावहितं कुर्यात् तेभ्य: च मार्ग-सञ्चरण नियम-ज्ञानपि पुन:-पुन: प्रदेयम्। एकस्मिन् सत्रे वारद्वयं सडक-सुरक्षा-नियमान् आधृत्य संवाद, वाद-विवाद, भाषणादीनां स्पर्धानामप्यायोजनं कुर्यात् विजेतारश्च पुरस्करणीया:।

4. जन-सम्मर्दाकीर्णे मार्गे वाहन-चालकेन किं करणीयम्?

उत्तरम्— सुसञ्चालनं विधाय वाहन चालक: दुर्घटनां परिहर्तुं शक्नोति। अत: सुसञ्चालक: जनसम्मर्दाकीर्णमार्गे वाहनं कदापि तीव्र गत्या न चालयेत। वाहनस्यगति: निर्धारिता निर्दिष्टा नियन्त्रिता च भवेत्। अपर्याप्तमपि मार्गं प्राप्य अग्रगमनस्य प्रयत्नं न कुर्यात्। द्रुत गमनमपि सदैव वर्जनीयम्। आगते गत्यावरोधके वाहनस्य गतिरपि अवरोधनीया। निर्दिष्टं मार्गमेवानुसरेत्।

5. अधोदत्त यातायात-सङ्केतानां अभिप्रायमपि लिखत। (नीचे दिये हुए यातायात के चिह्नों का अभिप्राय बताइये।)

उत्तरम्— (i) सङ्केतोऽयं सन्दशकावर्त (U-TURN) इति कथ्यते यन्निर्दिशति यदत्र व्यावर्तन निषिद्धम्।

(ii) सङ्केतोऽयं निर्दिशति यदत्र प्रवेश: निषिद्ध: अत: नात्र गन्तव्यम्।

(iii) ओवरटेक-निषेधकं चिह्नमुपदिशति यत्र अग्रगमन- प्रयत्नं निषिद्धम्।

6. यदा चालकः सड़क-सुरक्षा नियमान् न पालयति तदा किं करणीयम्?

उत्तरम्— यदा वाहन-चालकः सडक-सुरक्षा-नियमान् न पालयति तदा छात्रैः सः निरोधनीय, बोधनीयः विरोधनीयः। एषा उपेक्षा भावना च अवरोधनीया। तस्यायनुचित-व्यवहारस्य परिवादः विद्यालयस्याधिकारिणां समक्षे निवेदनीयः। अधिकारिभिः असौ सम्यक् निर्देष्टव्यः। यद्यसौ पुनरपि करोति तदा परिवर्तनीयः अन्यथा आरक्षि- स्थाने परिवादः प्रस्तोतव्यः सः यातायात- नियमानवगन्तु चं आदिष्टव्यः। छात्रैः शिक्षकैः अधिकारिभिश्चासौ उपेक्षणीयः।

7. सड़क-सुरक्षार्थं बालकैः किं न करणीयम्?

उत्तरम्— केचन छात्राः बालकाः व अल्पायुसि एव वाहन- चालनाय अत्युत्सुकाः भवन्ति। ते वाहन- चालनेऽनभिज्ञा अल्पज्ञाः वा सन्तोऽपि वाहनं नीत्वा राजमार्गे आगच्छन्ति। वाहन-चालनस्य प्रयत्न कुर्वन्ति एवं दुर्घटना सम्भवति अतोऽल्पायुसि बालकैः वाहन-चालन कार्यं न कुर्यात्। षोडशदेश वर्षीया बालकाः गियर (गतिपरिवर्तक) युक्त वाहनं न चालयेयुः। प्रशिक्षिताः अपि केचन बालकाः आत्मविश्वासस्य अभावे असावधानतया दुर्घटनां विदधति। अतः आत्मविश्वास न त्यजेत् परञ्च वाहने चलदूरभाषै सङ्गीतं चापि न श्रणुयु सहयात्रिणा सह वार्तालापमपि न कुर्युः।

8. राजमार्ग सुरक्षायाः सामान्य नियमान् लिखत?

उत्तरम्— राजमार्गस्य वामपार्श्वे एव चलेत्। व्यावर्तनेः चतुष्पथे, पदातिमार्गे, गत्यावरोधके च वाहनं शनैः शनैः चालयेत। उभयतः संलग्नयोः आदर्शयोः मार्गस्थितिं विचरन्तश्च जनान् पश्येत्। व्यावर्तने हस्त-सङ्केत कुर्यात्। द्विचक्रवाहन चालकेन शिरस्त्राणम् (हैलमेट) अवश्यनेन धारणीयम्। यातायात संकेतान् अवलोक्य अभिज्ञाय, तेषाम् अभिप्राय प्रयोजनं वा ज्ञात्वा अनुपालयेत् राजमार्गविभाजिका पीत रेखा नोल्लङ्घनीया। वाहनोऽकस्मात् नावरोधनीय। पश्चगमने आदर्शयो स्थितिं जन-सम्मर्द च पश्येत सावहितः सन् चालयेत्।

9. प्रवेश-निषेध मार्गे गते का हानिर्भवति?

उत्तरम्— 'प्रवेश निषेध' मार्गं न प्रविशेत्। यदि प्रविशति तदा किमपि दुर्घटितुं शक्यते। स्वस्यापरस्य व हानिर्भवितुं शक्नोति। तत्र नियुक्तः राज-पुरुषः निरोद्धं शक्नोति, वाहनस्य चालनं विधाय परिवादमपि आरब्धुं शक्नोति। अनेन आर्थिकहानिः तु भविष्यति एव मानसिक अशान्तिः अपि वर्धिष्यते। न्यायालयः दण्डयितु शक्नोति। अवमानना वाहनस्य क्षतिः सम्भवति वाहनमपि निरोद्धुं शक्यते। अतः प्रवेश निषेध मार्गे प्रविष्टेतु अपाय एव सम्भवति।

10. राजमार्ग-सङ्केता कतिधा भवन्ति? लिखत।

उत्तरम्— राजमार्ग सङ्केताः मुख्यतः चतुर्धाः भवन्ति। एतेषु प्रवेश-निषेधादयः पञ्चत्रिंशत सङ्केताः अनिवार्याः भवन्ति एते वृत्ताकारेऽङ्किताः भवन्ति। सचेतकाः सङ्केताः त्रिकोणात्मकाः अङ्किताः भवन्ति, एते व्यावर्तनादिबोधकाः चत्वारिंशत् भवन्ति। सूचना चिह्नाणि विद्यमानता बोधकानि पञ्चदश संख्यकानि भवन्ति। चतुर्थ-विद्या दश सङ्केताः यातायात-कर्मकरस्य हस्ताभ्यां सङ्केतिताः भवन्ति। चतुष्पथे पुलिस कर्मकारः स्व हस्तयोः मार्गं, व्यावर्तक मार्गस्य रिक्ततां व्यस्ततां च दर्शयति।

● ●